ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑓓𑓗𑓖 𑒧 𑒁𑓀𑒏 𑓑𑓕 𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑓒𑓐𑓒𑓓 (𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓑𑓖 𑒧𑒰𑒮 𑓑𑓘𑓘 𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓗𑓖)

[𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢: 𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯- 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒄-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰

𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏: 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒙𑒰𑒏𑒳𑒩।



ই মৈথিলীক পহিল ইংটৰনেট পত্ৰিকা থিক জকৰ নাম বাদমে ১ জনৱৰী ২০০৮ সঁ 'ৱিদেহ' পড়লৈ। ইংটৰনেটপৰ মৈথিলীক প্ৰথম উপস্থিতিক যাত্ৰা ৱিদেহ- প্ৰথম মৈথিলী পাক্ষিক ই পত্ৰিকা ধৰি পহুঁচল অছি, জে http://www.videha.co.in/ পৰ ই প্ৰকাশিত হোইত অছি। আব "ভালসৰিক গাছ" জালৱৃত্ত 'ৱিদেহ' ই-পত্ৰিকাক প্ৰৱক্তাক সংগ মৈথিলী ভাষাক জালৱৃত্তক এগ্ৰীগেটৰক ৰূপমে প্ৰযুক্ত ভই ৰহল অছি।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN

Videha e-Journal: Issue No. 376 at www.videha.co.in

সমানান্তৰ পৰম্পৰাক ৰিদ্যাপতি- *ঠিত্র ৰিদেহ সম্মানসঁ সম্মানিত শ্রী পনকনান মণ্ডন দ্বাৰা*

মৌথিনী ভাষা জগজ্জননী সীতাযাঃ ভাষা খ্বাসীৎ। হনুমন্তঃ উক্তরান- মানুষীমিহ সংস্কৃতাম্।

<u>খক্কৰ খম্ভা (খাখৰ খামহ)</u>

তিন্যখন খেত্তহি কাঞ্ঞ তস্ব কিত্তিৰনি পসৰেগ। খক্কৰ খম্ভাৰম্ভ জন্ড মণ্ডো ৰঁঙ্কি ন দেগ॥ *(কীৰ্তিনতা প্রথমঃ পন্নৰঃ পহিন দোহা।)*

মানে খাখৰ ৰূপী খামহ নির্মাণ ক**ই** ওগপৰ (*গদ্য-পদ্য ৰূপী*) মংঠ জঁ নৌ ৰাঁহ্নন জায তঁ ঐ ত্রিভুৱনৰূপী ক্ষেত্রমে ওকৰ কীর্তিৰূপী নৰ্ত্তী কেনা পসৰত।

শুক্ক যজুৰ্ৰেদ (২৬.২)-যথেমাং ৰাঠং কন্যাণীমাৰদানি জনেভ্যঃ। ব্রহ্মৰাজন্যাভ্যাং শূদ্রায ঠার্যায ঠ স্বায ঠাৰণায ঠ॥হম সভ গোষ্টেকেঁ এ্র পৰিত্র ৰাণী (ৰেদৰাণী) সুনাৰী। ব্রাহ্মণকেঁ, ক্ষত্রিযকেঁ, শূদ্রকেঁ খা খার্যকেঁ; খপন নোককেঁ খা খপৰিঠিতকেঁ সেহো (মানে সভকেঁ)। মুদা ঐ ৰেদৰাক্যক ৰিপৰীত মনুস্মৃতি ৰেদৰাণীক খধ্যযন/ শ্রৱণকেঁ সমাজক কিছু গোষ্টে নেন নিষেধ কৰ**ই** ঠাহনেক, মুদা স্মৃতি সেহো ৰেদৰাক্যকেঁ প্রমাণ মানৈত খঠি (শব্দ প্রমাণ) তেঁ তকৰ ৰিৰুদ্ধ দেন ওকৰ নির্দেশ স্বযং খমান্য ভ**ই** জাগত খঠি।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

----

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

ॐ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তি:

অনুক্রম

ঐ অংকমে অছি:-

২.ৠ.নানদের কামত-সাহিত্য অকাদমী পৰেখননি - পেন ড্রাগরমে পৃথ্বী কেঁ/ মখানাক গ্বণ ব্রুঁস্/ মিথিলা মেঁ মাছ, ৰোজগাৰকে সর্বস্বনভ সাধন ভয় সকৈত অছি/ পানক ৰঁড়েৰঁ/ ঔষধীয় গ্বণ মৌধমে/ ৰংগপ্বৰমে জগ্রূক পৰিযাস : এক রিশ্লেষণ

২.৪.নানদের কামত-আর্থিক রিপন্নতা/ মুংস'ক দান

২.৯.নির্মলা কর্ণ- অগ্নি শিখা (খেপ-২৯)

২.৬.নন্দ রিনাস ৰায-মাস্ক

২.৭.জগদীশ প্রসাদ মণ্ডন-ঘৰদেখী

২.৮.ৰবীন্দ্র নাৰাযণ মিশ্র-ৰঁদনি ৰহন অছি সভকিছু (উপন্যাস)-ধাৰারাহিক

ৠ.পদ্য খণ্ড

ৠ.১.ৰঁদ্রীনাথ ৰায-তীন টা গীত

ৠ.২.প্রমোদ ঝা 'গোকুন'-ছুইন ঠাম হেৰাযন গাম

২.২.ৰাজ কিশোৰ মিশ্ৰ-সাংস্কৃতিক স্মৰণ



ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ॐ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি ৰনস্পতয: শান্তির্ৰিশ্বে দেৱা: শান্তির্ব্ৰহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্ৰহ্মণসঁ প্ৰাৰ্থনা জে দ্যুলোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জলমে, ঔষধমে, ৰনস্পতিমে, ৰিশ্বমে, সভ দেৱতাগণমে আ ব্ৰহ্মমে শাংতি হুঅয।

ওঁ-ব্রহ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যুলোকক বীচ, আপ:-জল, বিশ্বেদেবা- সভ দেবতা, ব্রহ্ম- সর্জক।

ß

ॐ, स॒हस्रंशीर्षा॒ पुरुंषः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्रंपात्।

ওঁ, স↓হস্রা↑ শীর্ষা↓ পুৰু↑ষঃ। স↓হ↓স্রা↓ ক্ষঃ স↓হস্রা↑ পাৎ।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

স ভূমিং↑ Ẇ বি↓শ্বতো↑ বৃ↓ত্বা। অত্য↑তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः सहस्रा॒क्षः
स॒हस्र॑पात् ॥ स भूमि॑ꣳ स॒र्व्वत॑स्पृ॒त्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

प॒द्भ्याग्ँ शू॒द्रो अंजायत॥

প↓দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓দ্রো অ↑জায়ত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिश॒ः श्रोत्राँत्।

প↓দ্ভ্যাং ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑ৎ।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

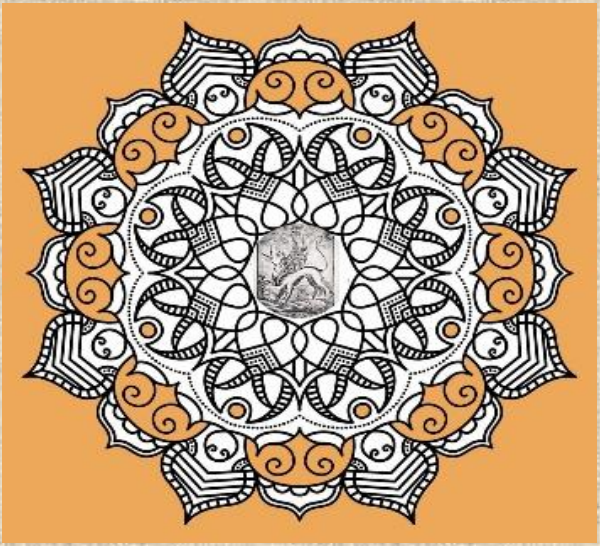
卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒱𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳, 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒧 Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆



১.১.গজেন্দ্র ঠাকুৰ- নূতন অঁক সম্পাদকীয

১.২.অঁক ৩৭৬ পৰ টিপ্পণী

১.১.গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ- নূতন অংক সম্পাদকীয

"ৰিদেহক জীৰিত নেখক-সম্পাদক, আন্দোনেনী, সাৰ্ৰজনিক জীৰন জীনিহাৰ, কনা-সংগীত-ৰংগমংচকৰ্মী আ ৰংগমংচ-নিৰ্দেশক পৰ ৰিশেষাংক শৃংখনা" (print-on-demand)

নিত নৱন সুভাষ চন্দ্ৰ যাদৱ

ৰিদেহ অৰৰিন্দ ঠাকুৰ ৰিশেষাংক

ৰিদেহ জগদীশ চন্দ্ৰ ঠাকুৰ 'অনিন' ৰিশেষাংক

ৰিদেহ ৰামনোচন ঠাকুৰ ৰিশেষাংক

ৰিদেহ ৰাজনন্দন নান দাস ৰিশেষাংক

ৰিদেহ ৰৰীন্দ্ৰ নাথ ঠাকুৰ ৰিশেষাংক

ৰিদেহ কেদাৰ নাথ চৌধৰী ৰিশেষাংক

ৰিদেহ প্ৰেমনতা মিশ্ৰ প্ৰেম ৰিশেষাংক

ৰিদেহ শৰদিন্দু চৌধৰী ৰিশেষাংক

ৰিদেহ ৰচনাকাৰ অশোক ৰিশেষাংক

ৰিদেহ ৰাম ভৰোস কাপড়ি 'ভ্ৰমৰ' ৰিশেষাংক

মিথিনা স্টুডেণ্ট যূনিয়ন (এম.এস.যূ.) ৰিশেষাংক

কনা-ৰিমৰ্শ ৰিশেষাংক (সন্দৰ্ভ- সংজূ দাস, কৃষ্ণ কুমাৰ কশ্যপ, শশিৰাঁনা, এস.সী.সুমন আ শ্বেতা ঝা চৌধৰী)

Type: Print Book

Genre: Reference

Language: Maithili

Price: ₹349 + shipping

ISBN: 9789359679884

Publisher: A Videha eJournal Imprint

Number of Pages: 302

Dimensions: 5"x8"

Interior Pages: B&W

Binding: Hard Cover (Case Binding)

Availability: In Stock (Print on Demand)

Preview at;

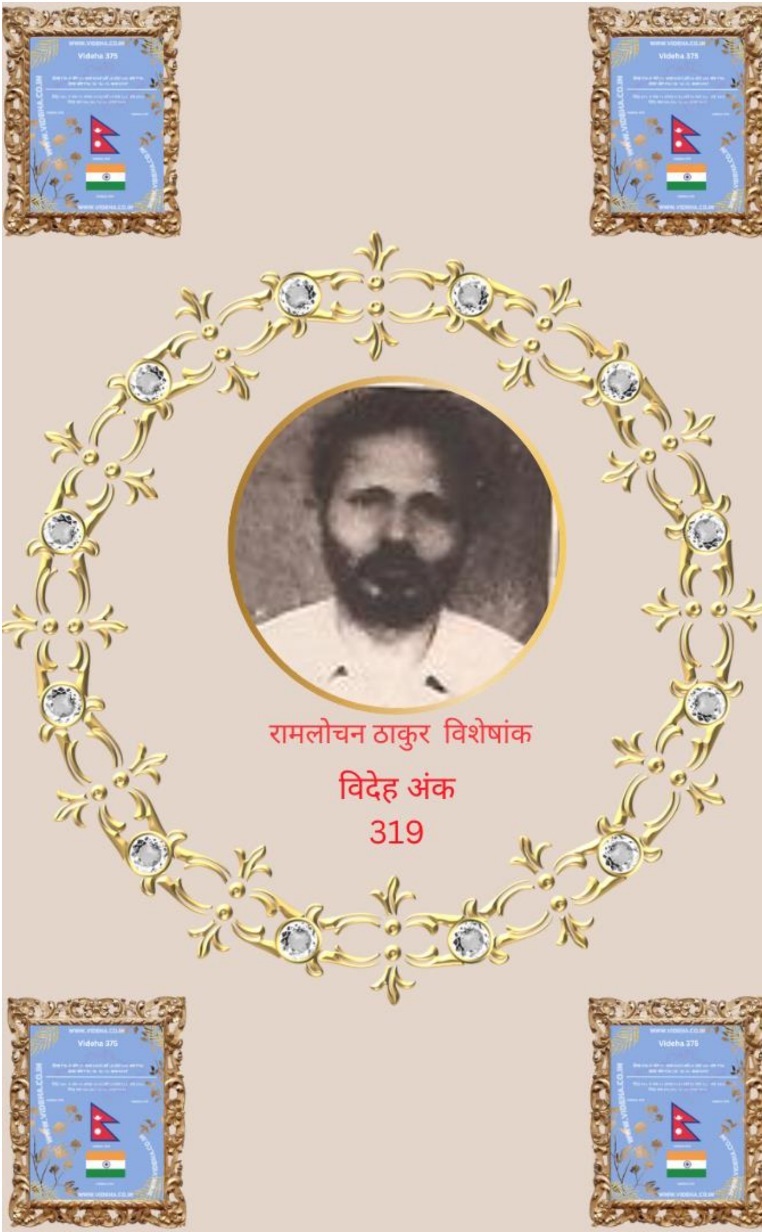
https://publish.pothi.com/preview/?sku=SKU21330

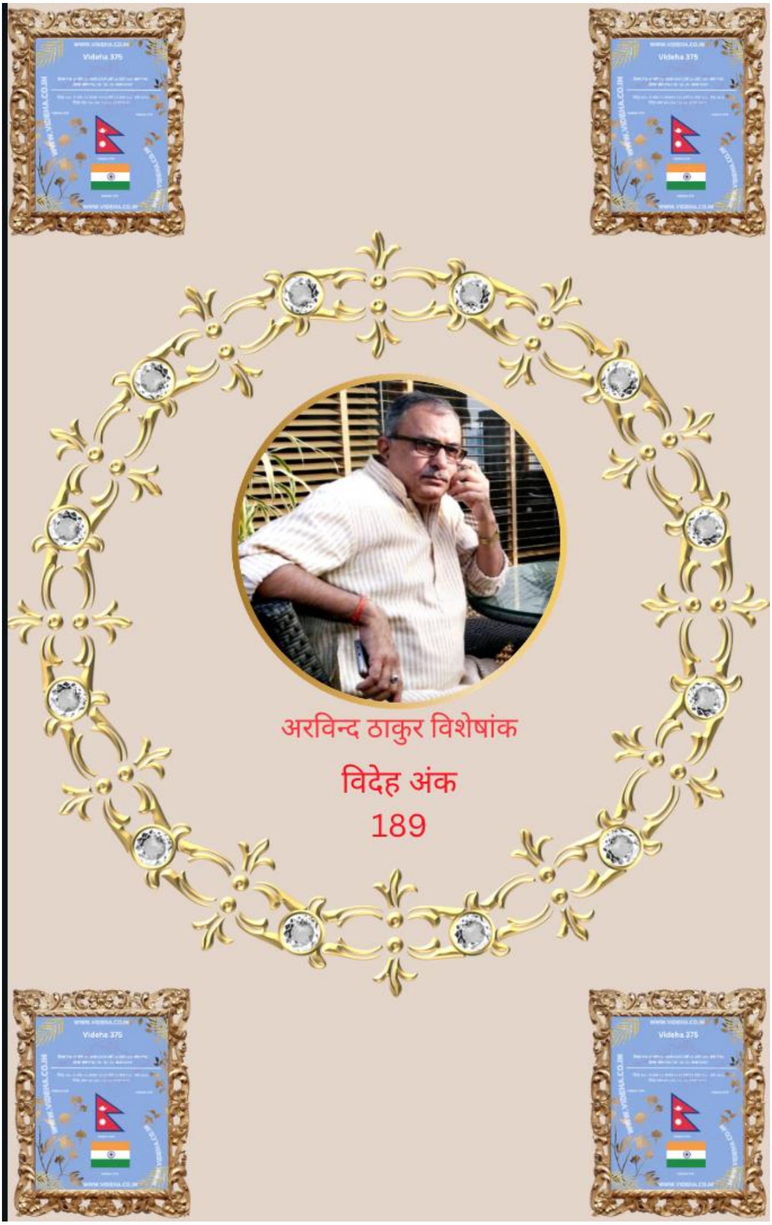
Purchase at;

রিদেহ ৰামনোচন ঠাকুৰ রিশেষাংক | Pothi.com

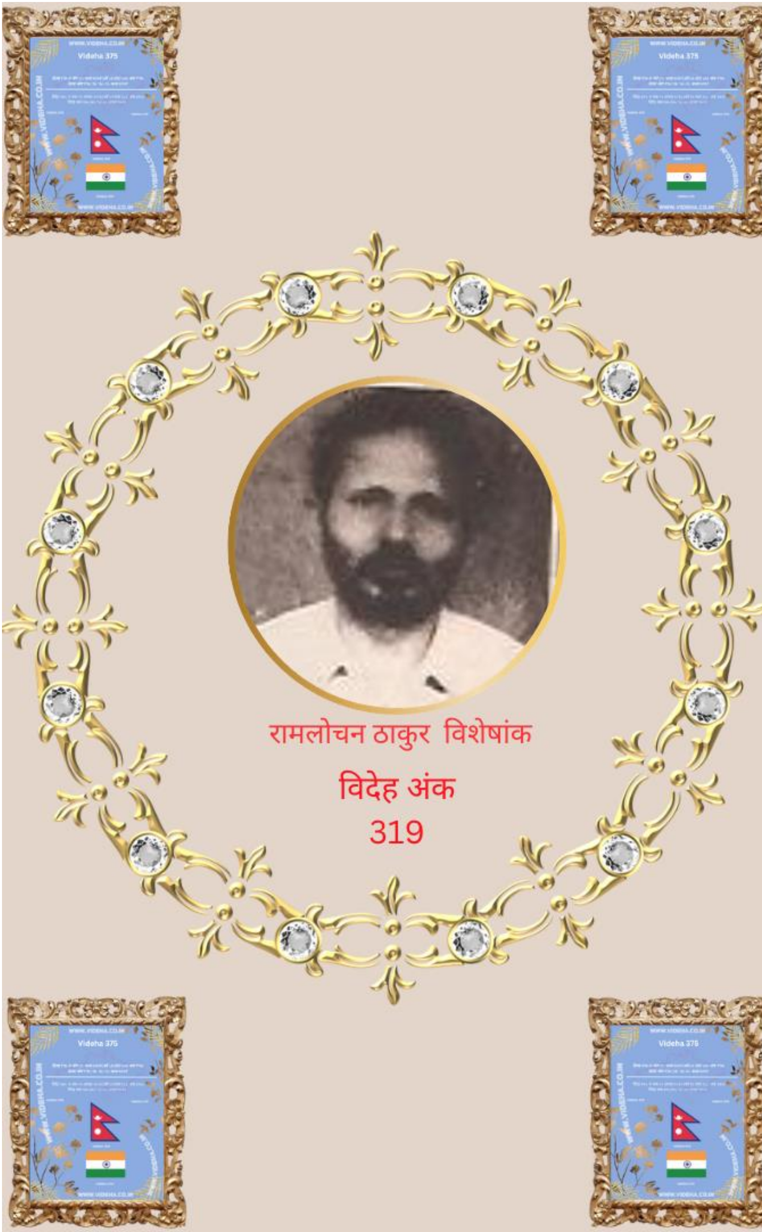
https://store.pothi.com/book/gajendra-thakur-editor-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B9-%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%9A%E0%A4%A8-%E0%A4%A0%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B0-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%87%E0%A4%B7%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%95/

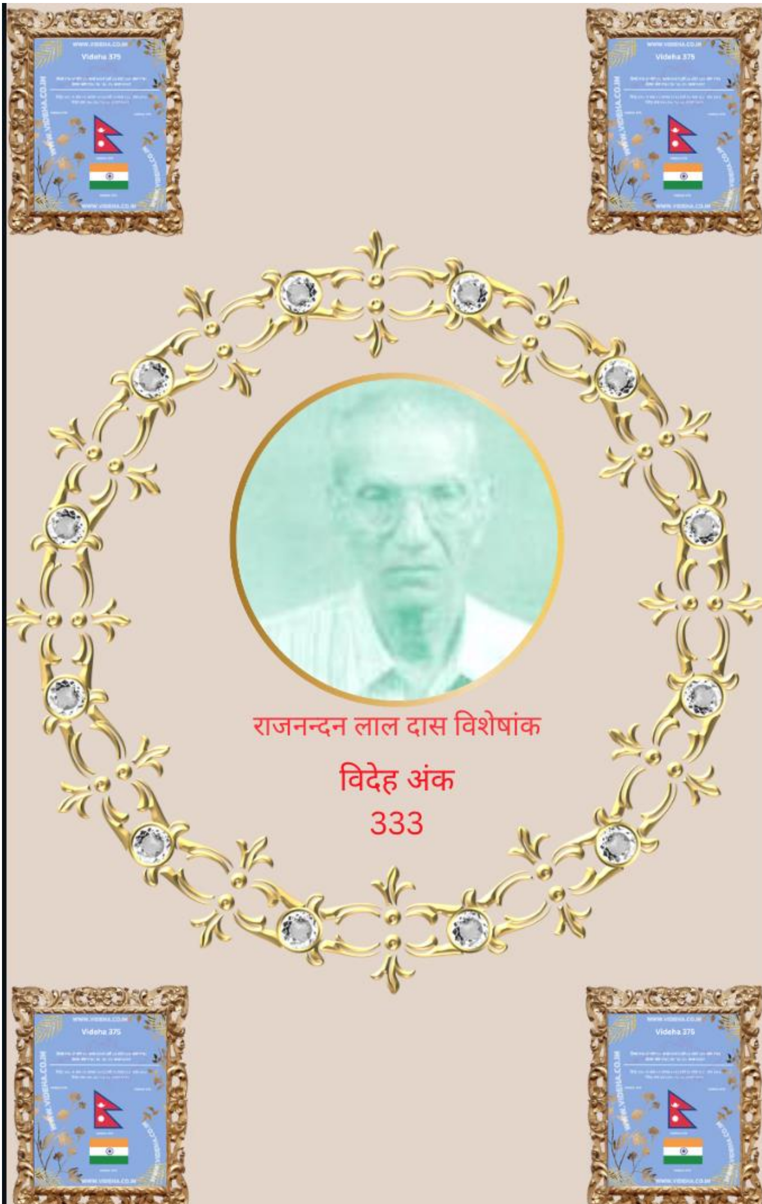

WWW.VIDEHA.CO.IN
विदेह विशेषांक
WWW.VIDEHA.CO.IN
WWW.VIDEHA.CO.IN
WWW.VIDEHA.CO.IN


रामलोचन ठाकुर विशेषांक
विदेह अंक
319


अरविन्द ठाकुर विशेषांक
विदेह अंक
189


जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक
विदेह अंक
191


रामलोचन ठाकुर विशेषांक
विदेह अंक
319

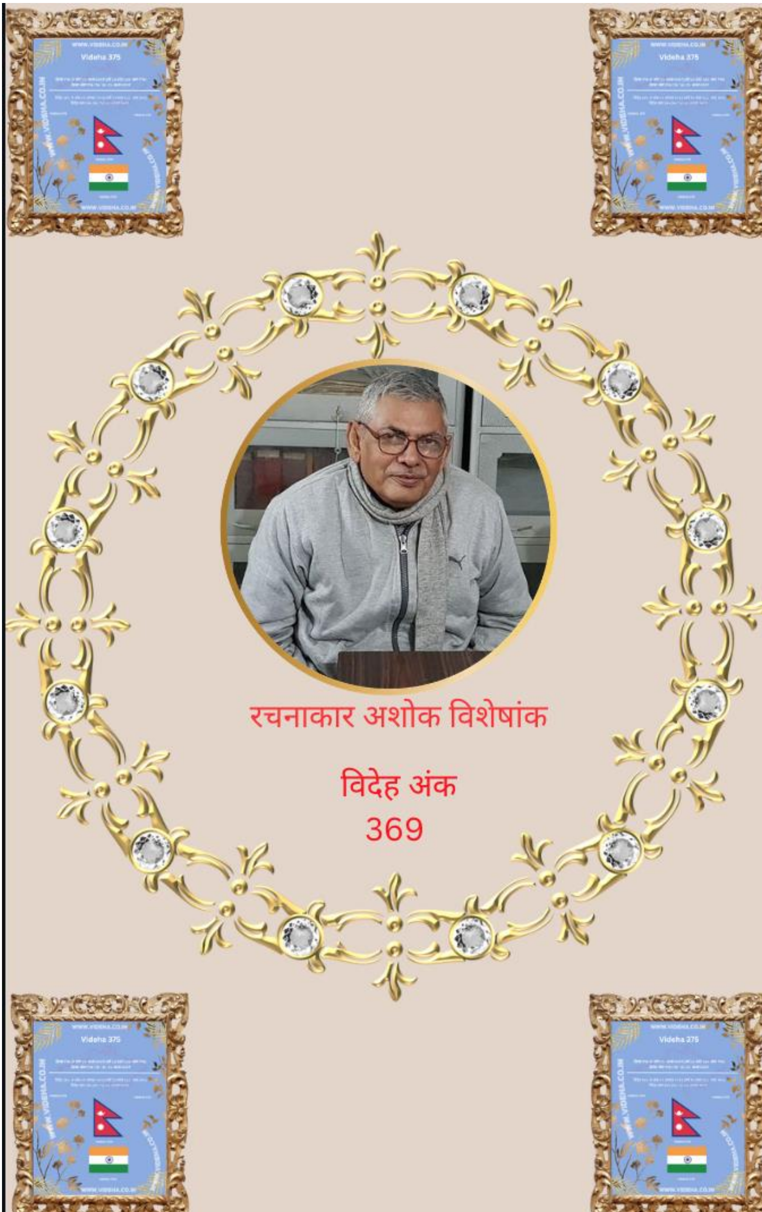

राजनन्दन लाल दास विशेषांक
विदेह अंक
333

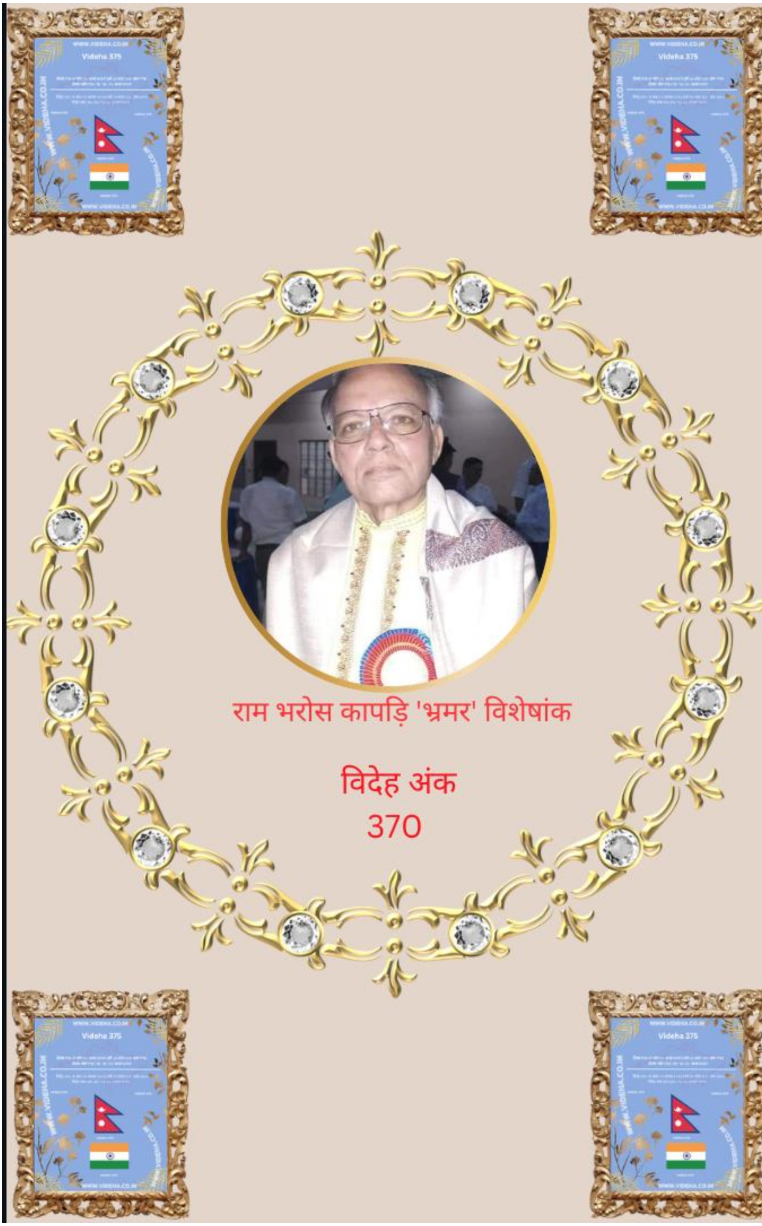

रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक
विदेह अंक
348


केदार नाथ चौधरी विशेषांक
विदेह अंक
352


प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक
विदेह अंक
357


शरदिन्दु चौधरी विशेषांक
विदेह अंक
358


रचनाकार अशोक विशेषांक
विदेह अंक
369


राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक
विदेह अंक
370

পঠাউ।

১.২.অংক ৩১৭ পৰ টিপ্পণী

লক্ষ্মণ ঝা 'সাগৰ'

বঁহুত অভিনৱ আ ললিতগৰ অংক। বঁহুত বঁহুত বঁধাই! আংতৰিক অভ্যর্থনা!! নিত নৱল সুভাষ এহি অংকক মহত্ত্বপূর্ণ ৰচনা অছি।সুভাষক সংগ বঁৰ অন্যায ভেল ছলি।

অপন মংতব্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাউ।**

𑓒.𑒑𑒠𑓂𑒨 𑒐𑒝𑓂𑒛

𑓒.𑓑.𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝- 𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 (𑒂𑒑𑒰𑒿)

𑓒.𑓒.𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪- 𑒯𑒰𑒪 𑒧𑒱𑒨𑒰𑓀/ 𑒖𑒨𑓀𑒞 (𑒏𑒾𑒂)𑒏𑒹 𑒏𑒟𑒰

𑓒.𑓓.𑒪𑒰𑒪𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒰𑒧𑒞-𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒧𑒲 𑒣𑒩𑒐𑒹𑒪𑒢𑒱 - 𑒣𑒹𑒢 𑒛𑓂𑒩𑒰𑒑𑒫𑒧𑒹 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒏𑒹𑒿/ 𑒧𑒐𑒰𑒢𑒰𑒏 𑒑𑒳𑒝 𑒫𑒵𑒏𑓂𑒭/ 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒕, 𑒩𑒼𑒖𑒑𑒰𑒩𑒏𑒹 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒮𑒳𑒪𑒦 𑒮𑒰𑒡𑒢 𑒦𑒨 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱/ 𑒣𑒰𑒢𑒏 𑒥𑒿𑒛𑓃𑒹𑒩/ 𑒎𑒭𑒡𑒲𑒨 𑒑𑒳𑒝 𑒮𑒾𑒡𑒧𑒹/ 𑒩𑓀𑒑𑒣𑒳𑒩𑒧𑒹 𑒖𑒪𑒳𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒨𑒰𑒮 : 𑒋𑒏 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒪𑒹𑒭𑒝

𑓒.𑓔.𑒪𑒰𑒪𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒰𑒧𑒞-𑒂𑒩𑓂𑒟𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒣𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰/ 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳'𑒏 𑒠𑒰𑒢

𑓒.𑓕.𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒝- 𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱 𑒬𑒱𑒐𑒰 (𑒐𑒹𑒣-𑓒𑓕)

𑓒.𑓖.𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒩𑒰𑒨-𑒧𑒰𑒮𑓂𑒏

𑓒.𑓗.𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪-𑒒𑒩𑒠𑒹𑒐𑒲

২.৮.ৰবীন্দ্র নাৰায়ণ মিশ্র-ৰঁদনি ৰহনে খচি সভকিছু (উপন্যাস)-ধাৰাৱাহিক

২.১.পৰমানন্দ লাল কর্ণ- গীতা মাহাত্ম্যে (খাগাঁ)



(नाम- परमानन्द लाल कर्ण (१९६०) पिता- स्व० परशुराम लाल कर्ण, गाम- घोघसर, पो०- रिंबोन, दरभंगा, बिहार-८४७२०३ शिक्षा - स्नातकोत्तर, CAIIB, सेवानिवृत्त प्रबन्धक, सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया)

गीता महात्म्य
(पद्म पुराण उत्तर खण्ड)
दशम अध्याय

भगवान शिव कहलनि- सुन्दरी, आब अहाँ दशम अध्यायक महात्म्यक पावन कथा सुनू जे स्वर्ग रूपी दुर्ग मे प्रवेशक लेल सुन्दर सोपान आ प्रभावक चरम सीमा थीक। काशीपुरी मे धीरबुद्धि नाम सँ विख्यात एकटा ब्राह्मण छलाह जे नन्दी जकाँ हमरा मे भक्ति राखैत छलाह। ओ पावन कीर्तिक अर्जन मे तत्पर रहैवाला शान्तचित्त आ हिंसा, कठोरता आओर दुःसाहस सँ दूर रहैवाला छलथि। जितेन्द्रिय भेलाक कारणे ओ निवृत्ति मार्ग मे रहैत छलाह। ओ वेदरूपी समुद्र केँ पार कऽ लेने छलाह। ओ समस्त शास्त्रक ज्ञाता छलाह। हुनकर चित्त सदिखन हमरे ध्यान मे लागल रहैत छल। ओ मन केँ अन्तरात्मा मे लगा केँ सदिखन आत्मतत्वक साक्षात्कार करैत छलाह। जखन ओ चलऽ लगैत छलाह तखन हम प्रेमवश हुनका पाछू दौड़ि दौड़ि केँ हुनका हाथक सहारा दैत रहैत छलहुँ।

ई देखि हमर पार्षद भृंगिरिटि पुछलथि- भगवन एहि प्रकार भक्त के अपनेक दर्शन केने होयत? ई महात्मा कोन तप, होम व जप केलनि अछि जे अपने आप अहाँ डेग-डेग हुनका हाथक सहारा दैत चलैत छी।

ই দেখি হুনক পার্ষদ ভৃংগিরিটি পুছলথি- ভগৱন এহি প্রকার ভলা কে অপনেক দর্শন কৈনে হোয়ত? ই মহেশ্বর কোন তপ, হোম ৱ জপ কেলনি অছি জে অপনে আপ অহাঁ ডেগে-ডেগ হিনকা হাথক সহারা দৈত চলৈত ছী।

ভৃংগিরিটিক ই প্রশ্ন সুনি হুম এহি প্রকার উত্তর দেনাই আরম্ভ কেলহুঁ। এক সময়ক বাত অছি, কৈলাস পর্ৱতক পার্শ্ৱ ভাগ মে পুন্নাগ ৱন মে চন্দ্রমাক অমৃতময়ী কিরণ সঁ ধোঅল জমীন পর একটা বেদীক আশ্রয় লঽ কে হম বৈসল ছলহুঁ। হমর ধ্যান টুটি বৈসলাক বাদ অচানক বড় জোর সঁ আঁধী আয়ল। ওহি ঠামক গাছক ডাঁরি নীচা উপর ভঽ এক-দোসর মে টকরা কে কতেকো ডাঁরি টূটি গেল। পর্ৱতক অরিচল ছায়া সেহো ডোলঽ লাগল। তকর বাদ ওহি ঠাম ভয়ংকর শব্দ হোময় জাহি সঁ পহাড়ক আধার ডোলৈত ছল। তদনুর আকাশ সঁ কোনো প্রেষ চিড়ৈ উত্তরল জেকর কান্তি কারী মেঘসন ছল ও অর্দ্ধ-অর্দ্ধ কারী, অন্হারক সমূহ আ কর্টৈন পংখ কারী পহাড় সন ঝুকি পড়ৈত ছল। পাতর সঁ পৃথ্বীক সহারা লঽ কে ওপক্ষী হমরা প্রণাম কেলথি আ নীক নূতন কমল হমরা চরণমে কঽ স্পষ্ট ৱাণী মে স্তুতি করনাই আরম্ভ কেলনি।

পক্ষী কহলনি- হে দেৱ! অপনেক জয় হোএ। অহাঁ চিদানন্দময়ী সুধাক সাগর আ জগতক পালক ছী। সদি খন সদ্ভাৱনা সং যুক্ত আ অনাসক্তিক লহর সঁ উল্লসিত ছী। অপনেক ৱৈভৱক কতহু অন্ত নহি অছি। অপনেক জয় হো। অদ্বৈতৱাসনা সঁ পরিপূর্ণ বুদ্ধি সঁ অহাঁ ত্রিবিধ মল সঁ রহিত ছী। অহাঁ জিতেন্দ্রিয় ভক্ত লোকনিকক অধীন রহৈত ছী আ ধ্যান মে অপনেক স্বরূপক সাক্ষাৎকার হোয়ত অছি। অহাং অবিদ্যাময় উপাধি সঁ রহিত, নিত্যমুক্ত, নিরাকার, নিরাময়, অসীম, অহংকারশূন্য, আৱরণ রহিত আ নির্গুণ ছী। অপনেক চরণকমল শরণাগত ভক্তক রক্ষা করৱ মে প্রবীণ ছী। অপনেক

भयंकर ललाट रूपी महासर्पक विष ज्वाला सँ कामदेव केँ भस्म कयने छी। अपनेक जय हो। अहाँ प्रत्यक्ष आदि प्रमाण सँ दूर रहितहुँ प्रामाण्यस्वरूप छी। अपनेक बेरि-बेरि नमन अछि। चैतन्यक स्वामी आ त्रिभुवन रूप धारी अपनेक नमन अछि। हेम श्रेष्ठ योगी लोकनि सँ पूजित अपनेक चरण कमलक वंदना करैत छी जाहि मे अपार भव पापक समुद्र सँ पार उतारक अद्भुत शक्ति अछि। महादेव! साक्षात् बृहस्पति सेहो अपनेक स्तुति करबा केँ धृष्टता नहि कए सकैत छथि। सहस्र-मुखयुक्त नागराज शेष मे सेहो एतेक चातुरी नहि छैन जे अपनेक गुणक बखान कए सकथि। तइन हमरा एहन छोट बुद्धि वाला चिड़ै मे की सामर्थ्य अछि?

चिड़ै सँ कहल गेल एहि स्तोत्र केँ सुनि हम जनका सँ पुछलनि - हे विहंगम! अहाँ के छी आओर कतय सँ आयल छी? अहाँक आकृति तऽ हंस सनक अछि मुदा रंग तऽ कौआ वाला अछि। अहाँ जाहि प्रयोजन सँ एहि ठाम अएलहुँ अछि से बताउ।

चिड़ै कहलनि - देवेश! अहाँ हमरा ब्रह्माजीक हंस जानू -धूर्जटे, जाहि कर्म सँ हमरा शरीर मे एखन कालिमा आबि गेल अछि से सुनू। प्रभो, ओना तऽ अहाँ सर्वज्ञ छी मुदा जौं अहाँ पूछैत छी तइन हम बतबैत छी। सौराष्ट्र नगर लग एकटा नीक सरोवर अछि जाहि मे कमल लहलहाइत छल। ओहि मे सँ बाल चन्द्रक टुकड़ा जकाँ श्वेत मृणाल केँ मुँह मे लए के हम बड़ तेजी सँ आकाश मे उड़ि रहल छलहुँ। उड़ैत-उड़ैत अचानक ओहि ठाम सँ पृथ्वी पर खसि गेलहुँ। जखन होश मे अयलहुँ आ अपना गिरबाक कारण नहि देख सकलहुँ तऽ मने मन सोचऽ लागलहुँ - आ हमरा पर की आबि गेल? आजु हमर पतन कोना भऽ गेल? पाकल कर्पूर सन हमर

উজ্জর শরীর মে ও কালিমা কোনা আবি গেল। ওহি প্রকার বিস্মিত ভ' হম অখন বিচার করৈত ছলহুঁ কি তখনহি ওহি পোখরিক কমল মে সঁ হমরা ও আবাজ সুনা দেলক - যৌ হংস! হম অপনেক গিরক আ কারী হোয কে কারণ বতবৈত ছী। তঁ হম ওহি কেঁ সরোবর কে বীচ মে গেলহুঁ আ ওহি ঠাম পাঁচ টা কমল সঁ যুক্ত একটা কমলিনী দেখলহুঁ। ওকরা দেখি প্রণাম ক' হম প্রদক্ষিণা কেলহুঁ আ অপন পতনক সব কারণ পূছলহুঁ।

কমলিনী কহলীহ - কলহংস. অহাঁ আকাশ মার্গ সঁ হমরা লাঁঘি কে গেলহুঁ অছি ওহি পাতকক পরিণামস্বরূপ অহাঁ পৃথ্বী পর গিরলহুঁ অছি আ তকরে কারণ অহাঁক শরীর মে কালিমা দেখি পড়ৈত অছি। অহাঁক গিরল দেখি হমরা হৃদয় মে দয়া ভরি আয়ল আ জখন হম ওহি মধ্যম কমল সঁ বোলৈলহুঁ অছি তখন হমরা মুখ সঁ নিকলল সুগন্ধ কেঁ সূঁঘি সাঠি কোটি ভৌঁরা কেঁ স্বর্গলোক প্রাপ্ত ভেলনি। পক্ষিরাজ! জাহি কারণ হমরা মে এতেক বৈভব আ এতেক প্রভাব আয়ল অছি সে বতবৈত ছী। সুনু ওহি জন্ম সঁ পূর্ব তেসর জন্ম মে হম পৃথ্বী পর একটা ব্রাহ্মণকন্যাক রূপ মে জন্ম ভেল ছল। তখন হমর নাম সরোজবদনা ছল। হম গুরু লোকনিক সেবা করৈত সদিখন এক মাত্র পাতিব্রত্যক পালন করবা মে তৎপর রহৈত ছলহুঁ। এক দিনক বাত অছি হম একটা মৈনা কেঁ পঢ়াবৈত ছলহুঁ। জাহি সঁ পতি সেবা মে কিছু বিলম্ব ভ' গেল আ পতিদেব কুপিত ভ' হমরা শাপ দেলনি - 'পাপিনী অহাঁ মৈনা ভ' জাউ।' মরণোপরান্ত যদ্যপি হম মৈনা ভেলহুঁ মুদা পাতিব্রত্যক প্রসাদ সঁ একটা মুনিক ঘর মে হমর আশ্রয় মিলল। কোনো মুনি কন্যা হমর লালন পোষণ কেলনি। হম ঘর মে ছলহুঁ ও ব্রাহ্মণ সবদিন সবের সকাল বিভূতিযোগ নাম সঁ প্রসিদ্ধ গীতাক দশম অধ্যায়ক পাঠ করৈত ছলাহ আ হম ও পাপাহারী অধ্যায় কে সুনৈত ছলহুঁ। বিহংগম কাল এলা পর হম মৈনাক শরীর ছোড়ি কেঁ

दशम अध्यायक माहात्म्य सँ स्वर्गलोक मे अप्सरा छेलन्हि। हुनक नाम पद्मावती छेल आ ओ पद्माक प्रियवरक सखी भऽ गेलन्हि। एक दिन ओ विमान सँ आकाश विचरण करैत छलन्हि। तखन सुन्दर कमल सँ सुशोभित एहि रमणीय सरोवर पर हुनक नजरि पड़ल आ एहि मे उतरि के ओ जखनहि जलक्रीड़ा आरम्भ केलन्हि तखनहि हरसिंघ मुनि एहि ठाम चलि एलाह। ओ हुनका वस्त्रहीन अवस्था मे देखि लेलथि। हुनका भय सँ ओ अपने मन सँ ता कमलिनीक रूप धारण कऽ लेलन्हि। हुनक हाथ पातक दू टा कमल छेल, हाथ सेहो दू टा कमल छेल। शेष अंग मे हुनक मुँह सेहो एकटा कमल छेल। एहि प्रकार ओ पाँच टा कमल सँ युक्त छेलन्हि। मुनिवर हरसिंघ हुनका देखलथि। हुनकर आँखि क्रोधाग्नि सँ जलि रहल छल। ओ कहलन्हि-पापिनी अहाँ एहि रूप मे सए वर्ष धरि पड़ल रहू। ता शाप दऽ केओ क्षण भरि मे अन्तर्धान भऽ गेलाह। कमलिनी छेलाक बादो विभूति-योगाध्यायक माहात्म्य सँ हुनक वाणी लुप्त नहि भेल अछि। हुनका नाँघलाक अपराध सँ अहाँ पृथ्वी पर गिरलहुँ अछि। हे पक्षिराज! एहि ठाम ठाढ़ छेल अहाँक पोखरा मे आओत हुनक शापक निवृत्ति भऽ रहल अछि किएक तऽ आब सए वर्ष पूरा भऽ गेल। ओ जे गाबैत छलन्हि ताहि उत्तम अध्याय केँ अहाँ सेहो सुनि लिअ। ओकरा सुनला मात्र सँ अहाँ सेहो मुक्त भऽ जायब।

ता कहि पद्मिनी स्पष्ट आ सुन्दर वाणी मे दशम अध्यायक पाठ केलनि आ मुक्त भऽ गेलीह। ओकरा सुनलाक बाद हुनकर देल ता उत्तम कमल नारि ओ अपनेक अर्पण कऽ लन्हि अछि।

एतबे कथा सुना कऽ ओ चिड़ै अपन शरीर त्यागि देलक। ता एकटा अद्भुत घटना छेल। ओ चिड़ै आब दशम अध्यायक प्रभाव सँ ब्राह्मणकुल मे जन्म लेलनि अछि। जन्महि

एतबे कथा सुना कए ओ चिड़ें अपन शरीर त्यागि देलक। ई एकटा अद्भुत घटना भेल। ओ चिड़ें आइ दशम अध्यायक प्रभाव सँ चाण्डालक मे जन्म लेलनि अछि। जन्महि सँ अभ्यास भेलाक कारणे वेश्यावस्था सँ हुनका मुख सँ सदिखन गीताक दशम अध्यायक उच्चारण होइत अछि। दशम अध्यायक अर्थ चिन्तनक ई परिणाम भेल अछि जे समस्त भूत मे स्थित शंख चक्रधारी भगवान विष्णुक ओ सदिखन दर्शनकरैत रहैत छथि। हुनकर स्नेहपूर्ण दृष्टि जखन कोनो देहधारीक शरीर पर पड़ि जाइत अछि तखन ओ मुक्त भऽ जाइत छथि चाहे ओ शराबी व ब्रह्महत्यारा किए नहि होथि। पूर्वजन्म मे अभ्यास कएल गेल दशम अध्यायक महात्म्य सँ हुनका दुर्लभ ज्ञान प्राप्त भेल आ ओ जीवनमुक्ति सेहो पाबि लेने छथि। ओ जखन ओ रास्ता चलैत छथि तखन हम हुनका हाथक सहारा दैत छी हे भृंगिरिटे ई सब दशम अध्यायक महात्म्य अछि।

पार्वती! एहि प्रकार हम भृंगिरिटिक सोझाँ मे जे कथा कहने छी अछि वएह एहि ठाम अहाँ सँ सेहो कहने छी अछि। नर-नारी अथवा केओ किओ न होथि, एहि दशम अध्यायक श्रवण मात्र सँ हुनका सब आश्रमक पालनक फल मिलैत छैक।

গীতা মাহাত্ম্য
(পদ্ম পুরাণ উত্তর খণ্ড)
এগারহম অধ্যায়

মহাদেব কহলনি- গীতাক বর্ণন সঁ সম্বন্ধিত কথা আ বিশ্বরূপ অধ্যায়ক পাবন মাহাত্ম্যক শ্রবণ করু। বিশাল নেত্রবালী পার্বতী! এহি অধ্যায়ক মাহাত্ম্যক পূরা-পূরা বর্ণন নহি কএল জা সকৈত অছি। এহি সম্বন্ধ মে কএক হজার কথা অছি। জাহি মে সঁ একটা কথা কহৈত ছী। প্রণীতা নদীক তট পর মেঘংকর নাম সঁ বিখ্যাত একটা শ্রেষ্ঠ নগর অছি। ওকর প্রাকার আ গোপুর বহুত ঊঁচ অছি। ওহি ঠাম শ্রেষ্ঠ- শ্রেষ্ঠ বিশ্রাম শালা অছি। জাহি মে সোনাক খংভা শোভায়মান অছি। ওহি নগর মে শ্রীমান্, সুখী, শান্ত, সদাচারী আ জিতেন্দ্রিয় লোকনি কেঁ নিবাস অছি। ওহি ঠাম শার্ঙ্গ নাম সঁ ধনুষধারী জগদীশ্বর ভগবান বিষ্ণু বিরাজমান ছথি। ও পরব্রহ্মক সাকার স্বরূপ ছথি। সংসারক নেত্রক জীবনদায়ক ছথি। হুনকর গৌরবপূর্ণ শ্রীবিগ্রহ ভগবতী লক্ষ্মীক নেত্রকমল সঁ পূজিত হোইত অছি। ভগবানক ও ঝাঁকি বামন অবতারক থীক। মেঘ সন হুনক শ্যাম বর্ণ আ কোমল আকৃতি অছি। বক্ষঃস্থল পর শ্রীবৎসক চিন্হ শোভা পাবৈত অছি। ও কমল আ বনমালা সঁ বিভূষিত ছথি। কতেকো প্রকারক আভূষণ সঁ সুশোভিত ভঃ ভগবান বামন রত্নযুক্ত সমুদ্র সন বুঝি পড়ৈত অছি। পীতাম্বর সঁ হুনক শ্যাম বিগ্রহক কান্তি এনা প্রতীত হোইত অছি জে মানু চমকৈত বিজলী সঁ ঘেরল স্নিগ্ধ মেঘ শোভায়মান অছি। ওহি ভগবান বামনক দর্শন কঃ জীব জন্ম আ সংসারক বন্ধন সঁ মুক্ত ভঃ জাইত অছি। ওহি নগর মে মেখলা নাম সঁ একটা তীর্থ স্থল অছি জাহি মে স্নান কঃ লোক শাশ্বত বৈকুণ্ঠ ধাম চলি জাইত ছথি। ওহি ঠাম জগতক স্বামী করুণাসাগর ভগবান নরসিংহক দর্শন কঃ লোক সাত জন্মক কএল গেল ঘোর পাপ সঁ ছুটকারা পাবি জাইত ছথি। জে লোকনি মেখলা মে গণেশজীক দর্শন করৈত ছথি ও সদিখন দুস্তর বিঘ্ন কেঁ সেহো পার কঃ লৈত ছথি।

𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒹𑒒𑓀𑒏𑒩 𑒢𑒑𑒩 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒔𑒩𑓂𑒨𑒣𑒩𑒰𑒨𑒝, 𑒧𑒧𑒞𑒰 𑒂 𑒁𑒯𑓀𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒿 𑒩𑒯𑒱𑒞, 𑒫𑒹𑒠 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒲𑒝, 𑒖𑒱𑒞𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒂 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒫𑒰𑒮𑒳𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒹𑓀 𑒬𑒩𑒝𑒰𑒑𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒳𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒹! 𑒍 𑒬𑒰𑒩𑓂𑒓𑓂𑒑 𑒡𑒢𑒳𑒭𑒡𑒰𑒩𑒲 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒢𑒏 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒋𑒑𑒰𑒩𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨- 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒨𑒼𑒑𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒍𑒯𑒱 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠-𑒮𑒢𑓂𑒠𑒼𑒯 𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒧 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒧𑒨𑒲 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒲 𑒮𑒿 𑒞𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒲 𑒏𑒹𑓀 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒧𑒳𑒐 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹𑒿 𑒍 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒪 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒕𑒪𑒟𑒱 𑒂 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑓂𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒨𑒼𑒑𑒲𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒋𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒖𑒐𑒢 𑒥𑒵𑒯𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒩𑒰𑒬𑒱 𑒣𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒕𑒪𑒟𑒱 𑒞𑒐𑒢 𑒧𑒯𑒰𑒨𑒼𑒑𑒲 𑒮𑒳𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒑𑒼𑒠𑒰𑒫𑒩𑒲 𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓀𑒦 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒍 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 𑒫𑒱𑒩𑒖𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟, 𑒞𑒰𑒩𑒰 𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟, 𑒏𑒣𑒱𑒪𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒧, 𑒁𑒭𑓂𑒙𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟, 𑒏𑒣𑒱𑒪𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩, 𑒢𑒩𑒮𑒱𑓀𑒯𑒫𑒢, 𑒁𑒧𑓂𑒥𑒱𑒏𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒲 𑒂 𑒏𑒩𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒣𑒳𑒩 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒢 𑒂𑒍𑒩 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒧𑒝𑓂𑒛𑒣 𑒢𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒑𑒩 𑒧𑒹 𑒋𑒪𑒰𑒯। 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒒𑒩 𑒖𑒰 𑒏𑒹𑓀 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒚𑒯𑒩𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒧𑒰𑓀𑒑𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒹𑒍 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻𑒢। 𑒁𑒢𑓂𑒞 𑒧𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒻𑒒 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒮𑒰𑒟𑒲 𑒮𑒯𑒱𑒞 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒩𑒰𑒞𑒲 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒮𑒫𑒹𑒩𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒍 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏𑒹 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒟𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒰𑒟𑒲 𑒮𑒥 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒢𑒱। 𑒍 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒐𑒼𑒖𑒻𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒔𑒪𑒪𑒰𑒯 𑒞𑒐𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰𑒖𑒲 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒧𑒳𑒪𑒰𑒏𑒰𑒞 𑒦𑒹𑒪। 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒯𑒹 𑒧𑒳𑒢𑒱𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚! 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒥 𑒞𑒩𑒯𑒹 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒𑒰𑒨𑒳 𑒠𑒱𑒐𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒮𑒾𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨𑒬𑒰𑒪𑒲 𑒂 𑒣𑒳𑒝𑓂𑒨𑒫𑒰𑒢 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒧𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒥𑒮𑒿 𑒣𑒫𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒕𑒲। 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒪𑒼𑒏𑒼𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒧𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒏𑒼𑒢 𑒚𑒰𑒧 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒋𑒯𑒱 𑒦𑒫𑒢 𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒦𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒋𑒏𑒩 𑒣𑒞𑒰 𑒪𑒑𑒰𑒅। 𑒯𑒧 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒋𑒯𑒢 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒞𑒣𑒮𑓂𑒫𑒲 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒫𑒱𑒣𑓂𑒩𑒫𑒩! 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹 𑒏𑒼𑒢 𑒧𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱? 𑒏𑒼𑒢 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒨 𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒂 𑒏𑒼𑒢 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒏 𑒠𑒨𑒰 𑒮𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒧𑒹 𑒁𑒪𑒾𑒏𑒱𑒏 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒦𑒑𑒫𑒢! 𑒏𑒵𑒣𑒰 𑒏𑓄 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒴। 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒮𑒥 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒬𑒳𑒬𑓂𑒩𑒳𑒭𑒰 𑒏𑒩𑒥।

𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒱 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒧𑒳𑒢𑒲𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒏𑒹𑓀 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧 𑒧𑒹 𑒚𑒯𑒩𑒰𑒨 𑒪𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒍 𑒠𑒱𑒢 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒙𑒯𑒪 𑒏𑒩𑓄 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒖𑒐𑒢 𑒮𑒰𑒞-𑒂𑒚 𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒲𑒞𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒐𑒢 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒦𑒼𑒩𑒹 𑒦𑒼𑒩 𑒂𑒥𑒱 𑒠𑒳𑒐𑒲 𑒦𑓄 𑒧𑒯𑒰𑒬𑒼𑒏 𑒮𑒼𑒗𑒰 𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒏𑒰𑒢𑓄 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱 - 𑒨𑒾 𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒂𑒃 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒋𑒯𑒢 𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨𑒯𑒲𑒢𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒏𑒹𑓀 𑒔𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒥𑒛𑓃 𑒑𑒳𑒝𑒫𑒰𑒢 𑒂 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒕𑒪। 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒹𑓀 𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒨𑒼𑒑𑒲 𑒮𑒳𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢- 𑒍 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮 𑒏𑒼𑒢 𑒚𑒰𑒧 𑒁𑒕𑒱? 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒦𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒏𑒹𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱?

𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢- 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝! 𑒋𑒯𑒱 𑒢𑒑𑒩 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒠𑒻𑒞𑓂𑒨 𑒢𑒩𑒦𑒏𑓂𑒭𑒲 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒂𑒥𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒢𑒑𑒩𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒞𑒯𑒢 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒢𑒑𑒩𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒧𑒱𑒪 𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒏𑒹𑒪𑒟𑒱- 𑒯𑒹 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮! 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒥 𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒰𑒨𑒰 𑒏𑒩𑒴। 𑒯𑒧 𑒮𑒥 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒦𑒼𑒖𑒢𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒞 𑒕𑒲। 𑒋𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒥𑒰𑒙𑒹𑒏 𑒖𑒹 𑒏𑒹𑒍 𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒮𑒴𑒞𑒞 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒐𑒰 𑒖𑒰𑒨𑒥। 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒋𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒿𑒫𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏𑒏 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒖𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮𑒏 𑒂𑒯𑒰𑒩 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝𑒏 𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒩𑓄 𑒣𑒛𑓃𑒪। 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒒𑒩 𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒴𑒞𑒪 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮 𑒮𑒥 𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒟𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹𑒿 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒠𑓂𑒫𑒱𑒖𑒼𑒞𑓂𑒞𑒧! 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒢 𑒏𑒼𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒣 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒯𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒁𑒐𑒢 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒠𑒼𑒮𑓂𑒞 𑒂𑒨𑒪 𑒕𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯 𑒮𑒏𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒍 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒥𑒛𑓃 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒑𑒩 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒧 𑒋𑒯𑒱 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒖 𑒠𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒖𑒐𑒢 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒠𑒼𑒮𑓂𑒞 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒯𑒢 𑒍 𑒋𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒯𑒱 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒐𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒏𑒢𑒱। 𑒂𑒖𑒳 𑒮𑒥𑒹𑒩𑒹 𑒯𑒧 𑒠𑒳𑒐𑒲 𑒦𑓄 𑒏𑒹 𑒣𑒱𑒬𑒰𑒔 𑒮𑒿 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿- 𑒨𑒾 [illegible]! 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒅𑒠𑒩 𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒯𑒧 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒮𑒏𑒟𑒱 𑒞𑒏𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒅𑒣𑒰𑒨 𑒖𑒾𑒿 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒢 𑒏𑒯𑒅।

𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒲! 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒒𑒳𑒮𑒪 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒢𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒯𑒧 𑒐𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒢𑒖𑒰𑒢 𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒮 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒅𑒠𑒩 𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒂 𑒩𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒏𑒩 𑒅𑒣𑒰𑒨 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒫𑒱𑒡𑒰𑒞𑒰 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒹 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒋𑒑𑒰𑒩𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒣 𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒯𑒼𑒨𑒞 𑒂 𑒧𑒩𑒪 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒤𑒹𑒩𑒱 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒖𑒹𑒞𑒰𑒯। 𑒋𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒧 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒬𑒰𑒪𑒰 𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒍 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒋𑒑𑒰𑒩𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒖𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒞 𑒥𑒹𑒩𑒱 𑒁𑒦𑒱𑒧𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒏𑓄 𑒖𑒾𑒿 𑒍 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒣𑒩 𑒖𑒪 𑒕𑒲𑓀𑒙𑒱 𑒠𑒹𑒞𑒰𑒯 𑒞𑓄 𑒢𑒱𑓁𑒮𑒢𑓂𑒠𑒹𑒯 𑒯𑒧 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒣 𑒮𑒿 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒨𑒥।

𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮𑒏 𑒮𑒢𑓂𑒠𑒹𑒬 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒯𑒧 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒪𑒑 𑒂𑒨𑒪 𑒁𑒕𑒱।

ট্রাফল পুছলখিন - মুখিয়া জী ! জে ব্যক্তি মে স্বতঃ লোকনি কেঁ খায়ত ছথি ও প্রাণি কোন পাপ সঁ রাক্ষসত্ব অছি।

মুখিয়া জী কহলনি - হে ট্রাফল ! পহিনে ওহি গাঁব মে কোনো কিসান ট্রাফল রহৈত ছলাহ। এক দিন ও অপনহিঁক খেতক ক্যারীক রক্ষা করৈত ছলাহ। ওহি ঠাম সঁ খেতক ঊপর একটা গৈঁড় গিদ্ধ কোনো রাঁঢ়হী কেঁ মারি খাইত ছল। তখনহি একটা তপস্বী কতহু সঁ আবি ওহি বাটীক রচারঃ কেঁ নেল দূরহি সঁ দয়া দেখা বহুল ছলাহ। গিদ্ধ ওহি রাঁঢ়হী কেঁ খা কেঁ আকাশ মে উড়ি গেল। তব তপস্বী শাপিত ভঃ ওহি কিসান সঁ কহলনি - যৌ দুষ্ট উনমাতা ! অহাঁক ধিক্কার অছি। অহাঁ বড় কঠোর আ নির্দয়ী ছী। দোসরাক রক্ষা সঁ মুঁহ মোড়ি কেরল স্বার্থপান কেঁ ধন্ধা মে লাগল ছী। অহাঁক জীবন নষ্টপ্রায় অছি। জে চোর, দাঢ়ী যুক্ত জীব, সাঁপ, শস্ত্র, আগি, বিষ, পানি, গীদ্ধ, রাক্ষস, ভূত আ বেতাল আদি সঁ ঘায়ল ভেল লোকনি কেঁ শক্তি রহিতহুঁ উপেক্ষা করৈত ছথি ও ফলকর বধক যন পাবৈত ছথি। জে শক্তিশালী ভঃ চোর আদিক ঠমল মে যসল ট্রাফল কেঁ ছোড়বঃ কেঁ চেষ্টা নহি করৈত ছথি, ও ঘোর নরক মে গিরৈত ছথি আ ফেরি ভেড়িয়াক যোনি মে জন্ম লৈত ছথি। জে বন মে মারল জায়ত আওর গিদ্ধ ব বাঘক দৃষ্টি মে পড়ল ওজীর জে রক্ষাক লেল ছোড়ু, চোড়ুক গুহার করৈত অছি ও পরম গতি কেঁ প্রাপ্ত করৈত ছথি। জে লোকনি গায়ক রক্ষাক লেল বাঘ, জীন আ দুষ্ট রাজাক হাথ সঁ মারল জায়ত ছথি ও ভগবান বিষ্ণুক পরম পদ কেঁ পাবৈত ছথি জে যোগী লোকনিকক লেল সেহো দুর্লভ অছি। সহস্র অশ্বমেধ যজ্ঞ আওর সোত রাজসূয় যজ্ঞ মিল কেঁ শরণাগতক রত সোলহম কলাক বরাবর নহি ভঃ সকৈত অছি। দীন আ ভয়ভীত জীবক উপেক্ষা কেলা সঁ পুণ্যবান পুরুষ সেহো সময় এলা পর শাস্ত্রীপাক নাম সঁ নরক মে পকায়ল জায়ত ছথি। অহাঁ দুষ্ট গিদ্ধ সঁ খায়ত রাঁঢ়হী কেঁ দেখি ওকরা রচারঃ মে সমর্থ রহিতহুঁ ওকর রক্ষা নহি কেলহুঁ তাহি সঁ অহাঁ নির্দয়ী ছুকি পড়ৈত ছী, তেঁ অহাঁ রাক্ষস ভঃ জাউ।

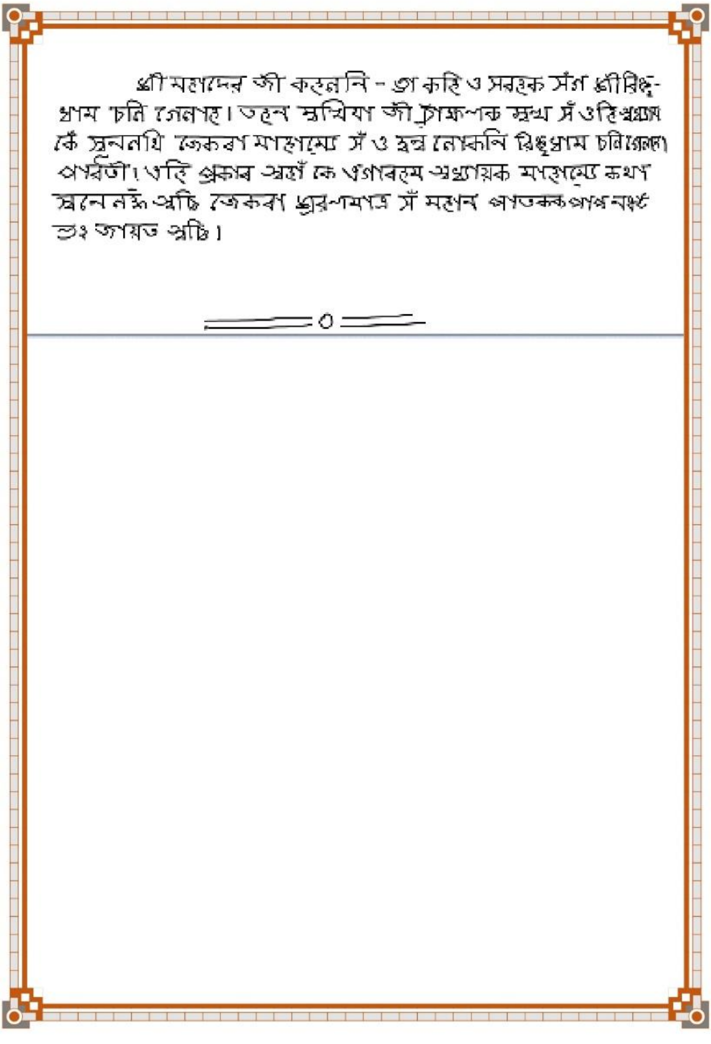
হরবাহা কহলনি - হে মহাত্মা ! হম ওহি ঠাম উপস্থিত অবশ্য ছলহুঁ মুদা হমর নজরি খেতক রক্ষা মে লাগল ছলৈ লগ মে রহিতহুঁ গিদ্ধ সঁ মারল জায়ত জনকা নহি জানি সকলহুঁ। হমরা দীন পর অপনেক অনুগ্রহ করবাক চাহী।

তপস্বী ট্রাফল কহলনি - জে সব দিন গীতাক এগারহম অধ্যায়ক জপ করৈত ছথি হুনকা সঁ অভিমন্ত্রিত জল জখন অহাঁক মস্তক পর পড়ত তখন অহাঁ শাপ সঁ মুক্ত ভঃ জায়ব।

আ কহি তপস্বী ট্রাফল চলি গেলাহ আ ও হরবাহা রাক্ষস ভঃ গেল। হে দ্বিজশ্রেষ্ঠ ! অহাঁ চল আ এগারহম অধ্যায়ক তীর্থক জল কেঁ অভিমন্ত্রিত কর আওর অপনে হাথ সঁ রাক্ষসক মস্তক পর অভিমন্ত্রিত জল কে ছীঁট দিঅউ।

সুখিয়া জীক ঈ সব প্রার্থনা সুনি শ্রীকৃষ্ণক হৃদয় করুণা সঁ ভরি আয়ল। ও রহ বীক কহি হুনকা সঁগ রাক্ষসক লগ গেলাহ। ও শ্রীকৃষ্ণ যোগী ছলাহ। ও বিশ্বরূপ দর্শন নাম সঁ এগারহম অধ্যায়ক মন্ত্র সঁ জল অভিমন্ত্রিত কঃ রাক্ষসক মাথ পর ডাললথিন। গীতাক অধ্যায়ক প্রভাব সঁ ও পাপমুক্ত ভঃ গেলাহ। ও রাক্ষসক দেহ ত্যাগি চতুর্ভুজ রূপ ধারণ কঃ লেলনি। তে ভুজাবো বৈর্থৈহিক ভূষণ কেনে ছল সেহো শঁখ, চক্র আ গদা ধারণ কেনে চতুর্ভুজ রূপ ভঃ গেলাহ। তৎপশ্চাৎ ও সব বিমান পর আরূঢ় ভেলাহ। তখন সুখিয়া জী রাক্ষস সঁ কহলনি - নিশাচর! তমর পুত্র কি ছথি সে দেখাও। হুনকা এনা কহলা পর দিব্য দৃষ্টিবালা রাক্ষস কহলনি - ই জে তমাল সন শ্যাম, চারি ভুজাধারী, মাণিক্যমালাই সঁ সুশোভিত আ দিব্য মণি নির্মিত কুণ্ডল সঁ অলংকৃত-হারপহিরলাক কারণ জিনকর কণ্ঠ মনোহর প্রতীত হোয়ত ছথি, জে সোনাক ভুজবন্দ সঁ বিভূষিত, কমল সন আঁখি, স্নিগ্ধ রূপ, হাথ মে কমল লেনে দিব্য বিমান পর বৈসল দেবত্ব ভঃ গেল ছথি, তাওহুআহক পুত্র থীক। ত সুনি সুখিয়া ওহি রূপ মে পুত্র কেঁ দেখলথিন আ হুনকা অপনা ঘর লঃ জেবা চাহলথিন। ত দেখি হুনকর পুত্র হঁসি কেঁ এনা কহঃ লাগলথিন।

পুত্র কহলনি - সুখিয়া জী, কএক বেরি অহাঁ সেহো হমর পুত্র ভেল ছী। পহিনে হম অপনেক পুত্র ছলহুঁ আর হম দেবতা ভঃ গেলহুঁ অছি। দেখু, ই নিশাচর সেহো চতুর্ভুজ রূপ ভঃ গেলথি। এগারহম অধ্যায়ক মাহাত্ম্য সঁ ই সব লোকনি শ্রীবিষ্ণু ধাম জা রহল ছথি। অহাঁ সেহো শ্রীকৃষ্ণদেব সঁ গীতাক এগারহম অধ্যায়ক অধ্যয়ন করু আ নিরন্তর জপ করৈত রহু। এহি মে কোনো সংদেহ নহি অছি জে অপনেক এহিনা উত্তম গতি মিলত। হে তাত। মনুষ্যক লেল সাধু পুরুষক সঁগ দুর্লভ অছি। অখন অপনেক সেহো মিল গেল অছি। তেঁ অপন অভীষ্ট সিদ্ধ করু। ধন, ভোগ, দান, যজ্ঞ, তপস্যা আ পূর্তকর্ম সঁ কী লেবাক অছি বিশ্বরূপাধ্যায়ক পাঠ সঁ পরম কল্যাণক প্রাপ্তি ভঃ জায়ত। পূর্ণানন্দসন্দোহ স্বরূপ শ্রীকৃষ্ণ নাম সঁ প্রসিদ্ধ সুখ সঁলগ্ন ক্ষেত্র মে অপন ধর্ম অর্জুন কেঁ প্রতি অমৃতময় উপদেশ নিকলল ছল রহ শ্রীবিষ্ণুক পরম তাত্ত্বিক রূপ থীক। অহাঁ হুনকে চিন্তন করু। ও মোক্ষক লেল প্রসিদ্ধ রসায়ন থীক। সংসারভয় সঁ ডরল লোকনি কে আধি-ব্যাধিক বিনাশক আ কতেকো জন্মক দুঃখ কেঁ নাশক অছি। হম একর সিবা দোসর কোনো ওহেন সাধন নহি দেখৈত ছী তেঁ একরে অভ্যাস করু।



শ্রী মহাদেব জী কহলনি - ত্রা করি ও সবহক সঁগ শ্রীবিষ্ণু-
ধাম চলি গেলাহ। তহন ঋষিয়া জী চাঁক্ষপক স্থ্ব সঁ ওহিধ্রাম
কেঁ সুনলথি জেকরা মাহাত্ম্য সঁ ও হুন লোকনি বিষ্ণুধাম চলি গেল।
পার্বতী। এহি প্রকার অহাঁ কে এগারহম অধ্যায়ক মাহাত্ম্য কথা
সুনেলহুঁ অছি জেকরা শ্রবণমাত্র সঁ মহান পাতককাপ নষ্ট
ভঃ জায়ত অছি।

অপন মংতব্য editorial.staff.videha@gmail.com পর পঠাউ।

𑓒.𑓒.𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪- 𑒯𑒰𑒢 𑒧𑒱𑒨𑒰𑒿/ 𑒖𑒨𑓀𑒞 (𑒏𑒾𑒂)𑒏𑒺 𑒏𑒟𑒰



𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪- 𑒯𑒰𑒢 𑒧𑒱𑒨𑒰𑒿/ 𑒖𑒨𑓀𑒞 (𑒏𑒾𑒂)𑒏𑒺 𑒏𑒟𑒰

𑓑

𑒯𑒰𑒢 𑒧𑒱𑒨𑒰𑒿

𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢 𑒑𑒰𑒿𑒥 𑒧𑒺 𑒞𑒢𑒺𑒥𑒩 𑒩𑒰𑒨 𑒂 𑒦𑒼𑒪𑒰 𑒧𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒢𑒱𑒏 𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢 𑒩𑒯𑒪𑒢।𑒠𑒴𑓀𑒢𑒴 𑒠𑒮 -𑒠𑒮 𑒥𑒱𑒿𑒒𑒰 𑒏𑒺 𑒖𑒼𑒞𑒢𑒱𑒨𑒰। 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒩𑒺 𑒏𑒺 𑒙𑓂𑒩𑒻𑒏𑓂𑒙𑒩।𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒩𑒺 𑒏𑒺 𑒠𑒼𑒮𑓂𑒞𑒲𑒨𑒼 𑒩𑒯𑒺।

𑒞𑒢𑒺𑒥𑒩 𑒩𑒰𑒨 𑒏𑒺 𑒠𑒴𑒑𑒼 𑒥𑒺𑒿𑒙𑒰 𑒤𑒳𑒢𑒺𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒂 𑒣𑒳𑒢𑒺𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒯𑒨 𑒞 𑒦𑒼𑒪𑒰 𑒧𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒏𑒺 𑒋𑒑𑒼 𑒥𑒺𑒿𑒙𑒲 𑒮𑒪𑒱𑒧𑒰 𑒂 𑒋𑒑𑒼 𑒥𑒺𑒿𑒙𑒰 𑒁𑒧𑒖𑒠 𑒩𑒯𑒨।

𑒮𑒪𑒱𑒧𑒰 𑒂 𑒤𑒳𑒢𑒺𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒑𑒰𑒿𑒥 𑒏𑒺 𑒃𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒧𑒺 𑒣𑒜𑒻। 𑒔𑒴𑒿𑒏𑒱 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒏𑒺 𑒥𑒰𑒿𑒣 𑒏𑒺 𑒠𑒼𑒮𑓂𑒞𑒲 𑒩𑒯𑒨।𑒋𑒏𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒥 𑒦𑒺𑒪 𑒏𑒱 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒧𑒺𑓀 𑒐𑒴𑒥𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒣𑒢 𑒩𑒯𑒺।𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒣𑒜𑒺 𑒧𑒺𑒨𑒼 𑒞𑒺𑒖 𑒩𑒯𑒨। 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒂𑒚𑒥𑒰𑓀 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒻𑒪𑒏 𑒞 𑒃𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒁𑒣𑒑𑓂𑒩𑒺𑒛 𑒯𑒼𑒏𑒺+𑓒𑒧𑒰𑒢𑒺 𑒏𑒱 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒞𑒩 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧𑒱𑒏 𑒦𑒺 𑒑𑒺𑒪।𑒏𑓂𑒪𑒰𑒮 𑒥𑒿𑒜𑒻𑒞 𑒑𑒺𑒪,𑒅𑒧𑒩 𑒥𑒿𑒜𑒻𑒞 𑒑𑒺𑒪 𑒞 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒣𑒢𑒼 𑒣𑓂𑒨𑒰𑒩 𑒧𑒺 𑒥𑒿𑒠𑒪𑒻𑒞 𑒑𑒺𑒪।

দূন্‌ূ ওংষ্টৰ পাস ক গেল।দূন্‌ূ স্বৰসৰ ডিগ্ৰী কানেজ মে এডমিশন নেনক।খ্‌ৰা্ঁ ত দূন্‌ূ কে প্যাৰ পৰৰান ঠঠে নাগন।দূন্‌ূ ৰীএ পাস ক গেন।সনিমা খ্‌ৰাৰিঁ ঘৰে পৰ ৰহে নাগন।

ফূনেশ্বৰ প্ৰতিযোগিতা পৰীক্ষা পাস ক কে ৰাজস্ব খ্ধিকাৰী ৰঁন গেন। ফূনেশ্বৰ খ্‌া সনিমা কে ৰঁৰাৰঁৰ মোৰাঁগন পৰ ৰাঁতো হোগত ৰহয।

একষ্টা দিন সনিমা কৌন কৈনক।হেনো।

ফূনেশ্বৰ মোৰাঁগন ডঠৈনক খ্‌া ৰোঁনন -হেনো।সনিমা।

সনিমা -ফূনেশ্বৰ।কি হান চান হয।

ফূনেশ্বৰ -খ্‌াগ কানি ৰঁড ৰীজী ঠ্ী।

সনিমা-কেহন ৰীজী।

ফূনেশ্বৰ -খ্‌াগ কানি জাতীয জনগণনা মেঁ ৰীজী ঠ্ী।

হৰ ৰোজ সাঁঝ ৩সেণৰঁজে কে ৰীঠ ডীএম সাহৰঁ কে সংগ রিডিযো কান্‌ফ্ৰেঁসিংগ হোগ হয।খ্‌া ওগমে দিনভৰ কে ৰিপোৰ্ট দেৰেঁ কে হোগ হয।

সনিমা -ত খানী ৰীজীএ ৰহৈ ঠ্া কি হমৰ্‌ূ যাদ খ্ৰৈয ঠিযো কি ন!

ফূনেশ্বৰ -হঁ।মনিমা।জৌ কাজ মে ফূর্মত মিনয।ত তূ যাদ খৰৈঁয ছা।

মনিমা -হম ত ৰাতি দিন তোৰে প্যাৰ মে ডূৰঁন ৰহয ছী।

ফূনেশ্বৰ -মনিমা।যাদ ত কৰা নেকিন প্যাৰ ন কৰা।

মনিমা -কাহে।

ফূনেশ্বৰ -খাৰিঁ তোহৰ নিকাহ হোতো।খপনা শৌহৰ (পতি)কে প্যাৰ কৰিহা।

মনিমা -হম ত খপন শৌহৰ তোৰা কে মানৈ ছিযো।খা তোহৰে শৌহৰ ৰঁনিৰৌঁ।

ফূনেশ্বৰ -ঙ কেনা হোতৈয।

মনিমা -ঙ ৰঁড খাসান হয খা ৰঁড়া কঠিনো।

ফূনেশ্বৰ -কেনা।

মনিমা -হম্মৰ ধৰ্ম ঙম্নাম খপনা নেৰা ত ৰঁড খাসান।জৌ ন মানৰাঁ ত কঠিন।

ফূনেশ্বৰ -হম্মৰ পৰিৰাৰ ত ন মানতৌ।

মনিমা -পৰঁন্তু হমৰ পৰিৰাৰ ত খাসানী মে মান নেতৌ জৌঁ তূ ঙম্নাম ধৰ্ম খপনা নেৰা।ন মানৰাঁ ত কঠিন হো জতৌ।

ফূনেশ্বৰ -ঘনিমা।হম তোৰা প্ৰেম মেঁ গম্নাম ধৰ্ম শ্বপনা নেৰঁ।ম্বননে-পঠনে ত ছী জে ৰঁদ্মত নোগ গম্নাম ধৰ্ম কে নৰকী মে মহৰ্ব্ৰঁত শ্বা ৰিঁশ্বাহ কে নেন গম্নাম ধৰ্ম শ্বপনা নেনক।মগনকানে মে ত জমীঁদাৰ শ্বা ছোৰ্ট ছোৰ্ট ৰাজা মহাৰাজা শ্বা শাঘন মে ভঁচ পদ পাৰেঁ কে নেন গম্নাম ধৰ্ম শ্বপনা নেন কৈ।ঘফী ফকীৰ কে শিক্ষা ঘেযো গম্নাম ধৰ্ম শ্বপনা নেন কে।

শ্বপনে জিনা কে পৰঘৌনী কে ৰাজা ম্বঘনমান হয জে পহিনে হিঁদূ ৰহয।এগো ম্বঘনমাননী নৰকী কে প্যাৰ মে গম্নাম ধৰ্ম শ্বপনা কে ম্বঘনমান ৰঁন গেনেয।

ঘনিমা -এতে কথা হম ন জনয ছিযৌ।ঐতে জনয ছিযৌ কী কোনো গঘনাম ধৰ্ম কে শ্বপনৈতে ত ৰোকৰ ৰিঁশ্বাহ ম্বঘনমান নৰকী মে হো ঘকৈয হয।

ফূনেশ্বৰ -ত হম তোৰা মে ৰিঁশ্বাহ কৰে নেন গম্নাম ধৰ্ম শ্বপনাৰেঁ কে নেন তৈযাৰ ছী।

ঘনিমা -ত ঘাত দিন কে ছুট্টী নেকে ঘৰ শ্বাৰঁা।

ঘনিমা -ঘৰঁ ৰাঁত শ্বপ্পন শ্বম্মা শ্বা শ্বৰ্ব্ৰাঁ কে ৰঁতৈনেক।

শ্বম্মা -শ্বৰ্ব্ৰাঁ ৰাজী ভে গেন। শ্বম্মা -শ্বৰ্ব্ৰাঁ ৰোঁনেন কি শ্বপনা ধৰ্ম মে ত গ শ্বাম ৰাঁত হয। নেকিন হম শ্বপ্পন দোস্ত তনেৰৰ কে

জৰুৰ ৰঁতাএৰঁ।গ ন কি হম দগা দেনিযন হয।হম ঋপনা ধর্ম কে ৰীতি ৰিৰাজ কে ৰঁতৈৰোঁ।

হম্মৰ দোস্ত কে ধর্ম মে দোসৰ ধর্ম কে নৰকী সে ৰিঁঋাহ কঠিন হয।

ঋাগ ভোনা মিযাঁ ঋপ্পন দোস্ত তনেৰৰ ৰায কে ঙংহা গেনন।

তনেৰৰ ৰায -ঋাঙ দোস ৰৈঠূ।কি ৰাঁত হয।

ভোনা মিযাঁ - হম্মৰ ৰেঁটী সনিমা ঋা ঋংহা কে ৰেঁটা ফূনেশ্বৰ এক দোসৰা কে প্রেম কৰৈত হয ঋা দূনূ ৰিঁঋাহ কৰয চাহয হয। সনিমা হমৰা সভ ৰাঁত ৰঁতৈনক হয। হম্মৰ পৰিৰাৰ ত ৰাজী হয। হমৰা সভ মে ত কেৰন দূধ ৰাঁৰন জাগ হয।দোসৰ ধর্ম কে নৰকী ঋা নৰকা হম্মৰ ধর্ম গম্নাম ঋপনা নেতেয ত ৰিঋাহ মে কোনো ঋড়চন ন হয। ঋংহা কে ত ধর্ম মে দিক্কত হয। ঋংহা হম্মৰ দোস ছী। ঋংহা কে সভ ৰাঁত কে জানকাৰী দেনাগ হম্মৰ ফর্জ হয।

তনেৰৰ ৰায -হম কি কদ্দ দোস।হম ত ঋাৰাক ছী।ঋাৰিঁ ফূনেশ্বৰ পদাধিকাৰী হয। কানূন কে জানকাৰ হয। হমদূঁ ৰূঁঝৈয ছী কি কোঙ্গ ৰ্যক্তি কোঙ্গ ধর্ম ঋপনা সকৈয হয।হমদূ কোনো ৰিৰাদ ন কৰৈয চাহী ছী।জে ৰাঁত সে ৰঁতংগৰ হো জায।

ভোনা মিযাঁ -ত চনৈয ছী।ৰিঁঋাহ কে সৰজান কৰৈ কে হয।

ফূনেশ্বৰ সাত দিন কে ছূট্টী নেকে সনিমা কে ঘৰ ঋা গেন।

𑒂𑒑 𑒦𑒼𑒪𑒰 𑒧𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒒𑒩 𑒣𑒩 𑒧𑒱𑒪𑒰𑒠 𑒏𑒹 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒻𑒪𑒏।𑒧𑒼𑒪𑒫𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒥 𑒤𑒴𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒏𑒹 𑒏𑒪𑒧𑒰 𑒣𑒜𑒻𑒪𑒏। 𑒤𑒴𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒏𑒹 𑒢𑒰𑒧 𑒤𑒴𑒪𑒔𑒢 𑒧𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪।𑒋𑒑𑒼 𑒧𑒱𑒨𑒰𑒿 -𑒥𑒲𑒥𑒲 𑒖𑒹 𑒮𑒪𑒱𑒧𑒰 𑒏𑒹 𑒤𑒴𑒤𑒰 -𑒤𑒴𑒤𑒲 𑒩𑒯𑒨। 𑒤𑒴𑒪𑒔𑒢 𑒧𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒁𑒥𑓂𑒥𑒰 -𑒁𑒧𑓂𑒧𑒲 𑒥𑒢𑒏𑒹 𑒑𑒫𑒰𑒯 𑒥𑒢 𑒪𑒢 𑒂 𑒮𑒪𑒱𑒧𑒰 𑒏𑒹 𑒁𑒥𑓂𑒥𑒰 -𑒁𑒧𑓂𑒧𑒲 𑒑𑒫𑒰𑒯 𑒥𑒢𑒪𑒢। 𑒮𑒪𑒱𑒧𑒰 𑒂 𑒤𑒴𑒪𑒔𑒢 𑒧𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒋𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒹 𑒏𑒥𑒴𑒪 𑒏𑒻𑒪𑒢।

𑒤𑒴𑒪𑒔𑒢 𑒧𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒧𑒳𑒮𑒪𑒧𑒰𑒢 𑒯𑒖𑓂𑒖𑒰𑒧 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒢𑒞 𑒏𑒻𑒪𑒏।

𑒑𑒰𑒿𑒫 𑒏𑒹 𑒮𑒦 𑒪𑒼𑒑 𑒤𑒴𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒏𑒹 𑒕𑒰𑒢 𑒧𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒤𑒴𑒪𑒔𑒢 𑒏𑒯𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪।

𑓒

𑒖𑒨𑓀𑒞 (𑒏𑒾𑒂)𑒏𑒹 𑒏𑒟𑒰

(𑒫𑒰𑒪𑓂𑒧𑒲𑒏𑒱 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒨𑒝 𑒂 𑒮𑓀𑒞 𑒞𑒳𑒪𑒮𑒲𑒠𑒰𑒮 𑒩𑒔𑒱𑒞 𑒩𑒰𑒧𑒔𑒩𑒱𑒞𑒧𑒰𑒢𑒮 𑒧𑒹 𑒧𑒞𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰!)

𑒫𑒰𑒪𑓂𑒧𑒲𑒏𑒱 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒨𑒝 𑒏𑒹 𑒮𑒳𑓀𑒠𑒩𑒏𑒰𑓀𑒛 𑒧𑒹 𑒁𑒬𑒼𑒏 𑒫𑒰𑒙𑒱𑒏𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒮𑒲𑒞𑒰 𑒯𑒢𑒳𑒧𑒰𑒢 𑒖𑒲 𑒮𑒹 𑒏𑒾𑒂 𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒥𑒞𑒻𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢 -𑒣𑒯𑒔𑒰𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒖𑒹 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒩𑒰𑒧 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒯𑒼 𑒖𑒰𑒨 𑒏𑒱 𑒯𑒢𑒳𑒧𑒰𑒢 𑒂 𑒮𑒲𑒞𑒰 𑒮𑒹 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒦𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒨।

𑒃𑒠𑓀 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚𑒧𑒦𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑓀 𑒥𑓂𑒩𑒴𑒨𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒫𑓀 𑒞𑒳 𑒧𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑓀।

𑒬𑒻𑒪𑒮𑓂𑒨 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏𑒴𑒙𑒮𑓂𑒨 𑒣𑒰𑒢𑒹 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒼𑒞𑓂𑒞𑒩𑒹 𑒣𑒠𑒹 ॥𑓑𑓒॥

𑒮 𑒞𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒳𑒢𑒩𑒹𑒫𑒰𑒟 𑒫𑒰𑒨𑒮: 𑒮𑒧𑒳𑒣𑒰𑒑𑒧𑒞𑓂।

ততঃ স্বপ্তপ্রবুদ্ধাং মাং ৰথ্যাঘরখাংগ৯ সমুত্থিতাম্

রাযস: সহসখাগম্য রিদদাৰ স্তনান্তৰে॥২২॥

পুনঃ পতনৰথও৯পযং রিদদাৰ স মাং ভৃশম্।

ততঃ সমুত্থিতো ৰামো মুক্তৈঃ শোণিতরিন্দুভিঃ॥২৩।

স মাং দৃষ্ট্ৰাং মহারাহুরিত্তন্নাং স্তশযোস্তদা।

খাশীরিষ গর ক্রুদ্ধঃ শ্বসন রাক্যমভাষত॥২৪॥

কেন তে নাগনাসোৰু রিক্ষতং রৈ স্থানান্তৰম্।

কঃ ক্রীড়তি সৰোষেণ পংচরক্তেণ ভোগিনা॥২৯॥

রীক্ষমাণস্ততস্থং রৈ রাযসং সমরৈক্ষত।

নখৈঃ সৰুধিৰৈস্তীক্ষ্নৈর্মামেরাভিমুখং স্থিতম্॥২৬॥

ৰামচৰিতমানস কে খৰণ্য কাণ্ড কে প্রথম চৌপাঙ্গ মেং জযংত(কৌখা)কী কথা হয।

এক রাঁৰ চুনি কুসুম সুহাএ।নিজ কৰ ভূষণ ৰাম রনাএ।

সীতহি পহিৰাএ প্রভু সাদৰ। রৈঁঠে ফটিক সিনা পৰ সুংদৰ।

সুৰপতি সুত ধৰি রাঁযস রেঁষা।সঠ চাহত ৰঘুপতি রন দেখা।

জিমি পিপীনিকা সাগৰ থাহা।মহা মংদমতি পারন চাহা।

सीता हरन होंह हति भागा।मूंढ मंदमति कारन कागा।

हला रूधिर रघुनायक जाना।सींक धनुष सायक संधाना।

अइ प्रकार वॉल्मीकि रामायण आ संत तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस मेॅ जयंत (कौआ) के कथा मे मतभिन्नता हय।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी,*सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व0राजेश्वर मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-०१ जनवरी १९३० योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रूचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह भाषा के न बाँटियौ। २०२२ प्रकाशित रचना - सिमिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गान। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बॉहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबॉर -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पत्ता- ग्राम-पिपरा बिशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढी। वर्तमान पता-पिपरा सदन,सुरनियाहक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-डुमरा जिला-सीतामढी राज्य-बिहार पिन-843302 मो नं-9973641075 ईमेल-ramanandmandal001@gmail.com*

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

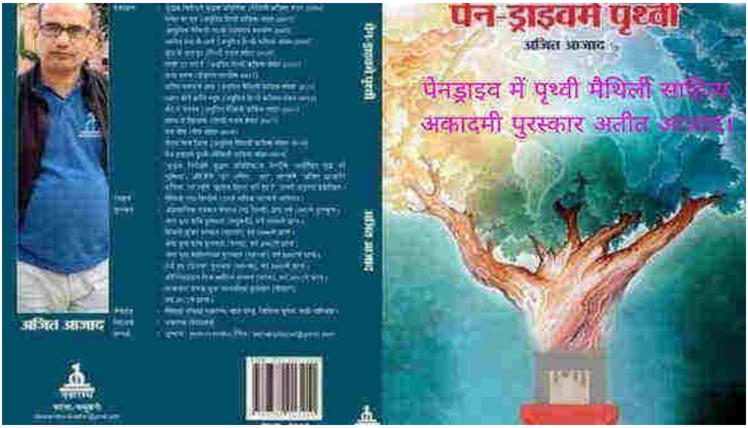
২.३.নানদের কামত-সাহিত্য অকাদমী পৰেখননি - পেন ড্রাগরমে পৃথ্বী কেঁ/ মখানাক গ্ৰণ ৰ্বুস্র/ মিথিনা মেঁ মাচ্ছ, ৰোজগাৰকে সর্বস্বনেভ সাধন ভয সকৈত খচ্চি/ পানক ৰ্বড়েৰ্ব/ ঔষধীয গ্ৰণ মৌধমে/ ৰংগপ্ৰৰমে জগ্ৰূক পৰিযাস: এক রিশ্লেষণ



নানদের কামত-সাহিত্য অকাদমী পৰেখননি - পেন ড্রাগরমে পৃথ্বী কেঁ/ মখানাক গ্ৰণ ৰ্বুস্র/ মিথিনা মেঁ মাচ্ছ, ৰোজগাৰকে সর্বস্বনেভ সাধন ভয সকৈত খচ্চি/ পানক ৰ্বড়েৰ্ব/ ঔষধীয গ্ৰণ মৌধমে/ ৰংগপ্ৰৰমে জগ্ৰূক পৰিযাস : এক রিশ্লেষণ

১

সাহিত্য অকাদমী পৰেখননি - পেন ড্রাগরমে পৃথ্বী কেঁ



২০২২ লেল সাহিত্য অকাদমী দিল্লী কেৰ মৈথিলী মূল পুৰস্কাৰ মৈথিলীকৰ্মী অজিত আজাদ (মিথিলা) জীকে হুনক মৈথিলী কৱিতা সংগ্ৰহ পোথী " পেন - ড্ৰাইৱমে পৃথ্বী" কেঁ দেল জেৱাঁক ঘোষণা ভেল। এহি জনতৱ সঁ যুৱা ৱৰ্গ বীচ আ সাহিত্য প্ৰেমী জন বীচ চৌতৰফা স্বাগত ভেল অছি। হিঁহাৰ সঁ আজাদ উৰ্ফ পপ্পূজী কেৰ সঁগহি দোসৰ পুৰস্কৃত হিন্দী কৱিতা সংগ্ৰহ ' তুমৰী কে শব্দ' কেৰ কৱি ৱ প্ৰসিদ্ধ সমাজ ৱৈজ্ঞানিক বদ্ৰী নাৰাযণ (ভোজপুৰ) কেঁ সাহিত্য অকাদমী সচিৱ শ্ৰী নিৱাস ৰাৱ দ্বাৰা ঘোষিত ভেলাসন্তা ২৩ ভাৰতীয ভাষাকে লেখকগণক প্ৰশংসক বীচ খুশী ক' ৱাতাৱৰণ বনলৈক। ১ জনৱৰী ২০১৩ সঁ ৩১ দিসম্বৰ ২০২০ ধৰিক পহিলেখেপ প্ৰকাশিত পুস্তক পৰ ৱিচাৰ কযল গেলৈক। এহি পুৰস্কাৰ মেঁ তাম্ৰফলক, শাঁল আ একলাখ টাকা ৱিশেষ ৰাশি সমাৰোহ মেঁ দেল জাএত। আৰো কৱিতা সংগ্ৰহমে বোঁডো- ৰশ্মি চৌধৰী, মণিপুৰী- কোগজম শাঁতিবালা, ওড়িযা গাযত্ৰীবালা পাঁডা,সংস্কৃত- জনাৰ্দন পাঁডেয'মণি' , সংতালী- কজৰী সোৰেনকেঁ মাধ্যম কযল

গেনৈক অছি। কহানী সংগ্রহ মেঁ অসমিয়া- মনোজ কুমাৰ গোস্বামী আ পংজাবীমে সুখজীত কেঁ সম্মান ভেটলনি অছি। উপন্যাস বিধামে অদহা দর্জন লোক সম্মান পেয়লথি যথা_ অংগ্রেজী- অনুৰাধা ৰাঁয,কোকণী- মায়া অনিল খৰংগটে,মৰাঠী- প্রবীণ দশৰথ বাঁদেকৰ,তমিল- এম ৰাজেংদ্রন, তেলুগূ- মধুৰাংতকম নৰেংদ্র,উর্দূ- অনীস অশফাক। সমালোচনা ক্ষেত্রমে কশ্মিৰীকে ফাৰূক প্যাজ, মলযালম- এম থাঁমস মৈথ্যু,আত্মকথা লেল গুজৰাতী মেং গুলাম মোহম্মদ শেখ আ লেখ সংগ্রহ লেল কন্নড়মে - মুডনাকুডু চিন্নাস্বামী , সাহিত্য ইতিহাস মেঁ সিংধী সঁ কন্হৈযালাল লেখৰাণী আওৰ নাটক বিধামে ক্রমশ: ডোগৰী- বীণা গুপ্তা ,নেপালীমে - কেবী নেপালী, আ ৰাজস্থানী'ক কমল ৰংগা কেঁ অৱার্ড ভেটবঁ সুনিশ্চিত ভেল ৰহয মে সময সঁ ভেটল হল্। সন্ ২০১৫ মেঁ নৱাৰম্ভ সঁ প্রকাশিত ২৯৩ পৃষ্টক কিতাবঁক দাম ২০০ টাকা নির্ধাৰিত কৰৈত অপন কাব্য সংগ্রহ মেঁ ১৫৯ গোট কবিতা কেঁ অজীত জী পাঠক সমক্ষ অনলে ৰহথি। ২০০৩ সঁ পূর্ব হিনক একোগোট পোথী নঁয ছপল ৰহনি। আবঁ তঁ আজাদ জীকে অপন পোথীক সংখ্যাঁ ৩০ টা সঁ বেঁশিযে ছৈক। কবিতা বিধা মেঁ হম গপ্প কৰয চাহৈত ছী, ওহিমে চৰ্চিত পোথী সাত গোট ছপল ছৈল জে হুনক অপন নৱাৰম্ভ কেৰ ইতৰ আনো ঠাঁব সঁ ছপল ছৈক। হিনকা কবিতাক পাত্রমে এহি পাঁতিক লেখক সেহো সমান্য পাঠককে অভৰত। মৈথিলী পৰামর্শদাত্রী সমিতি ক' সংযোজক ডাঁ০ অশোক ঝা অবিচল আ তীন সদস্যীয নির্ণাযক মংডল ডা দেৱকাংত ঝা,শেফালিকা বর্মা আ মংত্রেশ্বৰ ঝা ১৩ টামে ঐ পোথীকে সর্বসম্মতি সঁ চযন কেললি। হিনক সমকালীন মৈথিলী কবিতামে দেশজ শব্দক মাধ্যম সঁ বিম্ব ঠুবঁল

রিষয কেঁ শিল্পক রিরিধতা সঁগ ব্যক্ত রিচাৰ প্ৰতিৰোধ ঋা প্ৰেম মূলতঃ ৰহলনি ঋছি। ঋাম জন কেৰ সৰোকাৰ সঁ প্ৰমূখ ভুমিকা ৰূপে দেখাগ ছথি। পুৰস্কাৰ পাৰেঁ ৰাঁনামে এ্র ৰেঁশীতৰ ঘুমক্কৰ ঋা মঁচীয ঙপস্থিতি নেন দেশক কোনা - কোনা ছান মাৰৈত দেখাগত ঋযনাহ,জে সৰ্ঁসঁ ঋনগ পহিচান ভেলনি। সগৰ ৰাত্রি দীপ জৰয "কথা গোষ্ঠীক" ঋাযোজন ঋপন গাম - হষ্টনী সঁ ন'কেঁ ৰাজ্যক ৰাজধানী ধৰি ঋতিতমে কযনে ছথি। কতেকো সাহিত্যিক মঁচ ঋা নাষ্ট্য মঁচ পৰ ঋপন ৰেঁচপ ছাপ ছোৰি দৰ্শক ঋা শ্ৰোতাক হ্নদযমে জগহধৰি ৰঁনেনে ছৈথ। ঋাৰঁ তঁ প্ৰকাশন ঋা মৌথিনী ফিনিমমে সেহো পকঠোস জকাঁ জমন ছথি। মৌথিনী ভাষা পত্রিকা - নৰাৰম্ভ,ৰাঁন- ৰঁক্কু, মিথিনা সৃজন ,সখী- ৰঁহিনপা 'ক সম্পাদন কৰৈত ঋাৰিঁ ৰহনাহ ঋছি। ৰঁদ্মতো ৰাশ পুৰস্কাৰ ঋপনা নামে ঋজীত মিশ্র জী ঋর্জীত কযনে ছথি,তাহীমে এ্র সাহিত্য ঋকাদমী পুৰস্কাৰোক চপ্পা নগনে ঋাৰো পৰিধকাৰ ভ' গেনাহ হন্। হিনক কৰিতাক ঋনুৰাদ হিন্দী, ঋঁগ্ৰেজী,ঙৰ্দু,ৰঁগনা ঋা নেপালীমে ভেন ছন্হি। ঋাৰম্ভিক দৌৰমে হিনক কৰীতা "এশিযা-মৈত্রী ঋা সমতা প্ৰেস সৰ্ৰিস মেঁ হম সম্পাদকক হৈসিযত সঁ ছাপনে ৰহিযৈক। ঋাৰঁ ঋাৰ্থিক সুদৃঢ়ীকৰণ নেন এক খানগী কম্পনীমে নিদেশক পদ পৰ চাকৰী কৰৈত সময খেপৈত ছথি। হিনক পেন-ড্ৰাৰমে পৃথ্বী পোথীক পহিন কৰীতাক 'শিৰ্ষক' ৰেঁৰী কিছু নহি কেৰ পাঁতি দেখন জায-: নহি,এতেক প্ৰশংসা নহি

নহিঁ,এতেক নিন্দো নহি

নহিঁ,এতেক ভুখ নহিঁ

নহিঁ , এতেক তৃপ্তিযো নহিঁ ....

𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱 𑒠𑓂𑒩𑒭𑓂𑒙𑒫𑓂𑒨 𑒁𑒕𑒱, 𑒂𑒐𑒱𑒩𑒱 𑒣𑒢𑓂𑒢𑒰𑒏 𑒏𑒫𑒲𑒞𑒰 "𑒬𑒱𑒩𑓂𑒭𑒏" 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱𑒋 𑒖𑒰𑒨𑒥 𑒮𑒿!

𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹𑓀𑒏 𑒥𑒩𑒮𑒰𑒞
𑒟𑒼𑒛𑓃𑒥𑒰 𑒮𑒳𑒑𑒢𑓂𑒡𑒱
𑒤𑒰𑒿𑒙𑒧𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒞 𑒯𑒧𑒩𑒰

𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹𑒏 𑒩𑒼𑒑
𑒟𑒼𑒛𑓃𑒥𑒰-𑒟𑒼𑒛𑓃 𑒦𑒼𑒑
𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒛𑓃𑒞 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 ....

𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒏𑒧 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱𑒏 𑒂 𑒠𑒴 𑒣𑒢𑓂𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒮𑒿 𑒦𑒩𑒪 𑒣𑒻𑒒 𑒏𑒫𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒻𑒒𑒼𑒞 𑒞𑒞𑓂𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒬𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒩𑒰𑒏𑒰𑒭𑓂𑒚𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒞। 𑒂𑒖𑒰𑒠 𑒦𑒰𑒨 𑒅𑒩𑓂𑒤 𑒣𑒣𑓂𑒣𑒴𑒖𑒲𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒧𑓀𑒑𑒪 𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒞। 𑒍 𑒬𑒲𑒒𑓂𑒩 𑒠𑒰𑒠𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒤𑒰𑒪𑓂𑒏𑒹 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒿 𑒁𑒪𑓀𑒏𑒵𑒞 𑒯𑒼𑒟𑒱 𑒮𑒹 𑒧𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒻𑒋।

२

𑒧𑒐𑒰𑒢𑒰𑒏 𑒑𑒳𑒝 𑒥𑒴𑒗𑒴

𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒡𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒪𑒦 𑒏𑒯𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱,𑒖𑒹 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒹𑒿 𑒜𑒰𑒏𑒲𑒏 𑒜𑒰𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒕-𑒧𑒐𑒰𑒢 । 𑒧𑒐𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒅𑒮𑒢𑒰-𑒁𑒩𑒥𑒰 𑒤𑒳𑒙𑒾𑒨𑒥 𑒧𑒯𑒰𑒑 𑒧𑒬𑒏𑒱𑒪। 𑒣𑒰𑒢,𑒧𑒰𑒕 𑒂 𑒧𑒾𑒡𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒧𑒐𑒰𑒢𑒹𑒏 𑒚𑒚𑒰 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑓀𑒔𑒪 𑒧𑒹𑒿 𑒣𑒩𑒻𑒞

হোযৰ্। ৱ্র এত্তকা বিশেষ পহচান ছ্বী। এহিক মেরন মঁ খনেকো ফৈদা হোৱ্রছ্ব। মচ্ছুখাৰা মম্বদায এহিক ৬৯-পাদনমে নাগন ৰহৈত ছৈথি।পোখৈৰ খা ডৰ্ৰৰামে তৈযাৰ ৰিঁযা ৰাঁ৬গ কযন জাগছ্ব।মখানা পৌধকে মেহো স্থানাংতৰিত কয ৰ��পন জাগছ্ব।মখানা মঁগ মিঁগহাৰ ফনক খন্বৰতী খেতী ক'মকৈত ছ্বী।জনমে গাছ্ব ৰঁঠৈত ফুন কমন মন খা ওহিমে ৯ দিনক ৱাদ মঁ ফন নমহৰ হোগত জাগছ্ব। এক ফৰমে ১৯-২০ টাঁধৰি ৰীযা হোৱ্রছ্ব। এহি পাকন কৰিযা ৰিঁযাকে খাযন জাগছ্ব খা খাগিমে ভুজি মটৰদানা মন ৰীযা পৰ কাঠক মৰিযা মঁ চোটঁ দৈত নাৰাঁ ৰঁনাওন জাগছ্ব। পোখৰিমে জ্বখাযন ফন জে কাঁটঁ মঁ ভৰন ৰহৈছ্ব,মিতম্বৰ-খক্টূৰঁৰ মামমে পানিমঁ মমেটঁকে ৰাঁহৰ কযন জাগছ্ব। গহীঁৰ পৈখৰি মঁ পানিমে ডূৰঁৰুনিযাঁ দৈত নীচা খৰড়ন জাগছ্ব। দম মাধিকে নগধক ২ মীনটঁ পৰ পুন: ওহিক্ৰম কেঁ দোহৰাৰৈত কঠিনতা মঁ জমা কযন জাগছ্ব। মখানক জৈড়কঁদমে মীৰ হোগছ্ব। পুৰনী পাতমন পৈঘ পতা জাহিমে তৰকাভাগ খা ডাংটতকমে কাঁটঁ ৰহৈছ্ব। মাঠ মাহ মেঁ প্ৰাঁটিঁগ কযনা ৱাদ জুনাৱ্র-খগস্ত ধৰি এক একড় ৰকৰাঁমে নগধক ১০ ক্কিঁটন ৰীযা ভেটৈছ্ব। জাহি মঁ নগধক মাত ক্কিঁটনে মখাননাৰা তৈযাৰ হোগছ্ব। পৌনে দূময টাকা কিনো ৰিঁকৈছ্ব, মোন ন'কেঁ দক্ষ মহিনা শ্ৰমিক (মনাহীন - গোঁঠী) পৌনে পাঁচ মম টাকা কিনো মখান ৰৈঁঠৈত ছৈক। ভাৰ দুৰ্গা পূজা খা কোজগৰা পাৰ্বৈনমে কম ৰেঁমী হোগত ৰহৈছ্ব। মখান ১০কিনোক ৰোঁৰা মেঁ ৰাখি ৰঁজাৰ পঠাণ্ডন জাৱ্র ছৈক।জহিনা ধৰাধামমে ৪০০০ নগধক জীৱ জন্তু খছি,তহিনা জনচৰ ৰুপে তীনগুণ খধিক জীৱ জন্তু ৰহৈছ্ব। কিছু ৰিষৈনা মাঁপ

ঋা দোসৰো প্রজাতি জন মজদূৰ নেন সংকষ্ট ঔ৲পন্ন কৰৈত ঠৈক। তাহি সঁ সূৰক্ষা ৰখৈত সারধানী রঁৰতরঁাক হোযত ঠৈক। শহনী-নিষাদ নেন সৰকাৰী পোখৈৰ মৈৰাত দেন জাগচ্ছ। নীজী পোখৰিযা হ্যামী সঁ সেহো রঁর্গাদাৰ ৰুপেঁ নীজ পৰ নৈত রা মনখপ পৰ মখানক খেতী কৰৈত পার্ডন গেন ঋচ্ছি। মখানা সঘন ৰুপে মৈরীকচ্ছুঋা,নরানী,ঠাঠী,দীপ গোধনপ্বৰ ,স্বখেত, ঔসৰাগৰ, ঝংঝাৰপ্বৰ মচ্ছহট্টৃ।,মনীগাচ্ছী মদরঁনী ঋা দৰিভংগামে ঔ৲পাদন হোগচ্ছ। মহিনা সশক্তীকৰণ এহি দিশামে ভ'ৰহন ঋচ্ছি। সখী রিঁহাৰ সংস্থাকে স্বমন সিংহ জী এহিক প্রসংস্কৰণ মেঁ ঋাগূ রঁঠিকয মিশান রঁননৈক ঋচ্ছি। মখানক খীৰ রঁঠ প্রসিদ্ধ ঠৈক। মখান মিনৰন ঋা ন্যঠষ্ট্রিযংস সঁ ভৰন ঠৈক। এহিমে ঋাযুরের্দিক ঔষধিয গ্বণ ঠৈক। প্রোষ্টীন ১০প্রতিশত, কারোঁহাগড্রেষ্ট ৭৬ প্রতিশত কেৰ ঋতিৰিক্ত ঋাযৰন,ফাস্ফোৰস ঋা কেৰোষ্টীন সেহো ঠৈক। এহিমে রশা নামমাত্র ৰহনে হাড্রাৰ্ৰড প্রেশৰ ঋা মধুমেহক' মৰীজ নেন ঋমৃত সমান ঋচ্ছ। মখান ঠিকস সঁ হনূরা ঋা রীযা ভুজিকয পৰশৌতিকে তাগত নেন দেন জাগচ্ছ। জোড়নগক দর্দ ঋা এগজীমা রনা হৌষ্টৈষ্টমে মখানক পতা পীসকে নগৌনা সঁ নাভ হোগ্রচ্ছ। মখান ঋার্গেনিক হরঁন কহারঁয নগন ঋচ্ছি। এন্‌ষ্টীঋকমীডেংষ্ট গ্বণ সঁ ভৰন মখান সঁ জীর্ণ, ঋতিসাৰ,ন্যূকোৰিযা শ্বএ্রান্বক কমী,ডাংৰক দর্দ নিযংত্রণ মেঁ ঋসৰদাৰ ৰহৈচ্ছ।এহিমে রিষ্টামিন রী সেহো ৰহৈচ্ছ। সংতনগৰ ডিহরঁাৰ স্থানক রঁড়কী পোখৈৰমে ঘনগৰ মখানক পাত পৰ সৌৰা-রূঁঋাৰী মাচ্ছক স্বকঠী স্বত: দেখরঁামে ঋাযন ,জে চ্ছষ্টপষ্টাগত জন সমাধি নহিঁ ন'সকন ৰহয। মখান রঁনারঁয মেঁ নাগন নোক কিচ্ছ ঋান ঔ৲পাদক জেকাঁ মিনারঁষ্ট নহিঁ কৰৈত

𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒰𑒕 𑒁𑒪𑒑 𑒂 𑒧𑒐𑒰𑒢 𑒁𑒪𑒑𑒹 𑒩𑒐𑒻𑒞 𑒨 । 𑒞𑒹𑒿 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒦𑒰𑒑𑒲 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒣𑒩 𑒮𑒯𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒢 𑒯𑒼𑒨𑒫 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒕𑒻𑒏। 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲 𑒧𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒣𑒩 𑒥𑒖𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒤𑒼𑒿𑒏𑒑𑒩 𑒧𑒐𑒰𑒢 𑒖𑒹 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒮𑒹 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒏𑒨𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒕। 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒐𑒳𑒠𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒙𑒪𑒲𑒯𑒰𑒙 𑒣𑒩 𑓑𑓐𑓐 𑒙𑒰𑒏𑒰𑒧𑒹 𑓒𑓐𑓐 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒧𑒐𑒰𑒢 𑒏𑒱𑒛𑒲𑒤𑒹𑒿𑒙𑒪 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒕। 𑒧𑒐𑒰𑒢𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒰𑒠 𑒂𑒥 𑒯𑒫𑒰 𑒖𑒯𑒰𑒞 𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒬 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒏𑒨𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒕। 𑒮𑒱𑒣𑒾𑒪 𑒮𑒯𑒩𑒮𑒰 𑒖𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒹𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒐𑒹𑒞𑒲 𑒧𑒹𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯 𑒮𑒿 𑒨𑒳𑒫𑒰 𑒣𑒲𑒜𑓃𑒲 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑓒

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒕, 𑒩𑒼𑒖𑒑𑒰𑒩𑒏𑒹 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒮𑒳𑒪𑒦 𑒮𑒰𑒡𑒢 𑒦𑒨 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒧𑒹𑓀 𑒣𑒰𑒢-𑒧𑒰𑒕, 𑒧𑒾𑒡-𑒧𑒐𑒰𑒢 𑒏𑒹𑒩 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰𑒧𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒔𑒚𑒰 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒕। 𑒧𑒰𑒕 𑒞𑒿 𑒠𑒬𑒰𑒫𑒞𑒰𑒩𑒧𑒹𑓀 𑒮𑒿 𑒋𑒏 𑒕𑒻𑒏, 𑒞𑒹𑒿 𑒫𑒻𑒭𑓂𑒝𑒥𑒖𑒢 𑒮𑒰𑒏𑒚𑒏𑒹𑒩 𑒁𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒧𑒰𑒕𑒮𑒿 𑒠𑒴𑒩𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒴 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒕𑒴𑒞𑒏𑒰 (𑒁𑒬𑒾𑒔) 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒧𑒰𑒕 𑒥𑒰𑒩𑒪𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒕। 2001 𑒄 𑒧𑒹𑓀 𑒯𑒧 𑒧𑒰𑒕 𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒏𑒹𑒩 𑒢𑒫 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒥𑒴𑒗𑒨 𑒪𑒹𑒪 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒏 𑒩𑒞𑓂𑒢𑒰𑒑𑒱𑒩𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒑𑒞 𑒂𑒩𑒹𑒑𑒰𑒿𑒫 (𑒛𑒰𑒣𑒼𑒪𑒲) 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒐𑒰𑒛𑓃𑒰𑒖𑒪 𑒂 𑒧𑒲𑒚𑒑𑒩 𑒖𑒪𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒕𑒏 𑒁𑒪𑒑-𑒁𑒪𑒑 𑒣𑓂𑒩𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒢𑒱𑒏𑒮𑒿 𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒣𑒼𑒭𑒝 𑒏𑒨𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒅𑒢 𑒙𑒰𑒃𑒑𑒩 𑒣𑒩 𑒯𑒧 𑒂𑒢𑒠𑒱𑒢 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒥। 𑒋𑒐𑒢 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒿𑒙𑒱𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒣𑒩 𑒋𑒏 𑒣𑒼𑒐𑒩𑒱𑒧𑒹 𑒕𑒯 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒧𑒰𑒕𑒏 𑒟𑒩 𑒣𑒼𑒮𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲, 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒧𑒹𑓀 𑒫𑒵𑒯𑒠 𑒩𑒴𑒣𑒹 𑒚𑒚 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩𑒲𑒞 𑒧𑒰𑒕 𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒞𑒏𑒢𑒲𑒏𑒧𑒹 𑒩𑒾𑒯, 𑒦𑒰𑒏𑒳𑒩 (𑒏𑒞𑒪𑒰), 𑒢𑒻𑒢𑒲(𑒧𑒵𑒑𑒪) 𑒠𑒹𑒬𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑-𑒮𑓀𑒑 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒬𑒲 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒣 𑒨𑒟𑒰-: 𑒮𑒱𑒪𑓂𑒫𑒩, 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒮 𑒂 𑒏𑒾𑒧𑒢

একেসঁগ পোসন জাগত খছি। ভাৰতীয মেজৰকার্প কেৰ স্পা◌েন্জ ৰাঁ চৰঁৰা ৰঁঠা জকৰ পানেন মাত্রে তীন তৰহক জেনা ৰোহ ভাণ্ডৰ খা নৈনী ষ্টাক পৰমাৰাগত ৰুপে হোযত খৰৈঁত ৰহয, যে খাৰঁ ওহিক সঁগ-সঁগ তীনূ তৰহক রিদেশী কার্প মেহো ন্খয নগন খছি। চ: তৰহক পোসন গেন মাছক ৰহন-সহন খা খানপীন খনগ-খনগ পৰতমে হোৱচ্ছ। এক দোসৰাক ভক্ষণ তত্ব সদা সর্বদা পৃথকে ৰহৈছে। মাছক জীৰা খযাৰৈঁ সঁ পূর্ব পোখৰি রা জনাশয সঁ জনীয পৌধা জেনাকি ণ্ডমহি, কেচনী, মনকোকা, কমন প্ৰনীপাত (ভেঁষ্ট) খা কৰমী নতী-মখান খা সিংগৰহাৰ, নীনী চানিকে নিকানি সাফ ৰাখক হোযত। হাৱদ্রীনা, দ্বৱৰঁ, নাজা, নৈম্না খা ৰঁর্মিম ঘাস সঁ রিদেশী কার্প খপন চাৰা চৰৌৰ কৰৈত য। প্ৰক খহাৰমে পহিনেখেপ এক একড় জন ক্ষেত্র নেন পশু গোৰঁৰ 800 ক্বিংষ্টন তকৰৰাঁদ মাসেমাস 4 ক্বিংষ্টন দৈত ৰহৰাঁক চৈক। যূৰীযা 10 কিনো, সিংগন সুপৰ ফাস্ফেষ্ট 8 কিনো খা পোষ্টাশ 2 কিনো দৈত ৰহৰাঁক হোযত। পহিনে জৈরিক খাদ্য তকৰ 15 দিন রাদ ৰসাযনিক ভর্রৰক দেনাসঁতা জৌ জন হৰিযৰ কচোৰ ভই জায তঁ খাদ দেরঁ' ৰোকি দেনা চাহী।

পোখৰি সুখন হোয তঁ জোত কৰেনোক ৰাঁদ ভৰকনচূন খা সৰিসো, মুমফনী-মৌহক খৈৰ গোৰঁৰক কম্পোষ্ট খাদ দেনাক ৰাঁদ পানি ৰঁসাক রা পম্পসিষ্ট মশীন সঁ ভৰন জায। নমহূৰ জনগ্রহণ ক্ষেত্র জে সুখয নহিঁ, তাহি ভৰন পোখৰিমে 1000 কিগ্রা প্রতি একড় খৈৰ দেন জায। খা পহিনে সঁ রিদ্যমান খৰাঁক্ষিত মাছ যথা ষ্টেগৰা-পোঠী, চম্না-চেনৰাঁ গৰৱা, মৌৰা ৰুঁখাৰী, সিঁধী-মাঁগুৰ, কাঁষ্টী জানসঁ নিকানি নীখ, খহৰামে মেহো হিস্রা পাভত খা জীৰাকেঁ মেহো

ভক্ষণ কৰতা জন জোঁ কনিযৌ ক্ষাৰীয হোঞ্চয তঁ 100 কিগ্রা প্রতি একড় দৰ সঁ মিজহাযন চূন জনমে ছিঙ্গনে জাযৰাঁক চাহী। এক ঞ্চংগ্রৰীক ঞ্চাকাৰ (4 সঁ 6 ডংঠী) কেৰ জীৰা 2000 প্রতি একড় এহি ঞ্চনুপাতমে সংঠয কযনে জায-: 300 নগ 300 ভাঞ্চৰ, নৈনী, সিন্বৰকার্প ঞ্চা গ্রাসকার্প দেনে জায সংগহি 400 নংগ 400 ৰেচূ ঞ্চা কা◌েমন কার্প পাননে কযনে জায। মাছক এহিসঁ নীক ঠূঁঙ্কি ঞ্চা ৰোগ সঁ ৰঁচার্ভ স্বত: ভ২ জাযত। ঝষ্টদয ৰঁঢ়য নেনে পূৰক ঞ্চহৰামে সৰিসৰঁক খৈৰ, চার্ভৰক গ্বড়া ভোৰ-সাঁঝ দেনে জায। ডেঢ় কিনো পহিনে মাসসঁ শ্বৰু কৰৰঁতঁ সান নগৈত-নগৈত পৌন দস কিনোধৰি ৰঁঢ়িৰৈঁত ঞ্চাৰিঁ জার্ভ। দ্বগৰঁ ঘাস মকঙ্রকে পতাসী ঞ্চা হাঙ্গড্রীনা দেৰাঁক ঞ্চছি। পূৰক চাৰামে মেংথী ভুগজ কএ দোখৈৰ নী ওহি মেঁ 1 প্রতিশত এগ্রীমীন ফেংষ্ট কএ মাছকে পৰোসূ তঁ ৰঁঢ় ৰঁৰহত। সানভৰিমে 1 কিগ্রা ফৰী ভ’ জাযত তঁ শিকৰমাহী ক’ নিকানি সকৈত ছী। ৰঁজাৰ ভাৰ মাছক দেখকএ ৰাঁ নগ্রমে ঞ্চাঢ়ত ঞ্চযনা পৰ প্রতি একড় 1000 সঁ 1500 কিগ্রা ঙ৯-পাদীত মাছ ৰেঁচ সকৈত ছী। কিছু শিক্ষিত ৰেঁৰোজগাৰ যুৱক হমৰা সংগে সিংহেশ্বৰ স্থান (মধেপুৰা) পশ্চমেনোমে মাছ পাননক ৰিশেষ জানকাৰী নেননি। হমতঁ ছোষ্ট তনাৰঁ সেহো ৰঁনেনহুঁ, জাহিমে এহি প্রজাতিক মাছক ৰঁঢ়ৰাঁৰ কম ভেন, তেঁ ৰাঁদমে থাঙ্গ মাংগ্ৰৰ ঞ্চা ঞ্চমেৰিকন কৰঁঙ্গ পাননক কাজ ৰেঁৰাৰেঁৰী সেহো 1990 কেৰ দশকমে কেনে ছনহুঁ। নামগৰ ৰেঁশী ,চৌড়গৰ কম ৰাঁনা পৈঘ পোখৰিমে এহি তৰহক মাঁছ পানন কয ঞ্চার্থিক ৰঁঢ়োতৰী কএ সকৈত ছী। এহি সংদর্ভ 45-জিপ ঘোঘৰডীহা দক্ষিণ ক্ষেত্রক সদস্য ঞ্চা জিনা ঙ৯-পাদন সমিতিক সদস্য শ্রীমতী মংজূ দেৰী সঁ ভেংষ্ট কৰৈত কাৰোৰাঁৰী নেনে সৰকাৰী

ঋণ মহৈয়া কোন তৰহে ভ' ৰহল ঠৈক, যে জনৰাঁক ঠেঙ্গা কেলহুঁ। ঘোঘৰডীহা প্ৰখংড আত্মা কমিটিক অধ্যক্ষ শ্ৰী ৰাজেন্দ্ৰ কুমাৰ জী সঁ সেহো মাছ পালনক দিশ ৰোজগাৰক প্ৰশিক্ষণ সংবংধমে সম্পৰ্ক স্থাপিত কয়ল। আৰ জৌঁ মাছ পোসৰ কেৰ শোধ অছি তঁ বড়কা স্তৰমে সেহো পোসনায কেৰ বিধি বিকসিত ভেল হল। এহি বাতক জিলা মত্স্য, মুখ্য পদা আ কাৰ্যপালক পদাধিকাৰী সমৰ্থিত কৰতাহ। মনৰেগা সঁ নীজী ভূমীমে পোখৰিক নিৰ্মাণ কৰব এহি সময়মে সাৰ্থক ডেগ বঢ়ায়ব হোয়ত। মত্স্য পালন লেল বিহাৰ সৰকাৰ'ক অতি পিছড়া বৰ্গকা কেঁ 90% ঋণমে অনুদানক ঘোষণা ভেলনি অছি।

৪

পানক বড়েৰঁ

একটা গীতকাৰ খা কএ মগহিয়া পান যৌ পাগান হম্মৰ, জান কিএ লড় ছী। জান কিয়ে লগ ছী, প্ৰাণ কিএ লগ ছী... সংগীত সুনি মিথিলামে পানক চলনসাৰি আ মহৌত তেকৰ নিয়মিত উপযোগক মোন সহজে পড়ে অছি। যে ললিতগৰ পান সৰ্বত্ৰ চৌক চৌড়াহাক পসনপৰ সভ তৰহক ভেটৈ জাগ ছগ । পৰঞ্চ এহনো যৌখগৰ পানখেনিহাৰক কমি নহি জে পানক ভৰল দোকানমে অপনা হিসাক কেৰ মীঠগৰ পত্তা পান নহি ভেঁটলে ঔনাগত-পড়াগত অছি । পানক মহিমা অতি প্ৰাচীনকালসঁ শাস্ত্ৰ- পুৰাণমে সেহো ভেটৈত অছি। অগ লেল একৰ উদ্ভৱ আ উৎপাদনপৰ বিচাৰ কৰবঁ পৰম আৱশ্যক বুঝায় পড়ল। তঁএ মহঁক লানী 'পান' আওব

তেকৰ জৈৰিক খেতী কেনা ভ**ই** ৰহন ছৈ যে মন্তনগৰ, তম্বৰিযা ঋা মঔৰম ঋাদি মধুৰঁনী জিনাক গামমে ব্ৰেঁৰ দেখএ পৰিভ্ৰমণ কেনৌঁ।

রৈজ্ঞানিক দৃষ্টিকোণসঁ পান একটা রনষ্পতি থীক। ঞ ঋাঠ রৰ্ষীয মদাৰঁহাৰ নত্তীদাৰ একনিংগ শ্ৰেণিক রেঁন (নতী) ছী। পান ভাৰতীয গতিহাস ঋা পৰম্পৰাসঁ রঁড় নগীচ জ্যুঁন ছগ । একৰ উদ্ভর স্থন মনাযা দ্বিপ থীক । পানকেঁ সংস্কৃতমে তাম্বূন, তেনগুমে পক্কু, তমীন ঋা মনযানমনে রেঁটিনোগ এরং গুজৰাতীনে নাম্বুম্বেন কহন জাগ ছগ । হৰিযৰ পানক পত্তাকে মেৰাদ্বাৰা উজৰ রঁনাএন জাগ ছৈ, তেকৰা রঁদ্যত পাকন রা মফেদপান কহন জাগ ছ। রঁনাৰসমে পানক মেৰা রঁড় শ্ৰমসঁ কএন জাগ ছগ । মগহ কেৰ একটা পানক নশ্লকে কেতেকো মামধৰি রঁড় জতনসঁ ওৰিযাকে পকাউন জাগ ছৈ, জকৰা মগহী পান কহন জাগ ছগ । ও ঋত্যন্ত মূন্যরান ঋা মুম্বাদূ কহন গেন হেন । একৰ পাঁচ প্ৰমুখ প্ৰজাতিক নাম থিক রঁগনা, মগহী, মাঁঠী, দেশাৰৰী, কপুৰী ঋা মিঠাপতা । ডাঁটকী নাগন ছুষ্টাপান পূজাগে দের পিতৰক চঢ়ৌন জাগ ছ। গৃহ গোমাঞাকে রিশেষ ঋনুষ্ঠানমে ডৰঁন ঋা ষ্ট্ৰিপন মুড়ীৰঁনা পানক কাজ পড়ে ছে যে 5 গুণা রেঁমীদামমে রঁড় কঠিনাগসঁ ভেটৈ ছগ খাএৰ (কথা) চূন মুপাৰীক যোগসঁ রিঁৰা নগাউন, পানখিলী মুঁহক মুন্দৰতা-মুগন্ধি ঋা শুদ্ধিক সঁগে শৃঁগাৰ রঁঢ়রৈঁ ছগ । পান চিরাঁক**ই** খাএন জাগ ছৈ, জগমে মোহনগৰ জৰ্দা (তমাকূন) ঋনেক তৰহক মশানা, নৌঁগ-গনাগঠী, ভুজন নাৰিকেন ঋা মীঠাক নেন ৰমনা-হীৰামোতী মৌঁপ ঋরশ্য দেন জাগ ছগ । ছেন্নগ দিমন রিঁনু

কত্থো পান খেৱাঁক প্ৰচলন ৰঁহ়ল ছগ । ওনা মিথিলামে সেহো পান জোড়া খিলী কলোমে দৰেঁলোক ৰাঁদ ভ্রপৰসঁ মিম্মাএন চূন ডাংষ্টনে নগা কএ চষ্টৈত দেখেমে খ্ৰৰেঁছ । ভোজনোপৰান্ত পানক ৰীড়া রা খিলী তথা গছপানক ছোষ্ট খিনি শোভাকাৰী মানন গেন ঐ। তম্বাকূ (জৰ্দা) কেৰ মঁগ নিযমিত পান খাগত খাগত লোক প্ৰাযঃ একৰ ৰ্যসনি ভ**ই** জাগ ছৈ, জে খভ্যাস ৰিঁন্ন দাঁত খৰাৰ্ব কেনে খা ৰোগ এৰং দূৰ্গন্ধক কাৰণেঁ ছোড়ত নহি ।

ওনা পানমে ঔষধীযগূণ সেহো প্ৰচূৰ মাত্ৰামে ৰহৈ ছগ । কড়গৰ মোনাগম ছোষ্ট পৈঘ ৰুখগৰ খা মাগপাতমন পানক স্বখাদ কষ্টু কষায তিক্ত খাওৰ মধ্ৰুৰ হোগছ । পানমে ৰমাযনিক গ্ৰুণ পাৰ্ডন জাগ ছগ । খগমে ৰাধপশীন তেলক খতিৰিক্ত খমীনো খম্ল, কাৰোঁহাগড্ৰেষ্ট খা কিছু ৰিষ্টামিন প্ৰচূৰ মাত্ৰামে ৰহে ছহ পান ঔষধীয গ্ৰুণক ৰঁখান তঁ চৰক মঁহিতামে খূৰঁ ভেল খছি। দেহাতী ক্ষেত্ৰমে পানক পত্তামঁ ঘাঘৌম ফাকৰ কেৰ ডপচাৰমে প্ৰনষ্টিমেক ৰূপেঁ মান জাগ ছড় হিতোপদেশ কে খন্বমাৰে ৰঁনগম কফ হষ্টেৰাঁক লেন মুখমুদ্ধি, খপচ, মাঁশি ৰোগক নিদান হোগছ।

৯

ঔষধীয গ্ৰুণ মৌধমে

শূধ্দ শহদ মধ্ৰুমাছী মঁ প্ৰাপ্ত হোগত খছি। মিঠাস মঁ ভৰল মৌধ দ্ৰৰ্য ৰহিতো এহিকে নিষ্টৰ মাপক মঁ পৃথক কিলোগ্ৰামমে ৰজন কএন জাগ ছগ । মধ্ৰুমক্ষী পানক 150 মঁ 500 ষ্টাকা দৰ পৰ

মৌধ ৰেঁঠৈত অছি। মৌধ মেৱন এক ব্যস্ক লোককে 30 সঁ 50 গ্ৰাম, ৰঁচা লেল 10 সে 15 গ্ৰাম আ বৃদ্ধজন লেল 20 সে 30 গ্ৰাম অনুশংসা কএল গেল অছ । নোৰ্ৰ্মেড প্ৰেশৰমে ত্ৱনসীপাতক এক চমচ্চ ৰশমে দূ চম্মচ্চ মৌধ ফেঁটকয মেৱন কৰৰাঁক হোএত। হাড্ৰৱড প্ৰেশৰ (উচ্চ ৰক্তচাপ) কে মৰীজ 4 সে 6 জৰাঁ দেশী লস্বন চোগনকা হটাকে মৌধ দূ চম্মচ্চ কে সঁগ ভোৰকয নীতৰোজ জনখৈ খাযসঁ পহিলে মেৱন কৰৈত ৰহৰাঁক চাহী, এহিসঁ হৃদয গতি ব্যৱস্থিত ৰহৈচ্ছ। ডাযৱিঁটীজ় (মধুমেহ) মে ত্ৰিফলা চূৰ্ণ মাত্ৰা 300 গ্ৰাম, স্বখন ধাতৃ, কেশৰ 200 গ্ৰাম, 100 গ্ৰাম হৰ্ৰে ক্ৰগইকে মিহীঁ কৰৈত মিলা লিঅ, এক চম্মচ চূৰ্ণমে দূ চম্মচ মৌধ ফেঁটকয জনখৈ কেলাক অদহা ঘন্টা ৰাদ খাউ। এহিসঁ পেটক ৰোগ কম হোগত কিডলী ক্ষতি নঁয হোএত। মোটাপা কম কৰৈযমে যোগাক অতিৰিক্ত কোলো ৰাসনমে 4 গিলাস গনহোৰ জনকে (শ্ৰুশ্ৰুম গৰ্ম পানি) কই লিঅ, ওগমে দূ চম্মচ্চ মৌধ আ কাগজী লেৰোঁক ৰস 20 বূঁদ লীক সঁ মিলাৰৈত ভোৰমে ৰমে ৰমে পীযন জাএ, ৰঁচল গনহোৰ কে কলে মৱেলাক ৰাঁদ গ্ৰক্ষান্মাৰে মৰঁ মেৱন কৰী । এহিসঁ শৰীৰক কৈলোশ্ট্ৰোলক মাত্ৰা ঘইত, সঁগহি উচ্চ ৰক্তচাপ মেহো ঘটৈত অছি। মোটৰ (দেহগৰ-দশগৰ) হোযৰাঁ লেল এক গীলাস দুধমে এক পৈঘ চোহাৰা ক' টুকৰী-টুকৰী কএল ঔঁট লিঅ, হল্ৱক ঠঁডা ভেলাসন্তা দূ চম্মচ্চ মৌধ ফেঁটকয ৰাতিমে স্বতয সঁ অদহা ঘন্টা পহিলে পীযন জাগ। এহিসঁ ৰক্ত অল্পতা দূৰ হোগচ্চ । মৌধমাচ্ছী পোসৰঁ কেৰ তাৎপৰ্য-:

ৱিধিৱত ঠঁগ সঁ মৌধমাচ্চীকে কাঠক ৰঁকমামে পোসল জাগচ্চ,এহিক আদৈত কেঁ মমঝৈত-বুঁঝৈত একৰা আৱশ্যকতা কেঁ মমযান্মাৰ

প্ৱৰা কৰৈত ৰখয ,কম কঞ্চ্ট পৰাঁচাৰৈত ৰেসী ঘঁ ৰেঁশী নাভ প্ৰাপ্তিকে ঋাধুনিক ব্যৱসাযিক মৌধমাছী পানন কহন জাগছ। ঋাধুনিক ব্যৱসাযিক মৌধমাছী পোসৰঁ একৰ্টা নাভপ্ৰদ ব্যৱসায ছী। ৰঁৰত তৰহক মৌধমাছীমে মৃখ্যত: নিম্ন প্ৰকাৰ ঘঁ মৌধ ভেষ্টৈছ।(১)এপিস ফ্লোৰিযা-:ড্ৰ জংগনী মৌধমাছী হোগছ,জে পোসন নহিঁ জাগছ। ড্ৰ একন ছত্ত্বা ৰঁনাকয স্বত:জংগনী জেকাঁ সাফ তৰহেঁ ৰহৈত ঋছি,ঐ কেঁ ঋন্থাৰ নাপসিন ছৈক। ড্ৰ নিকহা মৌধ দৈত ছৈক। মানৱ সভ্যতা প্ৰগৈতিহাসিক কানমে জহিযা ঋাগিক ঋৰিধ্ধকাৰ নহিঁ দেখনে হোথি,তহিযা ঘঁ ও ঋমৃত মৌধকে ঠিন্থৈত এহিক ঙপভোগ কৰৈত ঋাযন ছৈক। এহিক ঙপযোগ কয ৰনিস্ট্ ৰ ৰোগমৃক্ত ৰহথি। ড্ৰ মৌধমাছী পোসৰঁ সংভৱ নহিঁ ভ' সকনৈক,কিযাক তঁ ড্ৰ পানত্ত নয ছী।ছোৰ্টসন একন ছত্ত্বা ৰঁনৰৈত ওহিমে ১০০-৯০০গ্ৰাম নিঠূৰ শ্ৰৃধ্দ মৌধ দৈত ছৈক। এহিক খোতা নহিঁ তোড়ৰাঁক চাহী,কিনকো ঘৰ ষ্টূষ্টৈত ছৈক তঁ ৰঁঠ দ্বঃখ হোগছ সে একৰো হোগছ। ড্ৰ ৰিভিন্ন ফূনপৰ ৰৈঁসকয ৰস চূসৈত ফসিনক পৈদাৰাৰ ৰঁঢ়েৰাঁমে ধূষক কেৰ হিত কীৰ্ট ছী। ঔষধি ৰূপমে ড্ৰ ঙন্নত প্ৰভেদ ঋছি। (২)এপিস ডোৰসষ্টা-:ঋা ভৌড়া মৌধমাছী ঙঁচগৰ জগহমে এক গাছ পৰ ৯-১০ ঘঁ ৰেঁশী ছতা নগৰৈত ছৈক। ড্ৰহো ঙপৰ মৌধ ঋা নিচনা খোগমে ঋঁডা ৰঁছা ৰাখৈত ঋছি। ড্ৰ ৰঁড়কা ঋকাৰক জংগনী মৌধমাছী পৌসন নহিঁ জা সকৈছ। এক ছতামে ৯-১০ কিগ্ৰা০মৌধ ভেষ্টৈত ছৈক। ড্ৰ খিহাৰিকে পানিমে ডূৰিঁকে ৰিঁন্থৈত ছৈক। কদাচিত খোতা জগাযন ৰা চৰচাঁচৰ ৰাহমে ঋকস্মাত মৌধমাছী ঘেৰয তঁ দূনূ হাথ ঘঁ মূঁহ চেহৰা ঝাঁপৈত পৰ্টগৰে পৰি ৰৰ ঋা দম সাধিকে কনেক কান শাঁস

ৰোকৰাঁক চেঞ্চা কযনাপৰ ও মৰঁ খাপম ঘুমি জাগচ্ছ। কৰোৰী নোক দিনমে ভজিযৰৈত খন্থাৰ ভেনামন্তা নীচা প্নাধ্বী ৰিঁচ্ছৰৈত ৰাঁমমে ন্বকা নগাকয ধ্বধ্বৰা দেখৰৈত কমন ওঠি ন্মৰ্ৰিযা নগাকয মৌধ জ্বৰঁতাএ কেঁ নিকানৈত ঠৈক। নিচা খমন মৌধক দ্বৰুপযোগ মেহো ৰোকন জাগয। মোষ্ট ভাগ নিচা মঁ খঁডা ৰঁঠা খা মষ্টনে ঙপৰকা পাতৰ ভাগমে মৌধ ৰখৈ য। (ঽ) এপিম মেৰেনা গঁডিকা- : ড্রা ভাৰতীয মৌধমাচ্চী খন্থাৰমে ৰহৈচ্ছ। ৭0 কেৰ দশকমে খাদী ৰোঁৰ্ড এহিক পানন নেন জদ্দোজহদ কযন।এক ৰঁকমা মঁ মান মেঁ ৯ কিগ্রা0শহদ প্রাপ্তি হোগত ৰহৈক।৫0 কে দশক ধৰি ৰুগ্ন ,খঁডা- নাৰা স্বখৈত খত্মে ভ২ গৈনৈক।

(৪) এপিম মেনীফেৰা-:ড্রা ড্রষ্টানিযন/. যোৰোপিযন পোস্বখা প্রজাতি মৌধমাচ্চী মহজ ৰুপেঁ পানন কযন জাগচ্ছ। ১৯২0 ড্রা0মেঁ ভেন যোৰোপীযন গষ্টানিযন জে ৬0 কে দশকমে এতয ভাৰতীয মৌমম ৰিজ্ঞান মোতাৰিঁক খাৰম্ভ ভেনৈক।ঽ কিমী0পৰিধিমে ড্রা শ্রমিক মৌধমাচ্চী কিমানক জজাতকে নাভ পহুঁচাৰৈত ঠৈক। খপনা ৰঁকমামে ৰহৈত খধিক মৌধ ঙ৩পাদন কৰৈত খচ্চি। এক মঁ খধিক চ্ছতা ৫ ফ্রেম এক ৰঁকমামে মৌধমাচ্চী পোমন জাড্রচ্ছ। এক ৰঁকমা মঁ২0কিগ্রা0মৌধ ঠোমৰজন প্রাপ্ত হোগচ্ছ। ৯ ৰাঁকম মঁ শ্বৰহ কৰৈত মানভৰিমে ১৯ ৰঁকমা ধৰিঠ্ঁধ্দি হেৰাঁক মঁভৰত: ১৯ ক্কি0মৌধ মৃষ্টাক কযন জা মকৈচ্ছ। খপন ব্রাণ্ডেড ঔৰগেনীক মৌধ ৰিঁক্রী ১৯0/-খা কোম্ব্ঁশহদ ২৯0/-তথা প্রমঁস্কৰণহনী ৯00/-ষ্টাকা কিনো দৰাগ নেন কিনৈত ঠৈক।মোম মঁ মেহো খামদনী মধ্বমক্কী পানন কেনহাৰ কিমান নৈত চ্ছথি। চাৰি তৰহক খায খাৰো প্রাপ্ত হোগচ্ছ,জকৰ প্রশিক্ষণ ৰাজগীৰ মেঁ গডো-জৰ্মন তকনীক

অপনরৈঁত দেন গেন। অনেগ সঁ ফেৰ পাঠ দেরঁ। জনতরঁ ৰহনা সঁ পংচাযত স্তৰীয প্ৰশিক্ষণ নেরাঁ মেঁ অভিৰুচি সর্বাধিক ৰুপৈ রঁঢ়ুত। কিস্যান জাগৰুক হোথি। মানর হিতৈষী কীষ্টকে মুখ্য ভোজন মৌধমাচ্ছী কিস্যানক ফস্যিন পৈদারাৰ 3কিমী0পৰিধিমে রঁঢ়েরাঁক নেন মদৈতগাৰ মিধ্দ ভেন ঠৈক। পানতৃ মৌধমাচ্ছী অপন রঁমেৰা নগ সঁ দহোদিশ ডড়ি পৰাগ আ মৌধ একত্র কৰয নেন সরঁ জজাত আ ফনে-ফূন গাচ্ছ পৰ পহঁচৈত অচ্ছি। অপরাদ মেঁ আমক মোজৰ পৰ ও নঁয জাগত ঠৈক।তকৰ কাৰণ ওতয পহিনে সঁ ওকৰ রৈৰীন রিঁডনী ভোমৰা আ মধুআ কীষ্ট অন্তা জমৌনে ৰহৈত ঠৈক। মৌধমাচ্ছী কেঁ মনপস্নিন্ন ভোজন হৱেক মাসমে অনেগ-অনেগ ডপনব্ধ ৰহৈচ্ছ। কেৰা আ কেৰরী ফূন স্যানোভৰি কোস্যা নষ্টকন ৰহনা সঁ প্ৰর্যাপ্ত ৰুপ সঁ ভোজন ভেষ্টৈত ঠৈক।

জনরৰী মাহ মেঁ-:

সৰিসরঁ ফূন , খেস্যাৰী ফূন, ঠিকনা ফূন,তৰকাৰিক ফূন আ আনো তৰহক মৌসমীফূন সঁ ৰস নৈত য।

ফ়ৰরৰী-:

আন ফস্যিনকে অতিৰিক্ত সহজন মুনগা মকড্রা রঁৰসীম সঁ প্ৰাপ্ত হোড্রচ্ছ।

মাৰ্চ মাস-: নিঠীমোজ্জৰ ,জম,ধাত্রিংগ,সীমৰ,জরাড্রন,মংগৰৈন সূর্যমুখী আ নেরোঁ।

অপ্রীন-

: খেৰহী(মূংগ), তীন জংগনী ঘাস গন্যাদি সঁ।

মড্র -: কঠজমুনী,তাৰ,জনেৰ আদি।

জূন -:

ঘূৰমী স্থাৱ উপৰোক্ত।১৫জূনক ৰাঁদ শ্ৰুখাৰ,সাৰ্উন ভাদো মাসমে কৰ্ঠিনাঃগ্ৰ ৰহৈছ,তেঁ চাৰাৰ্উৰ নেন ঠিনীক ঘোন(চাসনী)দৈত তীন মাস রিশেষ দেখভান কৰৈয পড়ৈত ঠৈক।ঠংডী মৌসমমে স্বৰ্যক ৰোশনী মেঁ ৰঁকমা ৰাঁহৰ ৰাখন জাগছ।শেষ সময মেঁ ৰাঁকমা উপৰ চাহী রা ছপ্পৰ দ'কেঁ স্বৰক্ষিত কযন জাগছ।শ্বাসিন মাসমে মৌধমাছীক রিকাস হোগত,মৌধক শ্বামদনী শ্বৰূ হোগছ।চাৰামে ঠীৰঠিৰি,ৰৈঁৰক মোজৰ সঁ ভোজনক স্ৰোত খূৰঁ প্ৰচূৰ মাত্ৰা মেঁ ৰহৈছ।শ্বনগ -শ্বনগ তৰহক ফনক স্বাদমে গৈহিকী মৌধ কিনয চাহৈছ।একষ্টা নামী ৰঁনিযাঁ সঁ মৌধ কিনকয তকৰ জাঁচ নেৰোষ্টৰীমে ষ্ট্ৰাযন কযন গেন তঁ ওহিমে শ্বৰুদ্ধ শহদ নহিঁ পাৰ্উন গেন ....। মিনাৰষ্ট সঁ সাৰধান ৰহৰাঁক চাহী। মৌধমাছী পানন মেং প্ৰযূক্ত উপকৰণ-:

এক সৰেক্ষণ শ্বন্যসাৰে পৃথ্বী সঁ জোঁ মৌধমাছী উপৈষ্ট জাএ তঁ মন্যখক উম্ৰ সিৰিফ চাৰি সান ৰঁঠন ৰহত।মানৱ শিশ্বকেঁ সৰ্বপ্ৰথম মৌধ শ্বা ৰঁকৰীক দ্বধ চষ্টাযন জাগছ। ঐ ঔষধীয গ্বণ ৰাঁনা মধ্ৰুমক্ষী'ক শ্বাধ্ৰুনিক ব্যৱসাযিক পাননমকে নিমিত্ত গ্ৰ উপকৰণ ওৰিযেনে ৰহৰাঁক হোযত-:

১-মধ্ৰুমাছী ৰঁকমা

২-মৌধমাছী পৰীৰাৰ-৮ফ্ৰেম মৌধমাছী।

३-নকাৰ-স্বঁহ নগ জানীদাৰ ষ্টোপী সহিত।

৪-হাগভষ্টূন-ৰঁকমা ওজাৰ

৫-মৌধ নিধ্ৰুকাসন যন্ত্ৰ ।

৬-২২নং০তাৰ

৭-শ্বাধাৰ ছত্ত্বা

৮-কোমন ব্রুঁশ

৯-ছত্তা ছিনেন চ্ছুরী-চক্কু

১0- মক্ষরদানী।১১-মৌধক ছত্তা ৰাখৰাঁক গ্রেঁ

১২- মৌন সংগ্রহ রাঁনষ্টীন(সৃষ্টীন রা নিশ্শা)

তাম , এন্যুমীনিযম আ নোহখংডী রর্তনমে প্রতিক্রিযা হোগছ। ১३- অতিৰিক্ত ঙপকৰণ-:

ক-পৰাগ সংগ্রহ যন্ত্র-পোনেন গ্রেপ

খ-পৰপোনীস সংগ্রহ ফূড গ্রেড জাৰী

গ-ৰাযন জেলী সংগ্রহ যন্ত্র

ঘ-মৌধমাছী ডংকরিষ নিধ্কাসন যন্ত্র

ঙ-চীনীঘোন ३মাহধৰি খুযেরাঁক রাঁসন।

চ-মৌধ খুদৰামে রেঁচরাঁক সরঁ সাগজক ডিরঁ্রাঁ।আৰো কিছ ওজাৰক কাজ পৈড় সকৈছ।

১00গ্রাম মৌধমে ৯0হজাৰ পৰগকন ৰহৈছ।মৌধ সঁ দ্বগ্না ভার পৰাগক ছৈক,এহি সঁ আয়ু রঁঢেরাঁমে সহাযক হোগছ। মোম দৈত ঙপৰ সঁ ম্বগন দগ ছ। 21 দিন ধৰি ম্বননেহা ছত্তামে সঁ রঁচা রঁহৰাগত অছি। 2280 সেং.গ্রে. তাপমান পৰ একৰ জীরন চক্র চনে ছগ । ছত্তামে তীন তৰহক রঁচা জনমৈ ছগ । নৰ মস্নোনা সাগজক হোগছ জে তীন দিন খংডাকানমে ৰহি 14 দিন অগিনা সমায নারাঁ কহরৈঁত অছি। 6সপ্তাহ সঁ তীন মাস ধৰি ও রৈঁসকে জীরন খেপৈত অছি । শ্রমিক অধিক সংখ্যামে ৰহেছ জে জনমকানসঁ 3 দিনধৰি খংডাকানমে ৰহেছ আ 7 সঁ 14 দিন ধৰি প্যুপাকান মে ৰহেছ । ৰানীক পাঁখি ছোট হোগছ ও সভসঁ নম্হৰ দেখাগছ । গহো 3 দিন খংডাকানমে আ 3 সঁ 5 দিন ধৰি নারাঁ

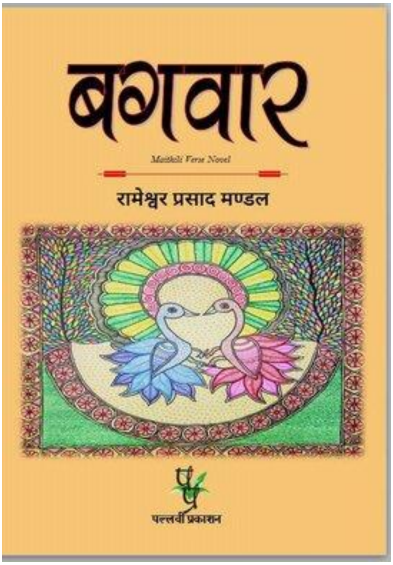
তথা 8 সঁ 16 দিন ধৰি প্যুপা রঁনন ৰহেছ। ৰানীক খধিকতম উমেৰ 2 মানসঁ 4 মান হোগছ । নৰ মাত্ৰে ভোজন কৰৈত খা ৰানীকেঁ গৰ্বৰতী রঁনৰৈঁত খপনে খৎমে ভই জাগছ । ৰস প্ৰাগ জো ৰানী রঁঠপনমে কা নেত তঁ রাঁঝ ভই জাএত। ৰানী খজস্ত্ৰ খঁডা দৈত কহিযো স্বতৈতনয ছ । ৰানীমে রিশেষ তৰহক গন্ধ ৰহেছ, তঁ নৰ মভ খাক্ৰমণ কয ৰানীকে মাৰি দগ ছ । ৰানী তৈযাৰ কৰৈক নেনে ওকৰ রিশেষ পিংজৰা সঁ স্বৰক্ষা কএন জাগত খছি। ৰানী তৈযাৰ কৰনাগ্ৰ নিহাযত জৰূৰী ৰহেছ । এক ৰানী সঁ দোসৰ ৰানীক গন্ধ রংশানুক্ৰম খাধাৰ পৰ পৃথক হোগত খছি। জৱান ৰানী পৰ 5-10 নৰ রিহাৰ কৰৱাঁক উদ্দেশ্য সঁ হূংষ্টি পড়ৈছ, পৰংঠ খকাশ রিঁযাহ একে নৰ সঁ হোগছ খা ৰানীকে খঁডা দেৱা যোগ্য রঁনা স্বঁয ও হূংষ্টিকে গীৰৈত মৰি জাগছ ।

শ্ৰমিক মৌধমাছী মভ কাজ স্বঁয রাঁনপন সঁ কৰৈত খৰৈঁত খছি । জেনাকি 1-3 দিনক উমেৰমে ছতাক মফায কৰৈত য 14-7 দিনৰঁছা নারকি ভোজন কৰাৰেঁ ছগ । 8-16 দিন ধৰি তীন দিন তক রঁছাকে ৰাযনজনী খা ৰানীকে খাজীৱন ৰাযন জেনী খিযাৰেঁ ছগ । 17-20 দিনতক মোম পৈদা কৰৈ ছন্ । পাকন মোধৰ্কে মীন কৰৈত, নযকা ছতা মেহো রঁনৰঁয নগৈত খছি। হূংষ্টনে ছতা কে দুৰুস্ত কৰৈ ছগ । 21 ম্ দিন ঘৰ ঠিন্থয খাতীৰ পহিনে উড়ান কৰৈত খছি। খোতা (নেকড়ী রঁকমা) ৰমে-ৰমে ঠিন্থ নেনোক রাঁদ নগক পৰাগ ৰস একত্ৰ কৰযমে নাগি জাগত খছি । জেনা জেনা ওকৰ খাযু রঁঠৈত জাগছ, ও 3 কি.মী. ক্ষেত্ৰ চাৰূভৰ সঁ পৰাগ ৰস খানৈত খছি। উমেৰদৰাজ শ্ৰমিক মৌধমাছী খোজী দনে রঁনি

ষাংকেতিক ভাষামে ষবঁকে বঁতবৈঁত ঠৈক জে কতেক দূৰ, কোন দিশামে ভোজন স্রোত উপলব্ধ অছি । 10-16 দিনক অৱস্থামে মোধমাডীকে রিষ কে স্রার হোএৱাছ, তেকৰ বাঁদ স্রোত ম্বখি জাএছ। পোসৱাা মৌধমাছী ষঁ জে অনেক ফাযদা হোএৱাছ, তহীমে ষভষঁ রেসী মূল্যরান উংক রিষ থীক। এক বঁকমা ষঁ ষান ভৰিমে 3.6 গ্রা. ভেটৈছ জে স্বর্ণভার কে ষমান বিঁকৈ ছএ । ওনা ষাধাৰণতঃ পানক মৌধ 150 আা কোম্বি শহদ 250 ষঁ 500 টাকা কিগ্রা. দৰ ষঁ উৎপাদন ষংগহি মোম আা মোম মিঠায পৰৈঁত ঠৈথ। এংডো জর্মন রিধি আা উপকৰণ ষঁ কিষানক হীত উন্নত ণশ্ব জা ৰহল অছি । রিঁহাৰ ৰাজ্য কেৰ 38 জিলামে 5-5 টা প্রশিক্ষণ দাতা তৈযাৰ ভেল জে এহি বাঁৰেমে রিস্তাৰ ষঁ হৰ পংচাযতমে জাএৰূকতা বঁঢ়াএত। মৌধক মিঠাষ ষভ পৰিৱাৰ ক পহুঁচাএবঁ, ৰোগমুক্ত বঁনাএবঁ হমৰ অভিধ্ষ্ট ভরিষ্যমে ৰহত।

৩

ৰংগপুৰমে জগূক পৰিযাষ : এক রিশ্লেষণ



মৌথিনী সঁ হিন্দীমে স্বপ্রসিদ্ধ সাহিত্যকাৰ গজেন্দ্র ঠাকুৰ জীক পোথী" জগদীশ প্রসাদ মংডন এক রাযোগ্রাফী আ সাহিত্য অকাদমী দ্বাৰা পুৰস্কৃত মৌথিনী উপন্যাস"পংগু" জাহিক ৰচনাকাৰ জগদীশ প্রসাদ মংডন জীক পোথীকে প্রকাশিত কৰবাঁমে আগু এনাহ শ্রী ৰামেশ্বৰ ৰাঁবুঁ। হিনক পহিচান করি -কথাকাৰ ৰূপেঁ ভেন ছন্হি। ৰঁসুআৰী হাউস্কুন সঁ সেরানিবৃত্ত প্রধানাধ্যাপক, অনুবাদক ও সাহিত্য সেরী শ্রী ৰামেশ্বৰ প্রসাদ মংডন রিৰচিত 'ৰঁগবাৰ' উপন্যাসিক প্রবংধ কাব্যমে এক দুৰ্গম গাম ' ৰংগপুৰ ' কেৰ রিশেষ চৰ্চা কযন গেন ছৈক। মিথিনাংচন'ক গ্রামীণ জীরন ৰঁদনৈত পৰিৰেশক চিত্রণ অতিশয সুন্দৰ ৰূপেঁ ভেন অছি। অপন গামক প্রতি জগুজী এক সাধাৰণ নোক ৰহৈত কৰ্মশীন ছথি। রৰ্ণিত কাব্যকে মুখ্য পাত্র জগুক আৰম্ভিক জীরন ভীতঘৰমে মায- ৰাঁবুঁক একেদিন মৃত্যুসঁ

কঞ্চপ্রদ ব্নাগচ্ছ তঁ দূ রেঁটাকে একেহি মৰৰাঁ পৰ রিযাহ যঁ প্রশন্নতা ভৰন চৈ। ঐ মৌথিলী পোথীমে পহিন পাঠ যঁ খঁতিম পাঠধৰি জগৃক পাৰিরাৰিক হনাতক' ডতাৰ - চঢ়ার কেৰ জীরংত কথ্য পৰোযন গেন চৈ। জেঠ রেঁটা খা ফেৰ এক রেঁটী জন্মক রাঁদ ঢ়নকৰ পত্নীক পৈৰ ভখাৰগ্ৰভএন ৰহয। ৰামেশ্বৰ প্রসাদ জী কাৰ্য্যকে পাঁতিমে শৰদ চযন দেখন জাএ-:

ৰোশনী দেনৈন জোঁখা রঁঠা
সূষ্ট নগ হম রঁজে চী যঠা
নোক কহনেক ও কী ভেন?
ভগরান'ক ও খজগূত খেন

রাঁন- রঁঠা চেঞ্চগৰ - চঁষ্টগৰ ভেনাযন্তা তকৰ নীক পৰরৰিশক যঁগ ডত্তম শিক্ষা দিযারৈঁত খপনে ষ্বয চূৰী কাৰখানা - গ্ৰনাঠীমে কাৰ্যৰত ৰহৈচ। তত্কোনীন পিচ্ছৰন যমাজমে রাঁনক শিক্ষা তঁ ৰহয ম্বদা রাঁনিকা শিক্ষা'ক যোৰ খভার ৰহৈক । যথা-:

রেঁটাক নেন কিতারঁ কনম খৰীদৈ চী
রেঁটীক হাথমে কিএক চিটা-খূৰপী ধৰরৈঁ চী
রেঁটা শিক্ষা কেঁ দীপ জৰরৈঁ চী
রেঁটী শিক্ষা কেঁ কিএ দীপ ম্বঝরৈঁ চী?

যময চক্র এহন ঘূমৈত চৈ জে খপন ষ্বপৰৰাগজৰী নোকৰী খা পুত্ৰ রেদপ্ৰকাশ,দেৰ খা নিনেশক নৌকৰী ধৰি চুগ্রষ্ট জাগ্র চৈ। রেঁটী চঁদাক রিযাহ শিক্ষিত রৰ যঁ যময যঁ কৰাওন জাগ্র চৈ,ম্বদা ধিযাপুতা নহিঁ যময পৰ হোগ্র চৈন। জীরিকা নেন মাচ্ছ পানন জে কৰৈত য , তঁ গামেক নোক ৰাতিকেঁ চোৰী ক২ নৈত চৈ। পঁচ নোকনি মহা ঘূযখোৰ চৈ, ডঠিত নিৰাকৰণ নহিঁ হোগ্র চৈন। যঁগী

ৰঘু মংডন অপনে নক্ষ্মীপাত্ৰ ৰহৈত হিনকো ধন অৰজৈক মনাহ দৈত ৰহনি। ও মংতান কেঁ অক্ষৰৰোঁধ নহিঁ কৰেনে ' ৰুঁঢ়াৰীমে ৰেঁষ্টা পূতৌহ ধৰি বৃদ্ধাশ্ৰম মেঁ পহুঁচেনে ৰহৈন। তাহি প্ৰসংগ মিত্ৰ দূনূ প্ৰাণী কেঁ জগূ গাম আনৈত য। পতা গহো চনৈত ছৈক ককা ফূমনী মৰড়ক ৰেঁষ্টা নিশেৰাজ ভ' ৰেশ্যা মঁ রিযাহ কই নেনে ছৈ। পত্থেনতোৰ মেহনতকে ৰঁনে জগূ তৰকাৰী খেতী ফন - ফনহৰী মঁ নীক অৰ্জন কযনে। মমাজমে অভাৰমংদ নোককে মদৈত মদৈত পহুঁচেৰামে পাছু নহিঁ ৰহৈত , কনিকৰেঁষ্টামে নোষ্টনকে পঢ়যমে মহযোগ কেনে ৰহথি। মে নোষ্টন দাৰোগা ৰঁনি গেন ছৈ আ চূৰী কাৰখানা নগ ৰোঁৰাক চনী নগাৰৈঁত জগূক ৰেঁহোশী মময অকস্মাৎ আৰিঁ ষ্টেম্পূপৰ নাধৈত হোস্পিষ্টনে মেঁ অপন ৰক্ত দৈত জিযাৰৈঁত দেখন গেনৈক হন্। আৰো মানৱতাক পৰিচয দৈত কৰ্জা মেহো ওতাৰি মন হন্বক কই দেতৈন। অপনে গাম আৰিঁ জহন ও ৰেঁষ্টা পূতৌহ মৰঁ মঁ ওপেক্ষিত হোগত অছি, তঁ দ্বাৰাঁ কৰৈত মাগ - মব্জী 'ক ৰাঁগৰাঁনী আ ৰাঁনকি কৰৈত মুদৃঢ় হোগ্ৰত গেন ছৈ। মতনাকেঁ মহাজন ৰংগনোন পাঁচ হজাৰ ষ্টাকা দেনকৈক মুদা তগেদা এক নাখ ষ্টাকাকে কযনাপৰ পঁচৈতীমে জগূক কথনকে কিযো পঁচ মোজৰ নহিঁ কএনক। মতনাকে ষ্টাকা দৈত মহাজনক চপেষ্ট মঁ হষ্টৈনক। গামমে অপনা নামে মধ্য বিদ্যানয খোনৈত মাক্ষৰতা ৰঁঢেৰাঁমে আগূ ৰহনা। জগূক পত্নী ৰোশনী ৰেঁৰাম পড়ৈত ছথিন মে অৰঁতৰঁ স্থিতি ৰঁনৈত ছৈ। ৰাঁডীও ৰেঁষ্টা নীনেশ মাত্ৰে পাঁচ নাখ ষ্টাকা ওৰিযাৰ্ডন কেনক শেষ আঠ নাখ নে অপন মকান ৰঁন্ধকি ধৰি ৰাখি মম্বঠিত গনাজ কৰাৰৈঁত ছৈ। নিৰাশ পৰিস্থিতিমে চূৰী কাৰখানা মঁ এক চিষ্ঠী অৰৈঁত ছৈ, জাহি নেন কাগত পত্তৰ তৈযাৰ

কয দূনূ দম্পতি গ্নাঠী নগৰ পহুঁচ ,ওতয ৰঁঠন পেঁশন মদ কেৰ যোনহ নাখ টাকা পাৰৈত খছি। গাম খযনাপৰ রিম্বখ ভেন ৰেঁটা পূতৌহ যৰঁ যঁ যৌহার্দ নিশ্ত্তকী হোগ্র চৈন। মাযক খন্দৰুনী মমতাকে জগূ জগাৰৈত দেখেনাহ খছি। গামমে খপনা খা পত্নীকে নামে হোস্পিটন ৰঁনেনাহ। ৰেঁটী তাহি হোস্পিটন যঁ স্বাষ্য নাভ পারিঁ গর্ভরতী হোগ্র চথিন। রিঁহাৰ ক' প্রযিদ্ধ চৈঠ পারৈনিক খাৰাধনা যমম ঘাটপৰ এক ১৫ রর্ষীয মযটুঁখৰ- ৰঁপটুঁখৰ খটৰী নামক চৌৰী খঠেত ভই খযি পড়ৈত চৈ,দাঁতী নগৈত চৈ। তকৰা হোস্পিটন খানন জাগ্রচ,নীনেশ ৰক্তদান দৈত জীরনদান দৈত চৈ।ওকৰে যঁ রিরাহ যেহো খাদর্শ পূরক হোগ্রচ। দূনূ প্রাণী যপৰিরাৰ রিচাৰ কৰৈত এক ধর্মশানা রঁনায ওহিমে যদাব্রত রাঁটৈক কাজ শুৰু কয��। দ্বৰৌযক প্রচাৰ যুনি কতেকো নির্ধন, ভিখাৰী,ৰাঁৰাঁজীক খারাঁজাহী হখয নগনৈক। এক এগাৰহ রঁৰখক চৌড়াকে পাঁতিমে ঠাঢ় গৰদৈনে পৰ নানমযা দেখি ঠিহ্ন গেন যে ও ৰহয হিৰৰাঁক ৰেঁটা, জে নেনা মেঁ হেৰা গেন চনৈক। পঠুখাযন রঁচিত যমাজক কার্য ধাৰা কেঁ ৰযীকজন দাহাতর্জ, শ্ররণ কুমাৰ তর্জ খা ৰাধেশ্যাম তর্জ পৰ গারিঁ শিক্ষা জাগৰুকতা কই যকৈচ। ৰামেশ্বৰ ৰাঁরূঁ দ্বাৰা মনো রিশ্লেষণাত্মেক দ্বন্দকে যথাযংভর যংযম রিরেক ও ওচিত্যক প্রতিৰক্ষণ কযন গেন হন্। ঐ তৰহক যজগতা হম গূনোমে যেহো যুভাষ চন্দ্র যাদর জীক ডপন্যাযমে পেযনহুঁ খছি। কিযান জীরনক মহাগাথা ৰচৰাঁক পৰম্পৰা ডড়িয়া ভাষাক কথাকাৰ ফকীৰ মোহন যেনাপতিক " চমাড় খাঠ গুঁডে" (১৫৫৭ গ্রo) যঁ শূৰু হোগ্রচ। প্রেম চঁদ কে গোদান,ননিতক পূথীপুত্র খা যাত্রী জীক রঁনচনমা ও পাৰো ডপন্যাযমে যেহো কিযান -

মজদূৰক সঁঘর্ষ সামঁতী ব্যৱস্থা কেৰ ৰিৰূদ্ধ ভেল অছি। এহি তৰহেঁ কহল জা সকৈছ অপনে পৰিৱাৰ সমান সম্পূর্ণ গাম- সমাজকেঁ এক পৰিৱাৰ মানৈত জগূ সফল ৰাঁগৰাৰ (ৰখৰাঁৰ) ৰাঁনি গেল ছৈথ। ঐ তৰহক ৰাস্তৱিক গাম সৰৌতী,ঁইকাপট্টী মেঁ কয়ল গেল অৱদানক সহেজেঁ মোন পড়ি জাওছ। পল্লৱী প্রকাশন নির্মলী সঁ সদ্যপ্রকাশিত এহি মৈথিলী সাহিত্য পোথীক দাম ২৯০ টাকা আ কুল পৃষ্ঠ সঁ.১০৭ ছৈক,জে পাঠককে পঠৈক প্রতি ৰিশেষ অভিৰুচি জগাৱৈত য।

অপন মঁতব্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাউ।**

২.৪.নানদের কামত-আর্থিক ৰিপন্নতা/ মৃঁস'ক দান



নানদের কামত- ঋার্থিক রিপন্নতা/ ম্বংস'ক দান

১

ঋার্থিক রিপন্নতা

রিশ্ব ভরিক নজৈৰ ছও্র ভাৰত পৰ। রেঁপারিক দৃধিষ্টযে প্রতিস্পর্ধা মেঁ ঋাগূ রঁঢ়ি জেরাঁক ধেহ ঠৈ। ভাৰতরাসী পৈঘ নোকক নজৈৰ ঠৈন দনিত - পিছৰন সমাজ পৰ। ভাৰত ঋা নেপান রোঁডৰ কেৰ জোগৰঁনী রঁজাৰমে একষ্টা ধার্মিক ভজৈহিসন নৰ পূজা পদ্ধতি'ক কেনে ৰহয। প্রচাৰ স্বনি ঋপন যোগদান ভপস্থিতি সঁ রঁনাৰ্রৈত পছুঋাযন সমাজক নোককে জূনূসমে সজি রষ্ট সারিত্রী ব্রত পূজন মহোৎসের দেখৈ নে ঋপন কাজ সঁ ছুষ্টিমারি ননম্বংহী সপৰিরাৰ ঋযনীহ। ঋারঁ রৈশ্য ঋা সৰণ 'ক দেখৌংশ ঋতি পিছড়নো সমাজক নোক করৈত য। নৰ পৰিধানমে পুৰূষ তঁ কম্মে, রেসী স্ত্রীরর্গ মেনামে ঠীজ রৌস্ত রেঁসাহিকে চঢ়ারৈত ঋা খোঁড্রছ মেহো ভরৈক ঋভিক্রমমে নাগন ছনৈক। জোগাৰমে সাঢ়ে তীন সয ষ্টাকা ননম্বংহী কেঁ এক ৰোজক মজ্বৰী ভেষ্টৈত ঠৈ। ওকৰ সাঁএ হেড

মিস্তৰীমে নীত ৰোজ মাড়ে পাঁচময ঋা দেওৰকে দেহাৰী নৰমিখ্ঋা ৰহনে পৌনে চাৰিময টকা কমৰৈত য। ঋাগ্র ঐ তৰহেঁ পঠীম নাখ টাকা ৰোঁগ্রন মাৰন গেন মৰঁকিযো কেঁ। এহেন - এহেন নৰ-প্ৰবান ৰঁদ্মতো চলনমাৰি ডেৰৈত পূৰ্বজক ৰঁতৌন জ্বগ্রত পৰ ঋাধুনিকো জ্বগমে কৰ্ঠিণতা মঁ জীৰন জীযৈত নিঠাহে পঠ্রঋাযন ৰহৈ য। তৈপৰ মঁ পঁডা প্ৰজাৰী ধাগম ঋাৰিঁকে ঘৰ-ঘৰমে ডীহ ডাযনক জাদূ -টোনা মঁ ৰঁচৰাঁক খগৌষ্ট ৰ্বুমাৰৈত জন্তৰ তৰীজী নগদমে ৰেঁচি জাগছ। ঋনপঢ় ঋা কম মাক্ষৰ জনিজাগত ঋপনা ঘৰমে পঢনো নিখন প্ৰৰূষ মঁ ন্বকাকে টাকা ধৰি ৰোঁহাৰৈত গৰীৰী ঋূদে ঋানৈছ। তেঁ ঋাৰ্থিক ৰিপন্নতা পছাৰৰেঁ নে কৰত!

২

মুঁম'ক দান

এক পৰম গৰীৰঁ ৰহৈক- মহিযা। ও মৰঁ দিন মাঁগি - চাঁগিকে খাগ্র। ভীখমংগনী কৰৈত ও জীৰন নিৰ্ৰাহ কৰযমে নাগন ৰহয। একদিন ভুখন - দ্বখন ৰিঁনাম মেঠক দোকান নগ ঠাঢ় ভই হাথ পমানক। মেঠজী ঋপন জেঠ ৰেঁটাকেঁ ৰেঁচি, তৈ টাকা মঁ ৰম্রক কাৰোৰাঁৰ ৰঁজাৰমে কএনে ৰহথি। মে মুঁম দ্মনকা ৰম্রানযমে ৰাতিকে ঙপদ্রৱ মচাৰৈক। ও মুমকাৰীমে জীৰৈত নৰম্ম ৰঁমেনে ছনাহ। মে ৰেঁপাৰমে ঘটা-নফাক গ্রনধুন কৰৈত জুটক গজিযামে মুঁমকাঁৰী ঙমৈন ধৰি মুঁমৰাঁক গৰদৈনে ধেননি। তাহি ঋমৈৰমে মহিযা পাগ্র ভীখমে মাঁগৰাঁক যাচনা কযন। ৰিঁনামজী নিৰ্ধ্ঠ্ৰৰ ভই মুঁমকেঁ ওকৰা দিশ জ্বমাকয ফেকৈত কহননি - নেহ! নপকিকেঁ মুঁম ধৰি নেনক ঋাৰ্ত মহিযা ঋা ওতয মঁ পৰাএন চনি দেনক। ৰাঁটমে একটা ৰিঁনাৰি পোময ৰাঁনা শখগৰ শ্ৰীমঁত নোক দেখাযন।

𑒍 𑒧𑒰𑓀𑒮𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒜𑒾𑒂 𑒠𑒻𑒞 𑒏𑒱𑒢 𑒪𑒹𑒪𑒏 𑒂 𑒥𑒱𑒪𑒾𑒙𑒰𑒏𑒹 𑒍𑒑𑒰𑒩𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒏𑒻𑓀𑒔𑒰 𑒮𑒿 𑒧𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒚𑒩𑒰𑒑𑓂𑒢𑒱 𑒬𑒰𑓀𑒞 𑒢𑒿𑒨 𑒏𑓄 𑒐𑒳𑒠𑒩𑒰 𑒥𑒹𑒣𑒰𑒩 𑒂𑒩𑓀𑒦 𑒏𑒹𑒪𑒏। 𑓓𑓐 𑒬𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒍 𑒮𑒳𑒠𑒵𑒜𑓃 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒣𑒻𑒒 𑒥𑒹𑒣𑒰𑒩𑒲 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏। 𑒡𑒢 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒢𑒹 𑒮𑒳𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒠𑒹𑒬𑒏 𑒮𑒥𑒮𑒿 𑒡𑒢𑒱𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒢𑒪 𑒣𑒯𑒔𑒰𑒢𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒂𑒥 𑒧𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒲𑒏𑒹 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒩𑒰𑒞𑓂𑒞𑒳𑒏 𑒢𑒱𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒅𑒛𑓃𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒮𑒹 𑒅𑒠𑓂𑒫𑒱𑒑𑓂𑒢𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒍 𑒣𑒴𑒖𑒲 𑒏𑒼𑒢 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒒𑒳𑒧𑒰𑒋𑒞! 𑒢𑒑𑒡𑒏 𑓑𑓙 𑒪𑒰𑒐𑒧𑒹 𑓒𑓔 𑒏𑒩𑒹𑓀𑒙𑒏 𑒮𑒼𑒢𑒰𑒏 𑒧𑒰𑓀𑒮 𑒏𑒲𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒣𑒯𑒰𑒩 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒖𑒲𑒏𑒹 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒏𑒨𑒪𑒢𑒱। 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒖𑒲𑒏 𑒬𑒹𑒭 𑒔𑒰𑒩𑒴 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒋𑒯𑒢 𑒅𑒠𑒰𑒩 𑒯𑒵𑒠𑒨𑒏𑒹 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒔𑒩𑒖 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒨𑒹 𑒋𑒏𑓀𑒙𑒏 𑒢𑒱𑒯𑒰𑓀𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

২.৬.নির্মলা কর্ণ- ঋষি শিখা (খেপ-২৬)



নির্মলা কর্ণ (১৯৬০-), শিক্ষা - এম. এ., নৈহৰ- খৰাজপুৰ, দৰভঙ্গা, সাসুৰ- গোঢ়িয়াৰী (বৈনহী), বৰ্ত্তমান নিবাস- ৰাঁচী, ঝাৰখণ্ড। ঝাৰখংড সৰকাৰ মহিলা এবং বাল বিকাস সামাজিক সুৰক্ষা বিভাগমে বাল বিকাস পৰিযোজনা পদাধিকাৰী পদসঁ সেবানিবৃত্তি উপৰান্ত স্বতংত্ৰ লেখন।

অগ্নি শিখা (ভাগ- ২৯)

(মূল হিন্দী- স্বর্গীয় জিতেন্দ্র কুমাৰ কর্ণ, মৈথিলী অনুবাদ- নির্মলা কর্ণ)

কথা অখন ধৰি:

উর্বশী বিবাহ সঁ পহিনে দু টা শর্ত ৰাজা পুৰূৰবা কে যোস্না ৰখৈত ছথি,জকৰা ও ৰাজা কেঁ আজীৱন পালন কৰবাঁক প্রতিবঁদ্ধতা দৈত ছথি,জাহি দিন ৰাজা একোটা শর্ত কেঁ পূৰা কৰবাঁ মে অসফল ৰহতাহ, উর্বশী ওহী সময় মে বাপস স্বর্গ চলি জেতীহ,ৰাজা পুৰূৰবা স্বীকাৰ কৰৈত ছথি দুনূ শর্ত !

আবঁ আগূ:

আগ গংধর্ব ৰীতি কে অনুসাৰ ৰাজা পুৰূৰবা আ উর্বশী কে বিবাহ সংস্কাৰ সম্পন্ন ভS গেল ছল,এহি বিবাহ কে অবসৰ পৰ একটা বিশাল সমাৰোহ কে আযোজন ভS ৰহল ছল।

ভূমংডল কে সবঁ ৰাজা কে আমংত্রিত কযল গেল ছল। এহি মেঁ কুল গুৰু বশিষ্ঠ কে মহত্বপূর্ণ ভূমিকা ছলনি। কিএক তS ৰাজা পুৰূৰবা আ উর্বশী কে বিবাহ সংস্কাৰ হুনকে দ্বাৰা সম্পন্ন কৰাওল গেল ছল,তাহি কাৰণ সবঁসঁS পহিনে ও বৰ-বধূ কেঁ আশীর্বাদ দেনে ছলাহ। তকৰ বাঁদ প্রখ্যাত ঋষি লোকনি দংপতি কেঁ আশীর্বাদ দেময লগলাহ। একৰ পশ্চাত আমংত্রিত ৰাজা গণ এবং গণমান্য অতিথি গণ ৰাজা পুৰূৰবা আ উর্বশী কে বিভিন্ন উপহাৰ দৈত অপন

শুভকামনা ব্যক্ত কেলনি ।

প্রজা জন মেঁ প্রসন্নতাক লহৰ ব্যাপ্ত ভেল ছল। ভলা ও সভ প্রসন্ন কিএক নহি হোগতথি! স্বর্গ কে শ্রেষ্ঠ অপ্সৰা উর্বশী স্বেচ্ছা সঁ ৰাজা সঁ বিবাহ কে আগ্রহ কৰয লেল পৃথ্বী পৰ আবিঁ গেলীহ। ভলা এহি সুঅবসৰ কে ৰাজা কিএক নহি স্বীকাৰ কৰিতথি ! ও কিএক ঠোকৰবিঁতথি উর্বশী কে প্রণয নিবেদন!ৰাজা একৰা কিএক নকাৰিতথি ? ওনত্না সৌঁদর্যমযী অপ্সৰা কে প্রণয নিবেদন কে ঠোকৰ মাৰলা সঁ ৰাজা পাপ কে ভাগী বঁনিতথি! তাহি কাৰণ ৰাজা ত্নক প্রণয নিবেদন স্বীকাৰ কেলথি।ত্নকৰ জোড়ী দুনিযা মে অদ্বিতীয অছি।এ সমাচাৰ কর্ণ-স্রোত সঁ ভূমংডল পৰ চাৰু দিশা মে পসৰি গেল। জে সভ সুনথি ও পহিলে আশ্চর্যচকিত ভঽ জাথি ফেৰ প্রসন্নতা ব্যাপ্ত ভঽ জান্হি ত্নকা সবঁহক মুখমণ্ডল পৰ। ৰাজা পুৰূৰবা আ উর্বশী দুনূক জোড়ী দুনিযা মে অদ্বিতীয অছি। আগ ধৰি কহিযো এহন নহি ভেল ছল,জে অপ্সৰা স্বযং ভূপতি দিস আকর্ষিত ভেল হেতীহ। সংভবতঃ ভবিষ্য মেঁ কহিযো ফেৰ এহন সংজোগ পুনঃ নহি হোযত - এ সবঁহক বিচাৰ ছল!আগ পৃথ্বীক সোঝাঁ ঝুকি স্বর্গ প্রণাম কৰৈত অছি - এ প্রত্যক্ষতঃ স্বর্গ পৰ পৃথ্বীক বিজযক প্রমাণ ছল।

জতেক লোক ততেক তৰহক বাঁত সুনবাঁ মেঁ অবৈঁত ছল । সবঁহক অপন-অপন বুঁঝি অনুসাৰ অপন-অপন বিচাৰ ছল। মুদা এহি বিবাহ সঁ প্রসন্ন সভ কেও ছলাহ। কী ৰাজ কর্মচাৰী,কী প্রজা জন, ঋষি মুনি,বিদ্বত জন অথবা অন্য ৰাজা গণ সবঁ ক্যো অত্যংত প্রসন্ন ভয পুৰূৰবা আ উর্বশী দুনূক জোড়ী কে দুনিযা মে অদ্বিতীয কহি ৰহল ছলথি ।

𑒣𑒳𑒩𑒳𑒩𑒫𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒒𑒧𑓀𑒛 𑒞𑓄 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒼 𑒕𑒳𑒥𑒱𑒨𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱।𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒕𑒼𑒙-𑒣𑒻𑒒 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩 𑒕𑒪𑒢𑒱,𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒅𑒚𑒱 𑒏𑓄 𑒁𑒦𑓂𑒨𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞 𑒏𑒹𑒪𑒟𑒱 ।𑒋𑒯𑒱 𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒣𑒩 𑒢𑒫 𑒫𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩, 𑒮𑒼𑒢𑒰, 𑒔𑒰𑒢𑒲,𑒩𑒞𑓂𑒢 𑒂 𑒯𑒲𑒩𑒰 𑒂 𑒁𑒢𑒹𑒏𑒼 𑒥𑒯𑒳𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨 𑒩𑒞𑓂𑒢 𑒁𑒦𑓂𑒨𑒰𑒑𑒞 𑒮𑓀𑒑 𑒣𑓂𑒩𑒖𑒰𑒖𑒢 𑒏𑒹 𑒧𑒡𑓂𑒨 𑒅𑒣𑒯𑒰𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒫𑒱𑒞𑒩𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒄 𑒮𑒦 𑒮𑒰𑒧𑒑𑓂𑒩𑒲 𑒥𑒯𑒳𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨 𑒩𑒞𑓂𑒢, 𑒫𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩, 𑒁𑒢𑓂𑒢 𑒅𑒣𑒯𑒰𑒩 𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒿𑒙𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪,𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨 𑒧𑒹 𑒏𑒹𑒍 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒡𑒢 𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒏𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒰𑒢 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞। 𑒖𑒹 𑒮𑒥 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪,𑒍 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒦 𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳 𑒏𑒹 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹𑒿 𑒅𑒣𑒯𑒰𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞,𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒬𑓂𑒩𑒠𑓂𑒡𑒰 𑒮𑒿𑓄 𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒏𑒹 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒇𑒭𑒱 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒰𑒢 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪,𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒑𑒳𑒩𑒳𑒏𑒳𑒪 𑒂 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒮𑓀𑒔𑒰𑒪𑒢 𑒯𑒹𑒞𑒳 । 𑒮𑒖𑒪 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒣 𑒋𑒐𑒢𑒯𑒳𑒿 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒮𑒧𑒰𑒩𑒼𑒯𑒏 𑒦𑒫𑓂𑒨𑒞𑒰 𑒂 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒏 𑒮𑒧𑒵𑒠𑓂𑒡𑒱 𑒑𑒰𑒟𑒰𑒏 𑒥𑒐𑒰𑒢 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒌𑒬𑓂𑒫𑒩𑓂𑒨 𑒂 𑒫𑒻𑒦𑒫𑒏 𑒨𑒬 𑒣𑒞𑒰𑒏𑒰 𑒋𑒐𑒢𑒯𑒳𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨 𑒩𑒞𑓂𑒢 𑒯𑒲𑒩𑒰 𑒂 𑒮𑒼𑒢𑒰𑒏 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒠𑓂𑒦𑒳𑒞 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒣 𑒏𑒹 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒤𑒛𑓃𑒤𑒛𑓃𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒫𑒻𑒦𑒫𑒬𑒰𑒪𑒲 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨 𑒏𑒹 𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒼𑒭 𑒫𑒱𑒬𑒰𑒪 𑒮𑒰𑒑𑒩 𑒮𑒧𑒰𑒢 𑒕𑒪,𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿𑓄 𑒋𑒏 𑒪𑒼𑒙𑒰 𑒖𑒪 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒪 𑒖𑒰𑒋 𑒞𑒐𑒢 𑒦𑒪𑒰 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒰𑒑𑒩 𑒏𑒹 𑒖𑒪 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢 𑒏𑒧𑒲 𑒯𑒼𑒨𑒞? 𑒨𑒻𑒯 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒏 𑒏𑒼𑒭 𑒮𑒿 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒡𑒢-𑒩𑒞𑓂𑒢 𑒠𑒰𑒢 𑒏𑒨𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪,𑒞𑒃𑒨𑒼 𑒮𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒣𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒋𑒏 𑒪𑒼𑒙𑒰 𑒮𑒢 𑒦𑒩𑒪 𑒩𑒯𑒪 - 𑒍 𑒏𑒼𑒭 ।𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒫𑒏 𑒦𑒫𑓂𑒨 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢𑒧𑒹 𑒂𑒧 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒕𑒪 । 𑒮𑒥 𑒣𑓂𑒩𑒖𑒰𑒖𑒢 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒟𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒩𑒼𑒯 𑒧𑒹 ।

𑒠𑒹𑒬 𑒠𑒹𑒬𑒰𑓀𑒞𑒩 𑒏𑒹 𑒩𑒰𑒖𑒰-𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒂 𑒮𑒰𑒧𑓀𑒞𑒏 𑒁𑒞𑒱𑒩𑒱𑒏𑓂𑒞 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨 𑒏𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒖𑒢𑒞𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹

𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒣𑒩 𑒦𑒩𑒣𑒴𑒩 𑒧𑒢𑒼𑒩𑓀𑒖𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒨𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 । 𑒍 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒼𑒞𑓂𑒮𑒫 𑒣𑓀𑒠𑓂𑒩𑒯 𑒠𑒱𑒢 𑒞𑒏 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪। 𑒋𑒏𑒩 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞 𑒂𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒦 𑒋𑒏-𑒋𑒏 𑒏𑓄 𑒫𑒱𑒠𑒰 𑒯𑒼𑒧𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯।𑒣𑓀𑒠𑓂𑒩𑒯 𑒠𑒱𑒢 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒠 𑒮𑒦 𑒣𑒰𑒯𑒳𑒢 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒫𑒱𑒠𑒰 𑒏𑒰𑒪 𑒧𑒹𑒿 𑒮𑒦 𑒣𑒰𑒯𑒳𑒢 𑒏𑒹 𑒡𑒢𑓂𑒨𑒫𑒰𑒠 𑒠𑒻𑒞 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒏𑒹 𑒞𑒩𑒤 𑒮𑓄 𑒫𑒱𑒠𑒰𑒃 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢 𑒕𑒪,𑒮𑒧𑓂𑒩𑒰𑒙 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪, 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒮𑒧𑓂𑒩𑒰𑒙 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒂 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒏𑒹 𑒯𑒵𑒠𑒨 𑒮𑓄 𑒂𑒬𑒲𑒩𑓂𑒫𑒰𑒠 𑒠𑓄 𑒏𑓄 𑒫𑒱𑒠𑒰 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒂𑒧 𑒖𑒢𑒞𑒰 𑒮𑓄 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨 𑒁𑒞𑒱𑒟𑒱 𑒞𑒏 𑒮𑒦 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒏𑒹 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒮 𑒑𑒠𑒑𑒠 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯 ।

=======*********=========

𑒮𑒾𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨-𑒬𑒨𑓂𑒨𑒰!𑒂 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒧𑓂𑒩𑒰𑒙 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒏𑒹! 𑒋𑒏𑒩 𑒮𑒖𑒰𑒫𑒙 𑒏𑒹 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒏𑒩𑒥 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒁𑒕𑒱! 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒦𑒫𑒢 𑒏𑒹 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝 𑒏𑒹 𑒮𑓀𑒑-𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒾𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨 𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒏𑒹 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝 𑒂 𑒮𑒖𑒰𑒫𑒙 𑒏𑒹 𑒏𑒩𑓂𑒞𑒫𑓂𑒨-𑒦𑒰𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒏𑒩𑓂𑒧𑒰 𑒏𑒹 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪।𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒏𑒹 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝 𑒏𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒍 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒁𑒣𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒏𑓂𑒭 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒏𑒩𑒾𑒪𑒢𑒱 । 𑒁𑒞𑓁 𑒋𑒯𑒱 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒞𑓂𑒩𑒳𑒙𑒱 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑓀𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪।𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒏𑒹 𑒤𑒩𑓂𑒬 𑒣𑒩 𑒩𑓀𑒑-𑒥𑒱𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒤𑒴𑒪 𑒋𑒯𑒢 𑒮𑒖𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒖𑒹𑒏𑒩 𑒞𑒳𑒪𑒢𑒰 𑒁𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒹 𑒩𑒞𑒱 𑒂 𑒧𑒠𑒢 𑒏𑒹𑒩 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒧𑒹𑒿 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪।𑒫𑒱𑒬𑒰𑒪 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒞𑒵𑒞 𑒣𑒩𑓂𑒨𑓀𑒏 𑒏𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒹𑒿 𑒋𑒏 𑒂𑒍𑒩 𑒥𑒹𑒿𑒮𑒲 𑒁𑒠𑓂𑒫𑒱𑒞𑒲𑒨 𑒫𑒱𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒕𑒪 𑒮𑒾𑒢𑓂𑒠𑒩𑓂𑒨।𑒋𑒏𑒩 𑒂𑒡𑒰𑒩 𑒂 𑒮𑒞𑒯 𑒣𑒩 𑒁𑒪𑒑-𑒁𑒪𑒑 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒂 𑒩𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒮𑒖𑒲𑒫 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒪𑒰𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒍 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒮𑒾𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨-𑒏𑒏𑓂𑒭 𑒩𑒞𑒱-𑒣𑒞𑒱

কামদেৱ কে ছল। ৰতি-কামদেৱ কে চিত্র ওহি সংপূর্ণ কক্ষ মেং বিভিন্ন মুদ্রা মেং চিত্রিত কএনগেল ছল। কক্ষ কে দেৱাঁল পৰ পর্যঁত বিভিন্ন মুদ্রা মেং ৰতি-কামদেৱ চিত্রিত ছলাহ। কক্ষ কে ফর্শ পৰ ছল অদ্বিতীয পুষ্প, ৰত্নমূল্য ৰংগ-বিৰংগক মোতী,মাণিক আ কতেকো ৰংগ সঁ ৰংগল স্বর্ণ জড়ল কালীন! ওহি কক্ষ মে পুৰূৰৱা আ উর্ৱশী কে সৌভাগ্য-শয্যা এতেক নীক জকাঁ সুসজ্জিত আ এহেন ৰত্নমূল্য ছল জেকৰ সামান্য জন কল্পনা তক নহি কঽ সকৈত ছল।এহেন সৌভাগ্য-কক্ষ সম্ভৱত:ইন্দ্র কেঁ সেহো নহি ভেটি সকল হোযতন্হি ।

মুদা আৰ্ব এখনি ওহি কক্ষ মে কিযো নহি ছল।এতেক ৰত্নমূল্য ৰূপ সঁঽ সজাওল কক্ষ এখনো একদম ৰিক্ত ছল।ৰাজা পুৰূৰৱা হৃদয মে অনগিনত অসংখ্য স্বপ্ন লঽ কঽ ওহি কক্ষ মে প্রৱেশ কেলনি,মুদা শূন্য সৌভাগ্য-শয্যা কেঁ দেখি ও আশ্চর্যচকিত ভঽ গেলাহ,তীব্র গতি সঁঽ ও দোসৰ কক্ষ মে প্রৱেশ কেলনি জে ওহি কক্ষ সঽ সংলগ্ন ছল । মুদা আশ্চর্য!ওতহ উর্ৱশী নহি ছলীহ ! কেহন সৌভাগ্য-ৰাত্রি অছি!জাহি মে ৱধূ অনুপস্থিত ছথি! ৰাজা পুৰূৰৱা সোচলথি!ক্রোধ মিশ্রিত আশ্চর্যক ৰেখা হুনকৰ মুখমংডল পৰ স্পষ্ট ৰূপ সঽ পৰিলক্ষিত ভঽ ৰহল ছলনি ।দুঃখী হৃদয সঽ ৰাজা নগহি মে ৰাখল স্বর্ণ আসন পৰ বৈসি গেলাহ।একহি ক্ষণ মে হুনক সভটা সুখ-স্বপ্ন পৰ ৱজ্রপাত ভঽ গেলনি।পর্যঁক পৰ সঁঽ এক-একটা পুষ্প উঠা কঽ ও হস্ত কমল সঁঽ ৰগড়য লগলাহ। ৱহ পুষ্প সভ কে মসলি মসলি কঽ নষ্ট কৰয লগলাহ। ও অত্যঁত খিন্ন হৃদয ভঽ গেল ছলাহ।

কিযো এক জন ছল জে ৰাজাক এহি অৱস্থা সঁঽ হর্ষিত ভঽ ৰহল

छल। ओ छलीह उर्वशी!मुदा राजा के एकर लेश मात्र ज्ञान नहि भेल छलनि। ओ उर्वशी के नहि पाबिऽ एकदम असहज अत्यंत दु:खी भेल छलाह ।

हठात् मधुर हँसी वातावरण मे गुंजायमान भऽ गेल।अधीर भऽ कऽ राजाक मुँह सँऽ आवाज निकलल,जे वास्तव मे हुनक हृदयक आह्वान छलैन्ह -

"हे उर्वशी प्रियतमे! अहाँ कत' छी! आहाँ हमरा समक्ष प्रगट होउ!आउ!शीघ्रता करु ! आर हमर धैर्यक एतेक परीक्षण जुनि करु।"

क्षण भरि मे झरना सँऽ बहैत जल स्रोत जकाँ गजोतक फव्वारा ओहि कक्ष मे झमकि गेल।ओहि प्रकाश सँऽ पूरा कक्ष प्रकाशित भऽ गेल।पुनः ओ तीव्र प्रकाश फर्श पर एकटा निश्चित घेरा मे सीमित भऽ गेल छल ।

क्षण भर मेँ ओ तीव्र प्रकाश एक अद्भुत सौंदर्य मयी युवती के रूप मेँ परिवर्तित भऽ गेल!ओह उर्वशी! उर्वशी के केहन अद्भुत रूप छलैक! ओना तऽ ओ स्वयं साक्षात् अद्भुत सौन्दर्यक देवी छलीह।ब्रह्मा सेहो हुनका बेर-बेर सौन्दर्यक सृजन करबा मे असमर्थ छलाह । मुदा एखनि विवाह परिधान मेँ सुसज्जित नव कनिया के रूप मेँ उर्वशी के सौंदर्य के वर्णन अत्यंत कठिन छल ! रक्त वर्ण के जगमग करैत रेशमी कंचुकी धारण कएल,अनमोल सौंदर्य प्रसाधन सँऽ सुसज्जित आ अमूल्य आभूषण सँ अलंकृत उर्वशीक रूप नारायण पुरुरवा के रोम-रोम कें हर्ष सँ भरि देलक।

विवाह परिधान मेँ सुसज्जित उर्वशी के दिव्य सौंदर्य सँऽ प्रभावित

ৰিম্বক্ষ ৰাজা কে হৃদয কাম-সংতপ্ত ভs গেল।ঈনকৰ সংপূৰ্ণ শৰীৰ মেং একগোষ্ট মধুৰ মন মদ ভৰি গেলনি। ও কাম সংতপ্ত ভs গেলাহ,মদ ভৰল মিহৰন সঁ ঈনক দেহসংগ আত্মা তক ভৰি গেল চলৈনি । কামোংত্তেজনা সঁs ঈনক অধৰ কাঁপি উঠল,মুখমংডল পৰ পসীনাক মোতী চমকি গেলনি । ৰাজা মযপান কএল ধূত্ত্ আদমী জকাঁ উন্মত্ত্ ভs গেলথি । কাম ক্ৰীড়া কে লেল ও ব্যগ্ৰ ভs গেল চলাহ।
ও উৰ্শীক আঁখি মে ধ্যান সঁ দেখলথি । হিৰণী মন ঠংচল পৈঘ মীন মন আঁখি সঁs উৰ্শী অপনক ঈনকে দেখি ৰহল চলথি।বুঁঝি পড়লন্হি জেনা পৈঘ মীন মেং পৃৰূৰৰাক সংপূৰ্ণ শৰীৰ আত্মা সহিত ডূবিঁ গেল চল।
কিছু ক্ষণক বাঁদ উৰ্শীক মধুৰ স্বৰ লহৰী কক্ষ মেং গূঁজি উঠল -
"ধৈৰ্য ৰাখূ প্ৰিয। এতেক অধীৰ জুনি হোউ "।
"কিযৈক,অহাঁ হমৰা কিএক যাতনা দেবঁয চাহৈত চী প্ৰিযে ?" ৰাজাক প্ৰেম-বিহ্বলতা ঈনক বিচনিত স্বৰ সঁs স্পষ্ট ভs ৰহল চলনি ।
"প্ৰিয হম আ অহাঁ দূনূ গোষ্টে অদ্বিতীয চী,এহি দুনিযাঁ মে অপন বিবাহ একটা অদ্ভুত অদ্বিতীয বিধি সঁs সম্পন্ন ভেল,তখন এহনা মেং অপন সৌভাগ্য-ৰাত্ৰি মে অহাঁক সংগ হমৰ মিলন সেহো অদ্ভুত,অনুপম হেবাঁক চাহী" -
উৰ্শী খিলখিলাগত বঁজলীহ ।

ক্রমশঃ

অপন মংতব্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাউ।**

২.৩.নন্দ বিলাস ৰায়-মাস্ক



𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒩𑒰𑒨

𑒧𑒰𑒮𑓂𑒏

𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫 𑒏𑒼𑒩𑒼𑒢𑒰 𑒥𑒹𑒧𑒰𑒩𑒲𑒮𑒿 𑒂𑒏𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒕𑒪। 𑒪𑒼𑒏 𑒞𑓂𑒩𑒰𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒳, 𑒞𑓂𑒩𑒰𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒳 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒏𑒞𑒰𑒏 𑒑𑒼𑒙𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒑𑒹𑒙𑒧𑒹 𑒞𑒰𑒪𑒰 𑒪𑒑𑒰 𑒏𑓄 𑒩𑒐𑒻 𑒕𑒪𑒰। 𑒏𑒱𑒍 𑒏𑒱𑒢𑒏𑒼 𑒍𑒃𑒚𑒰𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻 𑒕𑒪𑒰। 𑒖𑒿 𑒏𑒱𑒢𑒏𑒼 𑒍𑒃𑒚𑒰𑒧 𑒏𑒱𑒍 𑒣𑒰𑒯𑒳𑒢-𑒣𑒩𑒏 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢 𑒞𑒿 𑒒𑒩𑒥𑒻𑒿𑒨𑒰 𑒍𑒃 𑒣𑒰𑒯𑒳𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒬𑓀𑒏𑒰𑒏 𑒢𑒖𑒻𑒩𑒮𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒪𑒰। 𑒏𑒹 𑒏𑒯𑒪𑒏 𑒄 𑒣𑒰𑒯𑒳𑒢 𑒏𑒼𑒩𑒼𑒢𑒰 𑒫𑒰𑒨𑒩𑒮𑒮𑒿 𑒞𑒹 𑒢𑒹 𑒮𑓀𑒏𑓂𑒩𑒧𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒠𑒴 𑒑𑒖 𑒏𑒰 𑒠𑒴𑒩𑒲 𑒂 𑒧𑒰𑒮𑓂𑒏 𑒯𑒻 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲𑒏 𑒢𑒰𑒩𑒰 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒞𑒩𑒤𑒮𑒿 𑒧𑒻𑒏𑒱𑓀𑒑 𑒏𑒩𑒾𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒒𑒩 𑒮𑒹 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒧𑒞 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱𑒨𑒹। 𑒁𑒑𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒢𑒰 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒯𑒻 𑒞𑒼 𑒧𑒰𑒮𑓂𑒏 𑒪𑒑𑒰𑒏𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱𑒋 𑒎𑒩 𑒠𑒴 𑒑𑒖 𑒏𑒰 𑒠𑒴𑒩𑒲 𑒥𑒢𑒰𑒨𑒹 𑒩𑒐𑒱𑒨𑒹।

𑒏𑒩𑒼𑒢𑒹 𑒏𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒯𑒧 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒲 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒲। 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒲 𑒥𑒰𑒖𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩-𑒣𑒬𑓂𑒔𑒱𑒧 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒞𑒲𑒢 𑒧𑒳𑒯𑒰𑒿𑒢𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒹𑒩𑒱𑒨𑒩 𑒔𑒾𑒏 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒃𑒮𑒿 𑒪𑒑𑒦𑒑 𑒔𑒰𑒪𑒲𑒮 𑒥𑒩𑒐 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒍𑒃𑒚𑒰𑒧 𑒥𑒹𑒩𑒱𑒨𑒩 𑒕𑒪, 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒦𑒲 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒍𑒞𑒋 𑒩𑒳𑒏𑓄 𑒣𑒛𑓃𑒻 𑒕𑒹𑒪𑒃, 𑒞𑒿𑒋 𑒥𑒹𑒩𑒱𑒨𑒩 𑒔𑒾𑒏 𑒢𑒰𑒍𑓀 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪।

𑒯𑒧 𑒖𑒐𑒢 𑒥𑒹𑒩𑒱𑒨𑒩 𑒔𑒾𑒏𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒅𑒢𑓂𑒢𑒲𑒮-𑒥𑒲𑒮 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒏

নড়কাকেঁ সিপাহী ডংটাসঁ মাৰৈত ৰহএ। ৰঁগনমে একটা ফ্সীঁপৰ দৰোগা সাহৈৰঁ ৰৈঁসন ছনা খা ঘনকা ৰঁগনমে মানে দৰোগা সাহৈৰঁক ৰঁগনমে দূটা সিপাহী সেহো ৰৈঁসন ছনা।
দৰোগা সাহৈৰঁ ৰঁজনা- "মাৰিযে সানে কো ঔৰ মাৰিযে। খপনা ভী মৰেগা ঔৰ দূসৰে কো ভী মাৰেগা।"
হম হিম্মত কৰি কই দৰোগা সাহৈৰঁ নগ গেনৌঁ খা ঘনকাসঁ পুছনিঐন-
"সৰ, ঐ নড়কাকেঁ সিপাহী কিএক মাৰৈ ছৈ।"
তৈপৰ দৰোগা সাহৈৰঁ ৰঁজনা-
"দেখতা নহীঁ হৈ সানা ৰিঁনা মাস্কে কা ঘূমতা হৈ। খপনা ভী মৰেগা ঔৰ দূসৰে কো ভী মাৰেগা। গতনা মৈঁকিংগ কৰৰাঁতে হৈঁ কি ৰিঁনা মাস্ক পহনে ঘৰ সে মত নিকনিযে, দূ গজ কা দূৰী ৰঁনাযে ৰখিযে, মগৰ গন গদহোঁ কো খক্কে নহীঁ খাতা হৈ।"
জে দৰোগা সাহৈৰঁ কহৈত ৰহৈথ মাৰিযে, সানে কো ঔৰ মাৰিযে, ও খুদ মাস্ক নহি পহিৰনে ৰহৈথ। খা ৰঁগনমে ৰৈঁসন দুনূ সিপাহীক মাস্ক মুঁহমে নহি নগন ছেনৈন। দুনূ সিপাহীকেঁ মাস্ক ঘনকা সভকেঁ দাঢ়ীমে নাগন ছেনৈন।
হম দৰোগা সাহৈৰঁসঁ কহনযৈন-
"সৰ, খপনে তঁ ডৰঁন নেযৰৰঁনা মাস্ক পহিৰনে ছিঐ, কিনে।"
তৈপৰ দৰোগা সাহৈৰঁ হমৰা নিছাসঁ ডুপৰ ধৰি দেখনা খা জেৱীসঁ মাস্ক নিকানি পহিৰ নেনা।

খপন **মংতৱ্য** editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাউ।**

𑓒.𑓑.𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪-𑒒𑒩𑒠𑒹𑒐𑒲



𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑒒𑒩𑒠𑒹𑒐𑒲

𑒣𑒾𑒢𑒹 𑒢𑒁 𑒥𑒖𑒹 𑒩𑒰𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒧𑒣𑒳𑒩𑒮𑒿 𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒥𑒱𑒿 𑒏𑒪𑒣𑒩 𑒯𑒰𑒟-𑒣𑒋𑒩 𑒡𑒼𑒋 𑒏𑓄 𑒪𑒼𑒙𑒰𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒦𑒩𑒱, 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱𑒿 𑒍𑒕𑒰𑒋𑒢 𑒠𑒱𑒮 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒾𑒿 𑒏𑒱 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒱𑒧𑒪𑒰𑒪 𑒦𑒰𑒨 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒔𑒱 𑒅𑒚𑒪𑒰। 𑒧𑒢𑒏 𑒢𑒰𑒔𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒠𑒰𑒥𑒱𑒿 𑒍𑒕𑒰𑒋𑒢 𑒗𑒰𑒛𑓃𑒱𑒏𑓄 𑒥𑒱𑒿𑒕𑒹𑒪𑒾𑒿। 𑒧𑒢𑒮𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒱𑒧𑒪𑒰𑒪 𑒦𑒰𑒨

ডতৱনা তঁ নহি ম্বদা মনমে নাচৰ্ঁ কম ভ২ গেন ছন। ঐঠাম একষ্টা প্ৰশ্ন ঋছি, ও ঋছি ৰামপুৰক ভৈযাৰী, তীন কোস হষ্টনে গাম ডত্তিমনান ভাগক ছৈন ঋা তহিনা দনকাসঁ হষ্টনে ঋপনো ঘৰ তঁ ঋছিএ, তৈঠাম ভৈযাৰীক সম্বন্ধ কেনা ভেন? ..ওনা, মাতৃক ৰা কোনো ঋান সম্বন্ধমে সেহো ভৈযাৰী হোগতে ঋছি, তগসঁ ভিন্ন ডত্তিমনান ভাগক সঁগ ঋপ্পন ভৈযাৰী ঋছি। নোকৰীক জীৱন ৰহনে ৰঁদত দিন ধৰি দ্বনূ গোৰে একঠাম ৰহৰোঁ কএন ছী ঋা ৰেঁৱহাৰিক জীৱনমে একৰূপতা সেহো ঋছিএ জগসঁ জীৱনক ঋনেকো মৰ্মস্থন দ্বনূক গোৰেক একৰংগাহে ঋছি। হঁ, ঐঠাম সমাজ ৰা পৰিৱাৰক ৰীঠ জে ভৈযাৰীক সম্বন্ধ ঋছি ও একষ্টা ৰংশগত ঋছি ঋা দোসৰ সম্বন্ধগত ঋছি।

ওদনা দেখিতে ছী জে ঋপনা সৰঁহক ৰীঠ জেতেক সম্বন্ধ ঋছি ও সীঢ়ীনুমা ঋছি, ৰংশগত ভৈযাৰীক সম্বন্ধমে সেহো থোড়-ৰঁদত মানে ডম্রক চনৈত সীঢ়ীনুমা ঋছিএ, ম্বদা সে সমাজগত ভৈযাৰীমে নহি ঋছি। পৰিৱাৰমে ভৈযা-ৰৌঋাক চনৈন ঋছি, ম্বদা সমাজমে ও ভাএ-ভৈযাৰীক ৰূপমে ৰঁদৈন জাগএ, জে একৰূপতাক ৰাস্তা সেহো পকড়ৈৰিঁতে ঋছি। খাএৱ জে ঋছি ও জানৈথ পৰিৱাৰ-সমাজক নোক। ঋপনা তঁ ঋপ্পন জিনগী ঋছি। ঋপনা দেহমে ওহন ৰিঁমাৰীএ নে ভ২ জাএ জে সদ্দিকান মন ৰ্যাঞ্চনে ৰঁনন ৰহএ। তগনে ঋপনে নে ৰিচাৰৰোঁ কৰৰ্ঁ ঋা তেকৰ নিমৰজনো কৰৰ্ঁ।

ওছোগন ৰীছা সিৰমাপৰ জহাঁনে ম্বড়ী দেনৌঁ কি ডত্তিমনান ভাগক ৰেঁষ্টী-ৰিঁঋাহক পৰেশানী ধক-দে মনমে খসন। ওনা, ৰিঁঋাহক সভ ৰেঁৱস্থা দেখি মন মানি গেন ঋছি জে ডত্তিমনান ভায জীৱনক ঋন্তিম ৰেঁড়া নীক জকাঁ পাৰ ক২ ৰহনা ঋছি। ঋাজুক জে পৰিৱেশ

ৰঁনি গেল অছি আ ৰঁনিযোঁ ৰহল অছি তএমে নহিযেঁ জাএৰঁ নীক, মুদা ৰাঁঘা তঁ ওঁহো অছিএ জে জঁ ৰিঁআহক কাজকেঁ ৰহিষ্কাৰ কৰৰঁ তখন ৰেঁচা-ৰেঁচীক ৰিঁআহ কেনা হএত। আ জঁ ৰিঁআহ নএ হএত তঁ পৰিৰাৰ ৰঁনি সমাজ ঠাঢ় কেনা হএত?

ৰেঁচী ৰিঁআহক সভ প্ৰক্ৰিয়া ভক্তিমনান ভায জীহ খোলি কই কেনে ছৈথ। আন গামক আন জাতিক ৰাঁত নএ কহৈ ছী জে জাৰেঁ ৰঁৰ দুআৰি নএ নগতা তাৰেঁ জঁ কিযো ৰঁৰাত দৰৰঁজ্জাপৰ এৰোঁ কৰতা তঁ ঘনকা ৰঁৰিযাতীক মোজৰ নএ হেতৈন, তঁএ চাহ-পানক কোন গপ জে কিযো কুশলো-ক্ষেম পুছনিহাৰ নএ হোএ ছৈন। তএসঁ ৰিপৰীত ভক্তিমনান ভায ঐঠাম দেখনযৈন। ৰঁৰ-ৰঁৰিযাতী ৰাতিক দস ৰঁজেক ৰাঁদ পহুঁচতা, মুদা খেনাএ-পীনাএ দস ৰঁজে দিনেসঁ শুৰু ভই গেল ছল।

অপ্পন সমযক অঁটাৰেশ কৰৈত সাত ৰঁজে সাঁঝমে ভক্তিমনান ভায ঐঠাম পহুঁচ আঁগন-সঁ-দৰৰঁজ্জা ধৰি ঘুমি-ফিৰ কই সভ কিছু দেখি মন আশ্বস্ত ভএযে গেল জে ভক্তিমনান ভায সফল ৰেঁৰস্থা কেনে ছৈথ। সভ কিছু দেখি-সুনি ভক্তিমনান ভাযকেঁ কহলযৈন- "ভায, হম নএ ৰূকৰঁ। সভ কিছু দেখি-সুনি নেলোঁ, আৰঁ জেৰাঁক আদেশ দিঅ।"

অপনে ওঁ সোচি ৰাঁজল ৰহী জে ভক্তিমনান ভায অপ্পন কাজমে তেজী অনতা, জএসঁ কাজ আগু মুহেঁ সসৰৈত ৰঁঢ়তৈন। জহিনা অপনে ৰঁজলোঁ তহিনা ভক্তিমনান ভায খাএ-পীৰেঁক জগহপৰ হমৰা পহুঁচা কই কহি দেনৈন-

"ভোজন কেনাৰাঁদ অহাঁ চলি জাএৰঁ।"

গাড়ী-সৰাৰী ৰঁঢ়লে, এতে তঁ ভএযে গেল অছি জে নমহৰো ৰাতি

छोटे भऽ गेल अछि आ छोटो दिन नमहर भऽ गेल अछि, माने काज करैक समय बेसी भेने बढ़ि गेल अछि। बजलौं-
"उत्तिम भाय, घरदेखी बाँकी रहल।"
उत्तिमलाल भाय बजला-
"बड़बढ़ियाँ।"
सिनेमाक बीन जकाँ अप्पन विचारक बीन सेहो आगू मुहेँ बढ़ल। आगू बढ़िते उत्तिमलाल भाइक पाँच बर्खक परेशानी मोन पड़ि गेल।
कहनिहारो आ बजनिहारो कहिते छथि आ बजिते छथि जे बेटा-बेटीक विआह एक निश्चित सीमापर होइ। मुदा ताहूलाक पछातियो कान्ही मिलबैमे, माने बर-कन्याक जोड़ मिलबैमे बर्खक-बरख गुजैर जाइए, तखन निश्चित सीमाक निश्चित सिमान केना रहत। खाएर जे रहए, ऐठाम उत्तिमलाल भाइक ठठ करै छी।
आन गुण उत्तिमलाल भायमे जे होन्हि मुदा बेटा-बेटीकेँ पढ़बैक गुण हुनकामे सभ दिनेसँ अनका अपेक्षा बेसी छन्हि। जइसँ तीनू बेटियो आ दुनू बेटोकेँ एक सीमा धरि पहुँचाइये चुकल छथि। ऐठाम सीमाक माने एक खण्डक सीमा, ओना जैठाम माने जइ देशमे बेरोजगारीक बोझ रहत तैठाम पढ़ाइक डिग्रीक कोनो मोल नहियेँ रहैए, से अपनो ऐठाम अछिए। देखबेँ करै छी वैज्ञानिक बनैबला रेलवे स्टेशनमे टिकट काटै छथि। जइसँ उत्तिमलाल भाय पाँचो सन्तानकेँ एक सिमानपर पहुँचेलो पछातियो, काजक अभावमे नोकरी नइ भेने, परेशान छथिए। ओना, अपना नीक नोकरी रहने उत्तिमलाल भायकेँ नीक

𑒣𑒹𑓀𑒬𑒢𑒏 𑒂𑒬𑒰 𑒕𑒻𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒅𑒣𑒦𑒼𑒏𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒧𑒨 𑒦𑒹𑒢𑒹 𑒮𑒦 𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒏𑓄 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱।

𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒥𑒱𑒂𑒯𑒧𑒹 𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒦𑓄 𑒏𑓄 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒱𑒧𑒪𑒰𑒪 𑒦𑒰𑒨 𑒣𑒩𑒹𑒬𑒰𑒢 𑒢𑒃 𑒦𑒹𑒪𑒰, 𑒞𑒿𑒋 𑒣𑒩𑒹𑒬𑒰𑒢𑒲𑒏 𑒍 𑒑𑒳𑒝 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒥𑒱𑒂𑒯𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒻𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒱𑒧𑒪𑒰𑒪 𑒦𑒰𑒃𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒹𑒞𑒹𑒏 𑒮𑒴𑒞𑓂𑒩 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢, 𑒞𑒃 𑒮𑒦 𑒮𑒴𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒅𑒣𑒨𑒼𑒑 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒥𑒱𑒂𑒯𑒧𑒹 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒯, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒢𑒚𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒰𑒿𑒣𑒏 𑒏𑒰𑒙𑒪 𑒥𑒲𑒐 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒖𑒹 𑒖𑒢𑒪𑒰𑒯𑒰 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒮𑒿 𑒢𑒃 𑒅𑒞𑒩𑒻𑒋 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒦𑒃𑒨𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒏𑒯𑒥 𑒖𑒹 𑒁𑒢𑒚𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒰𑒿𑒣 𑒂 𑒖𑒢𑒪𑒰𑒯𑒰 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪? 𑒁𑒢𑒚𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒰𑒿𑒣 𑒦𑒹𑒪, 𑒢𑒫-𑒢𑒫 𑒪𑒹𑒢-𑒠𑒹𑒢𑒏 𑒔𑒪𑒻𑒢 𑒂 𑒮𑒦 𑒮𑒰𑒿𑒣𑒏 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒁𑒪𑒑-𑒁𑒪𑒑 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒋𑒏 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒮𑒰𑒿𑒣𑒏 𑒥𑒲𑒐𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒅𑒞𑒰𑒃𑒩 𑒣𑒥𑒻𑒋, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒁𑒢𑒚𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒰𑒿𑒣𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒦𑒹𑒃𑒨𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑒯𑒔𑒰𑒢𑒹 𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒦𑒩𑓀𑒑𑒰 𑒐𑒹𑒪 𑒔𑒪𑒱𑒨𑒹 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒹𑒞𑒾 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒑𑒰𑒧 𑒒𑒹𑒩𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒍𑒃 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒹𑒙𑒰-𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒥𑒱𑒂𑒯 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒻𑒟, 𑒞𑒿 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮 𑒏𑒳𑒪-𑒧𑒴𑒪 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒛𑓃𑒱 𑒥𑒢𑒰 𑒒𑒹𑒩𑒪𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐𑒼 𑒞𑒿 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒕𑒲, 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰 𑒅𑒣𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒖𑒰𑒞𑒱-𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒏𑒳𑒪-𑒧𑒴𑒪𑒏 𑒂𑒛𑓃𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒫𑒻𑒫𑒰𑒯𑒱𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒞𑒹 𑒕𑒻𑒟। 𑒐𑒰𑒋𑒩 𑒆 𑒞𑒿 𑒦𑒹𑒪 𑒑𑒰𑒧-𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒪𑒲𑒪𑒰, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒱𑒧𑒪𑒰𑒪 𑒦𑒰𑒃𑒏 𑒪𑒲𑒪𑒰 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒕𑒻𑒢, 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒧 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒧𑒹, 𑒌𑒚𑒰𑒧 𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒂 𑒮𑓂𑒞𑒩 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒁𑒕𑒱, 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒱𑒧𑒪𑒰𑒪 𑒦𑒰𑒃𑒏 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒻𑒢। 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒞𑒩𑒏 𑒋𑒏 𑒔𑒪𑒻𑒢 𑒡𑒢𑒼𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒔𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒨𑒼𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒡𑒢𑒲𑒏, 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒡𑒢𑒱𑒏, 𑒞𑒯𑒴𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒡𑒢𑒱𑒏 𑒂 𑒞𑒯𑒴𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒡𑒢𑒱𑒏𑒏 𑒮𑒲𑒧𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒑𑒩𑒲𑒥𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱। 𑒑𑒩𑒲𑒥, 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒑𑒩𑒲𑒥, 𑒞𑒯𑒴𑒮𑒿

𑒥𑒹𑒿𑒮𑒲 𑒑𑒩𑒲𑒥𑒿 𑒂 𑒞𑒯𑒳𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒿𑒮𑒲 𑒑𑒩𑒲𑒥𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱𑒋। 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒧𑒠𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱𑒋 𑒂 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒧𑒠𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱𑒋।

𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒧 𑒥𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒥𑒰𑒩 𑒍𑒯𑒢 𑒁𑒕𑒱𑒋 𑒖𑒹 𑒡𑒢𑒏 𑒖𑒹𑒞𑒹 𑒐𑒑𑒞𑒰 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒿 𑒔𑒰𑒯𑒲, 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒖𑒲𑒥𑒢𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒰𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒖𑒹 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒞𑒩 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒿 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱𑒋। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒡𑒢𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒱𑒧𑒪𑒰𑒪 𑒦𑒰𑒨 𑒕𑒻𑒟 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒼 𑒂 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒨𑒼𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒕𑒟𑒱𑒋। 𑒣𑒢𑒩𑒯-𑒥𑒲𑒮 𑒪𑒰𑒐 𑒩𑒳𑒣𑒻𑒂 𑒥𑒹𑒿𑒙𑒲 𑒥𑒱𑒿𑒂𑒯𑒧𑒹 𑒐𑒩𑓂𑒔 𑒏𑒩𑒻𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒟, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒥𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒥𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒣𑒛𑓃𑒢𑒹 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰-𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲𑒏 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒧𑒹 𑒦𑒰𑒩𑒲 𑒐𑒰𑒡𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒿𑒢𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒢𑒰, 𑒁𑒐𑒢 𑒞𑒏 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒔𑒪𑒻𑒢 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒥𑒹𑒿𑒮𑒱𑒨𑒼 𑒣𑒜𑓃𑒪-𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰𑒏 𑒥𑒱𑒿𑒂𑒯 𑒮𑒰𑒡𑒰𑒩𑒝𑒼 𑒣𑒜𑓃𑒪-𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒥𑒰 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒼𑒿 𑒣𑒜𑓃𑒪-𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒦𑒃𑒨𑒹 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒢𑒰, 𑒞𑒯𑒳𑒧𑒹 𑒥𑒱𑒮𑓂𑒤𑒼𑒙𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒥𑒿𑒢𑒢𑒹 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒥𑒰𑒯𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒲𑒐 𑒅𑒞𑒰𑒩𑒥𑒿 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒦𑒃𑒨𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒻𑒢।

𑒖𑒯𑒱𑒨𑒰𑒮𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒱𑒧𑒪𑒰𑒪 𑒦𑒰𑒨 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲𑒮𑒿 𑒮𑒹𑒥𑒰 𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒰 𑒞𑒯𑒱𑒨𑒰𑒮𑒿 𑒦𑒹𑒿𑒙-𑒒𑒰𑒿𑒙 𑒯𑒋𑒥𑒿 𑒏𑒧𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒧𑒨 𑒕𑒪 𑒖𑒐𑒢 𑒮𑒰𑒿𑒗-𑒦𑒼𑒩 𑒋𑒏𑒰𑒡 𑒒𑒢𑓂𑒙𑒰 𑒋𑒏𑒚𑒰𑒧 𑒥𑒻𑒮 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢-𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒥𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒠𑒹𑒬-𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒹𑒪𑒾𑓀, 𑒞𑒻𑒚𑒰𑒧 𑒧𑒰𑒮𑒏-𑒧𑒰𑒮 𑒦𑒹𑒿𑒙 𑒢𑒃 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻𑒟। 𑒕𑒁 𑒧𑒰𑒮 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒥 𑒖𑒹 𑒦𑒹𑒿𑒙 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒰 𑒂 𑒍𑒃 𑒠𑒱𑒢 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒨𑒻𑒢 𑒞𑒿 𑒥𑒱𑒿𑒮𑒥𑒰𑒮𑒹 𑒢𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒱𑒧𑒪𑒰𑒪𑒹 𑒦𑒰𑒨 𑒕𑒻𑒟। 𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒍𑒯𑒳𑒢𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒏 𑒩𑓀𑒑 𑒣𑒲𑒩𑒮𑒱𑒨𑒰𑒧 𑒕𑒻𑒢𑓂𑒯𑒹, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒹𑒯𑒳𑒧𑒹 𑒥𑒹𑒿𑒙𑒲 𑒥𑒱𑒿𑒂𑒯𑒏 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒩𑓀𑒑 𑒂𑒥𑒼 𑒏𑒰𑒩𑒲-𑒗𑒰𑒧𑒩 𑒥𑒿𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒞𑒻𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒳𑒐𑒪 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒩𑒯𑒢𑒹 𑒔𑒹𑒯𑒩𑒼𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒂 𑒧𑒢𑒼 𑒧𑒪𑒱𑒢 𑒦𑒃𑒨𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢।

𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒦𑒹𑒿𑒙 𑒠𑒱𑒢, 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒕𑒁 𑒧𑒰𑒮 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒥 𑒖𑒹 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒱𑒧𑒪𑒰𑒪 𑒦𑒰𑒨 𑒦𑒹𑒿𑒙

ভেনা আ পুছনে ৰহিঐন- ভায, কন্যাদানক কী স্থিতি অছি? তৈপৰ, এক তঁ যোগাএন-পীতাএন মন ভক্তিমনান ভাগক ভগযে গেন ছেনৈন, ৰাঁজনে ছনা- অখন কিছু নে.!

মনক টুটৈন এহেন হোগতে অছি জে টুটিকই ওগ ষীমাপৰ নষ্টৈক জাগএ জেতএ গ্ৰীনৰীঠ ৰেখা অৰস্থিত অছি। ওগঠাম নোক ওহিনা নষ্টৈক জাগএ জহিনা মহাভাৰতক অনেকো যাম্বাকেঁ অর্জুন জে গৰদৈন পকৈড় ফেকনৈন আ ও জা কই জে নষ্টকনা। জেতএসঁ নে কেকৰো নিঠাঁ ভতৰন হোগএ আনে ডুপৰ গেন হোগএ, তেহনে ষীমাপৰ ভক্তিমনান ভাগক মন, বুঝি পড়ন জেনা নষ্টৈক গেন ঠৈন। তঁএ ৰিঁছেমে খৰিআৰিকই পুছনযৈন-

"ভায, এনা জঁ পৰিৰাৰসঁ মুঁহ মোড়ৰ্ তঁ ৰহৰ্ কেতএ.?"

জেহনে অধ্যেতা তেহনে ধ্যাতা ভক্তিমনান ভায ষভ দিন ৰহনা। দাশর্নিক ভাৰমে ৰজনা-

"জিজ্ঞাসু ভায! কী কহৰ্, কিছু কহনে কিছু নে ৰনৈএ..!"

ৰজনৌ-

"যে কী ভায?"

অলংকাৰিক শৈলীমে ভক্তিমনান ভায ৰজনা-

"পৰিৰাৰক ৰাগ ছুটনে নোককেঁ ৰিৰাগ হোগএ আ ৰিৰাগসঁ জখন অনুৰাগ হোগএ তখন নে অনুৰাগসঁ দুনিযাঁক প্ৰতি ৰাগ অৰৈএ। তখন অহীঁ কহু জে জগ পৰিৰাৰসঁ ৰা আনে ৰস্তুক ৰাগসঁ ৰিৰাগ হোগএ তঁ ওকৰা কী কৰৰৈ?"

অপনে তঁ ষাধাৰণ ৰী.এ. পাষ কেনে ছী। তহুমে চূড়া-দহী-চিন্নী পড়িকই, মানে ভেন ষাগৰাজী, নাজিক আ মৌথিনী পড়ন ছী, তঁএ ভক্তিমনান ভাগক ৰিচাৰকেঁ নহি পকৈড় মুঁহছোহৈন কৰৈত

ব়ঁজনৌঁ-

"ভায, শ্বার্ঁ নে ও দেরী ৰহনে শ্বা নে ও কৰাহ, তঁএ ছোড়ূ ওগ ষভকেঁ। কন্যাদানক কী স্থিতি শ্বছি?"

কাৰী ঘঠ-ঘণ্টাসঁ রোঁষ্মিন মেঘমে একাএক জহিনা কেতৌ ফাটি এনে সূর্জক প্রকাশ প্রকাশিত হোগএ তহিনা ��ত্তিমনান ভাগক চেহৰাপৰ গজোত ছিটকনৈন। জগসঁ কনিযাএন ফূনক কোঢ়ী জকাঁ একাএক ভত্তিমনান ভাগক মুঁহক ষ্বৰ্খীক ৰঁগ ভতৰএ নগনৈন। ব়ঁজনা- "ভায, রিচিত্র ব়ঁনৰফাঁসমে পড়ি গেন ছী। ৰাৱণক দৰব়াঁৰমে জহিনা হনুমানকেঁ ফাঁস নগা শ্বাননে গেন ৰহৈন তহিনা নগৈএ শ্বপনো সঁগ ভ২ গেন শ্বছি.!"

পৃছনযৈন-

"সে কী ভায?"

ভত্তিমনান ভায ব়ঁজনা-

"শ্বপ্পন জে জাতিক সমাজ শ্বছি তগমে শ্বপনা গামমে তঁ শ্বপনেটা শ্বা শ্বান গাম ব়ঁদত এহেন শ্বছি জগ গামমে হমৰা রেঁটী এতেক পঢ়ন-নিশ্বন নহি শ্বছি, তৈঁঠাম শ্বহীঁ কহূ জে হম্মৰ রেঁটী এক নম্বৰ ভেন কী নহি?"

ভত্তিমনান ভাগক দমগৰ রিচাৰ সুনি কেনা কহিতিঐন জে শ্বখন তক শ্বহাঁক ৰুশ্বার্ঁ কম নহি ভেন শ্বছি, ব়ঁজনৌঁ-

"একৰা কে কাটেত।"

হম্মৰ রিচাৰ সুনি ভত্তিমনান ভাযকেঁ জেনা সহ ভেটনৈন তহিনা ব়ঁজনা-

"একঠাম নড়কাক ভাঁজ নগিতে, কাজক রিচাৰকেঁ শ্বাগূ ব়ঁঢ়েনৌঁ। দেখিতে ছী জে ডাক্টৰ নড়কাক মাঁগ ডাক্টৰ নড়কীক পৰিৱাৰমে

কেহেন ভ২ ৰহল অছি। শিক্ষক-কিৰানীক তঁ বিচাৰ ছোড়ূ, ৰেঠাৰেকেঁ দৰমহো কম ছৈন অা ভনহিযো সৱঁ দিন বোগাএনে ৰহৈ ছৈন।"

হমৰ বিচাৰক প্ৰভাৱসঁ অাকি অপ্পন মনক উদ্গোহসঁ, যে উত্তিমনান ভায অপনে জনতা, মুদা মন্থুঅাএন মনে বঁজনা-

"ভায, একঠাম নড়কাক মূহকাৰ ভেঠনে। একঠা সংগীক সংগ ওগঠাম গেনৌঁ।"

কহি উত্তিমনান ভায একাএক ওহন চৰিচকিযা গাড়ী জকাঁ জে পেট্ৰোন বা ডীজন মঠনে ৰূকিক২ ঠমৌক জাগএ তহিনা ৰূকি গেন। বঁজনৌঁ- "ভায! অখন হমহূঁ নিঠেনে ছী, তঁএ কোনো বিচাৰকেঁ ৰাখূ নহি।"

হম্মৰ বাঁত স্থনিতে ফূৰাঁ কৰৈত উত্তিমনান ভায বঁজনা-

"ভায, সমাজ নিৰনজ ভ২ গেন অছি, এক দিস কন্যাকেঁ দান স্বৰূপ মানৈএ অা দোসৰ দিস কন্যাকেঁ মনুষ্কক শ্ৰেণীসঁ নিঠাঁ উতাৰি দেনে অছি.!"

উত্তিমনান ভাগক বিচাৰ নীক জকাঁ নগ বূঁঝনৌঁ, তঁএ পুছনযৈন-

"সে কেনা ভায?"

খিসিযাএন বিঁনাড় জকাঁ ধূৰ-খূৰ নোঠৈত উত্তিমনান ভায বঁজনা-

"কহূ জে জগ বেঁটীকেঁ মাতা-পিতা জন্মসঁ জৱান হোগ তক পানি-পোসিক২ দান কৰৈএ, তৈঁঠাম নোকক মন এতবোঁ নগ মানৈএ জে কি ভৰি-ভৰি দিন নৈতিকতাক ৰঠ নগবৈঁএ। তেহেন নগৌনিহাৰক নৈতিকতা কেতএ অছি।"

বঁজনৌঁ-

"সে কী ভায?"

ভক্তিমনান ভায বঁজলা-

"নৈতিকতাক সম্বন্ধমে অখন এতবেঁ কহবঁ জে নৈতিকতা জীৱনক অমূল্য ৱত্ন ছী। কহিযো দোসৰ দিন আগূক চর্চা কৰবঁ জে নৈতিকতা কী ছী।"

ভক্তিমনান ভাগক বিচাৰ সুনি অপনো মন মানি গেল জে অখন কন্যাদান সন বিষযপৰ বিচাৰ কঽ ৰহলোঁ হেন, তখন দোসৰ বিচাৰক ভূমিযো তঁ নহিযেঁ অছি। বঁজলোঁ-

"অখন ছোড়ূ দুনিযাঁদাৰীক গপ-সপ্প, চনকা চনকৈ ছৈ তঁ কিযো অপনা মথ্থাপৰ হাথ দগএ। গপকেঁ আগূ বঢ়াউ।"

ভক্তিমনান ভায বঁজলা-

"জখন দুনূ সমাংগ বৈস কঽ বেটী-বিঁআহক চর্চা উঠেলোঁ কি বঁৰক বাঁপ সুহৰদে মুহেঁ কহি দেনৈন, অহাঁ ঐঠাম কুটুমৈতী নগ কৰবঁ। অপনে তঁ চুপে ৰহলোঁ মুদা সংগী পুছি দেনকৈন, কিএ নে কৰবঁ? তৈপৰ ও বঁজলা, বেটী কাৰী ছৈন। মন তঁ তেতে গৰমা গেল জে মুঁহমে পাঁচ থাপৰ নগাবী, মুদা চুপ-চাপ উঠিকঽ বিদা ভঽ গেলোঁ।"

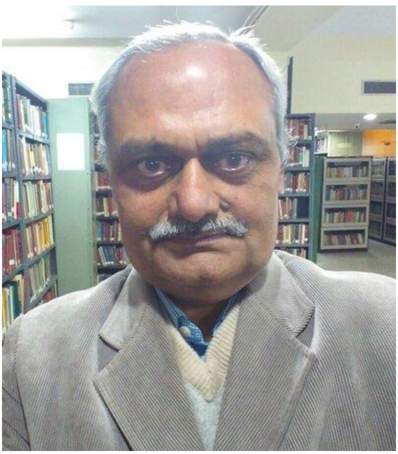
নীনক আগমন ভঽ গেল, তঁএ বিচাৰক বাতাৱৰণমে নৰমী আএল। ওনা, সমাধিক অৱস্থা তঁ একৰা নগ কহবৈঁ জে চেতনতাক পৰাকাষ্ঠা ছী, মুদা এক মৌসমসঁ দোসৰ মৌসমক বীচ কিছু-নে-কিছু সুহাৱন বাতাৱৰণ ভগযে জাগএ, তগ অৱস্থামে আবিঁ গেল ৰহী। একাএক মনমে উঠন, আগ ভক্তিমনান ভায সংগা নাভ ভঽ ৰহনা অছি। পাঁচম দিন হুনকা ঐঠাম জাএবঁ। তৈবীচ ও অপ্পন সভ কাজ, মানে বিঁআহক কাজ সম্হাৰি নেনে ৰহতা। অপনো তঁ কিছু দাযিত্ব বঁনিতে অছি কিনে জে আজুক জে

𑒥𑒱𑒂𑒯-𑒠𑒰𑒢𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒬 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒒𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒥 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱 𑒢𑒹। 𑒁𑒐𑒢 𑒞𑒏𑒏 𑒖𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒜𑒰𑒿𑒔𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒢𑒫 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒬𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒜𑒰𑒿𑒔𑒰 𑒥𑒢𑒞, 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒮𑒰𑒧𑓀𑒖𑒮𑓂𑒨 𑒯𑒉𑒥 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒁𑒕𑒱𑒉।

𑒞𑒻𑒥𑒲𑒔 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒥𑒹𑒩 𑒯𑒰𑒤𑒲 𑒦𑓄 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒪। 𑒔𑒹𑒞𑒢 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒡𑒲𑒩𑒹-𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞-𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒞𑒞𑒹𑒏 𑒢𑒱𑒔𑒰𑒿 𑒅𑒞𑒻𑒩 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒏𑒐𑒢 𑒢𑒲𑒢 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒹 𑒢𑒹 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒯।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

২.৮.ৰবীন্দ্র নাৰাযণ মিশ্র-ৰঁদনি ৰহন খ্ঠি সভকিছু (উপন্যাস)- ধাৰাৰাহিক



ৰবীন্দ্র নাৰাযণ মিশ্র

ৰঁদনি ৰহন খ্ঠি সভকিছু (উপন্যাস)- ধাৰাৰাহিক

খণ্ড ২১-২৬

ৰঁদনি ৰহন খ্ঠি সভকিছু

21

সংদীপক সংগে ৰঁদমাসসভ ওকৰ গাম সৰিখা পহুঁচন। শিখা ওহী গামক ছনি। নেনপনেমে ওকৰ মাতা-পিতাক দেহাংত ভএ গেন ৰহৈক। ওকৰ পানন-পোষণ পিতামহ কেনখিন। মুদা ওহো কিছু সানক ৰাঁদ এহি দুনিআকেঁ ছোড়ি গেনাহ। ওহি সময়মে শিখাক ৰঁএস এগাৰহ ৰর্ষ ৰহন হোএত। ও গামেক মিডিন গসকূনমে পঢ়ি ৰহন ছনি।

তকৰৰাঁদ শিখাক পানন-পোষণ একটা সমস্যা ভএ গেন। আখিৰ ওকৰ মামা অপনা নগ আনি নেনখিন। ওএহ ওকৰ আগূক পঢ়াগক ব্যৱস্থা কেননি। নেতাজীক ওকৰ মামাক ওহিঠাম আৱাগমন হোগত ৰহৈত ছননি। হুনকৰ ধ্যান শিখাপৰ পড়ননি। ওহি সময়মে ও ৰী.এ.পাস কএ চুকন ছনি। আৰ ওকৰ মামাক গচ্ছা ৰহনি জে ৰিঁআহ কৰৰাঁ দিঐক জাহিসঁ ও এহি জিম্মেৰাঁৰীসঁ মুক্ত হোথি। তাহী দিশামে ও প্রযাস কএ ৰহন ছনাহ। এক দিন নেতাজীক হুনকাসঁ ভেঁট ভেননি। গপ্প-সপ্পক ক্রমমে ও ওকৰ ৰিঁআহক চর্চা কেননি। নেতাজী কহনখিন-

"অখন একৰ ৰিঁআহক কোন ধৰফৰী ছৈক। হম একৰা শক্তিপুৰমমে সৰকাৰী নৌকৰী নগা দেবৈক। অহাঁ একৰা নেনে শক্তিপুৰম আউ। নৌকৰী ভএ গেনাক ৰাঁদ দহেজো নহি নাগত আ নীক ঠাম ৰিঁআহো ভএ জেতৈক।"

"ৰাঁত তঁ অহাঁ ৰাঁ৭ত নীক কহি ৰহনে ছী । মুদা শক্তিপুৰমমে হমসভ ৰহৰঁ কতএ? সংগমে শিখা সেহো ৰহতি। ওতএ তঁ হমৰা কোনো জোগাৰ নহি অছি ।"

"অহাঁ তকৰ চিংতা ছোড়ি দিঅ । হম সভটা ওৰিঅান কৰৱাঁ দেৰঁ । ৰঁস অহাঁ অপন কার্যক্রম দূ দিন পহিনে সূচিত কএ দেৰঁ ।

"হমৰ কার্যক্রমক কোন ঠেক? জহিএ কহৰঁ তহিএ ৰিঁদা ভএ জাএৰঁ । হমা৭ তঁ ৰৈঁসন-ৰৈঁসন ৰঁৰৰাঁদ হোগত ৰহৈত ছী । এহী ৰঁহল্লে কন্নীক ঘূমিও নেৰঁ ।"

নেতাজী ৰাঁতপৰ ৰিশ্বাস কএ শিখা অপন মামাক সংগ ৭নকৰ ডেৰাপৰ শক্তিপুৰম পাঁ৭চনি । জে ৰাঁত ঠৈক নেতাজী দোসৰে দিন ভেনে শিখাকেঁ একটা গসকূনমে শিক্ষিকাক কাজ দিআ দেনখিন। ডেৰাক ব্যৱস্থা সেহো গসকূনে পৰিসৰমে ভএ গেনৈক । ওহিঠাম কৈকটা মহিনা শিক্ষকাসভ পহিনেসঁ ৰহৈত ছনি । তেঁ শিখাকেঁ ওতএ জন্দীএ মোন নাগি গেনৈক । সভ কিছু অনুকূন দেখি ওকৰ মামা নিশ্চিংত মোনসঁ অপন গাম নৌটি গেনাহ । কিছুদিনক ৰাঁদ জখন নেতাজী গামমে ওকৰা ভেটনেখিন তঁ ৭নকৰ ৰাঁ৭ত স্বাগত কেনখি । দস আদমীক সামনেমে ৭নকৰ গুণগান কেনখি । গাম-ঘৰমে দেখাৰ্ভস নাগি গেন । কৈকগোটে অপন ৰাঁঠিআসভকেঁ নেতাজীকেঁ সহযোগসঁ শক্তিপুৰম পঠা দেনখি । সভ নেতাজীক জযগান কৰৈত ৰাপস ভেন ৰহখি । মুদা ও সভ কী জানে গেনখি জে নেতাজীক অসনিঅত কী অছি ?

𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒡𑒰𑒢 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒕𑒪 । 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒍𑒏𑒩 𑒠𑒳𑒩𑒳𑒣𑒨𑒼𑒑 𑒥𑒜𑓃𑒥𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 । 𑒍 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒋 𑒮𑒹 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒚𑒲𑒏 । 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒞 𑒕𑒪 । 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒔𑒏𑓂𑒩𑒫𑓂𑒨𑒴𑒯𑒧𑒹 𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒋 𑒍𑒗𑒩𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒍𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒥 𑒂𑒥 𑒁𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒻𑒏 । 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒪𑒑𑒣𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒅𑒪𑓂𑒙𑒰-𑒣𑒳𑒪𑓂𑒙𑒰 𑒏𑒰𑒖 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪 𑒞𑒏𑒩 𑒦𑒰𑒩 𑒍𑒏𑒩𑒹 𑒏𑒣𑒰𑒩𑒣𑒩 𑒠𑒋 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 । 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒍𑒩 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒮𑒦 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒋𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒍𑒗𑒩𑒰𑒋𑒪 𑒕𑒪 । 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒤𑒩𑒰𑒏-𑒤𑒩𑒰𑒏 𑒕𑒪𑒻𑒏 । 𑒃𑒮𑒏𑒴𑒪𑒏 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒫𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒠𑒹𑒐-𑒩𑒹𑒐 𑒖𑒱𑒧𑓂𑒧𑒰 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣𑒹𑒏 𑒕𑒪𑒻𑒏 । 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒦 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒣𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪𑒻𑒏 ।

𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒬𑒰𑓀𑒞𑒱𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒩𑒴𑒣𑒮𑒿 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪 𑒂 𑒮𑒰𑒃𑒞 𑒔𑒪𑒱𑒞𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 । 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑓀𑒖𑒼𑒑 𑒋𑒯𑒢 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒋𑒏 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒬𑒱𑒐𑒰 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒩𑒼𑒯 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻𑒏? 𑒏𑒞𑒥𑒼 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒥𑒳𑒗𑒹𑒪𑒢𑒐𑒱𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒙𑒮 𑒮𑒿 𑒧𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏 । 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒞𑒧𑒮𑒰𑒋𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒖𑒪𑒟𑒱। 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒖𑒰 𑒏𑒋 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱𑒢-

"𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒫𑒰𑒮 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒰 𑒠𑒯𑒏 ।"

𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣 𑒬𑒱𑒐𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒫𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪 । 𑒬𑒱𑒐𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒃𑒋𑒯 𑒧𑒾𑒏𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒻𑒏 । 𑒍 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻𑒏 । 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣 𑒪𑒰𑒐𑒹 𑒅𑒥𑒰𑒋𑒪 𑒕𑒪,𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒔𑒏𑓂𑒩𑒫𑓂𑒨𑒴𑒯𑒧𑒹 𑒤𑒿𑒮𑒪 𑒕𑒪,𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒞𑒯𑒳-𑒢𑒹-𑒏𑒞𑒯𑒳 𑒍𑒏𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨𑒞𑒰 𑒥𑒰𑒿𑒔𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒏 । 𑒍 𑒬𑒱𑒐𑒰𑒏 𑒏𑒭𑓂𑒙 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒳𑒐𑒲 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 । 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒥𑒱𑒪𑓀𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒬𑒱𑒐𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒦𑒰𑒑𑒪 𑒂 𑒦𑒰𑒑𑒪𑒹 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪 ।

নেতাজীক পঠাওল রঁদমাস সভ ওকৰ পছোড় কৰৈত ৰহল। ঋাখিৰ সংদীপ পকড়াগএ গেল । সংদীপ ওকৰাসভক সংগে ঋপন গাম পহুঁচল । মুদা শিখা গামমে নহি ছলৈক । ও গামসঁ কখন ঋা কতএ চলি গেলি সে সংদীপোকেঁ নহি বুঝল ৰহৈক । ঋারঁ তঁ রঁদমাসসভ ওকৰাপৰ সভটা তামস নিকালএ লাগল । হল্লা সুনি কএ গৌঁৱাসভ জমা ভএ গেল । চাৰুকাত লোকক কৰমান লাগি গেল । রঁদমাসসভ ঋপনাকেঁ ঘেৰাগত দেখি গএহ-লে,ওএহ-লে ভাগল ।

22

গাম পহুঁচিও কএ শিখা বেঁচৈন ৰহএ । নেতাজী ঋা ওকৰ সংগীসভক ঋন্যাযপূর্ণ ব্যৱহাৰসঁ ওকৰ সোঁসে দেহমে ঋাগি লাগি গেল ৰহৈক ।

"হম ঋারঁ ই সভ নহি সহরঁ । ঋন্যাযীসভকেঁ দংড দিঋা কএ ৰহরঁ । সমাজক সামনেমে একৰসভক সহী ৰূপ ঋানি কএ ৰহরঁ।"

রাৰঁরাঁৰ গএহ সংকল্প ওকৰ মোনমে উঠৈত ৰহল । ও থানা গেলি । ঋপনা ভৰি রঁক্ত প্রযাস কেলক জে প্রাথমিকী দর্জ কৰারী । মুদা থানেদাৰ টস সঁ মস নহি ভেলৈক । ও উলটে তৰহ-তৰহক রাঁতসভ রাঁজএ লাগল । শিখাক সামনেমে থানেদাৰ

কৈকরেঁৱ মোঁছপৱ হাথ ফেৰৈত ৰহন । মুন্সী দৈত ৰহন । থানেদাৰকেঁ ঊপৰসঁ শিখাক ৰাঁৰেমে গুপ্ত সঁদেশ নেতাজী পঠৰাঁ দেনে ৰহথি। কাৰণ ঔনকৰ মোন তঁ খুদকন ছননিহে । দৰোগাক ঠানি দেখি ওকৰাপৰ শিখা ততেক জোৰসঁ ঔৰকনকৈক জে থানেদাৰকেঁ জেনা নকৰাঁ মাৰি দেনকৈক। তকৰ ৰাঁদ শিখা ফুর্সীপৰসঁ ঊঠৈত খুঠি,খা থানাসঁ ৰিঁদা ভএ জাগত খুঠি । জাগত-জাগত ৰঁজৈত জাগত খুঠি-

"ঽূঁসভ ৰাৰণক ৰূপ ঠেঁ । সভক সঽী গনাজ হেতৌক। ও সময খাৰেঁ নগীচ খুঠি ।" থানেদাৰ জাৰেঁ হোসমে খুৰিঁতএ, কিছু কৰিতএ, তাৰেঁ তঁ শিখা থানাসঁ নিকনি গেন ছনি ।

থানাসঁ ৰিঁদা ভএ শিখা সোঝে ষ্টীসন পহুঁচনি । ওতএ ৰিজযপুৰমক ট্ৰেন নাগন ছন । জেনা-তেনা টিকষ্টক জোগাৰ কেনক খা ট্ৰেনসঁ ৰিজযপুৰম ৰিঁদা ভএ গেনি । ৰাজধানী ৰিজযপুৰম জে গতিহাসক কতেকো পৰিৱৰ্তনক গৱাহ ৰহন খুঠি,শিখাক জীৱনক ক্ৰান্তিক গৱাঁহ ৰঁনএ জা ৰহন ছন । কেও সোচিও নহি সকন হোএত জে শিখা এহন ৰূপ ধএ নেতি,সাক্ষাত দুৰ্গা জকাঁ ৰাক্ষসমংডনীক ৰিনাশক হেতু কৃতসংকল্প ভএ জাএত। দোসৰদিন ভেনে ও ৰিজযপুৰম ষ্টীসনক প্লেটফাৰ্ম নংৰৰ খাঠপৰ পহুঁচনি । ট্ৰেন ঠাঢ় হোগতহি যাত্ৰীসভ খপন-খপন সমানসভক সঁগে ঙতৰি ৰহন ছন। কুনীসভ যাত্ৰীসভক সমানকেঁ ঙঠা-ঙঠা কএ যাত্ৰীসভক সঁগে খাগু ৰঁঢ়ি ৰহন ছন । মুদা শিখা জস-কে-

তস ঠাঢ়ি ছলি। ওকৰা বুঁঝেবেঁ নহি কৰৈক জে কেমহৰ জাএ? কী কৰএ?

থোড়ে কাল ওহিনা ৰৈসল ৰহি গেলি । লগীচেমে চাহক দোকানসঁ চাহ কীননক । চাহ পীবিঁ ৰহল ছল কী ওকৰা মহিলা সহাযতা কেন্দ্রক ফোন নংবঁৰপৰ ধ্যান গেলৈক । ও ওহি নংবঁৰপৰ ফোন কৰৈত অছি । দোসৰ দিসসঁ ত্তৰংত একটা মহিলা বঁজৈত অছি-

"হম মহিলা সহাযতা কেন্দ্রসঁ বাঁজি ৰহল ছী ।"

"হমৰ নাম শিখা অছি । হম অখনহি ট্রেনসঁ রিজযপুৰম পহুঁচলহুঁ অছি । হম বঁহুত পৰেসানীমে ছী । হমৰা অহাঁসভক মদতি চাহী।"

"হমসভ অহাঁক কী মদতি কএ সকৈত ছী? কী পৰেসানী অছি? অহাঁ সংগে কে ছথি? "

"হম অসগৰি আএল ছী । হমৰ পৰেসানী বঁহুত গংভীৰ অছি আ ফোনপৰ হম সভটা বাঁত নহি কহি সকৈত ছী । হমৰা এহিঠামক কিছু জানকাৰী নহি অছি । তেঁ ককৰো হমৰা মদতিক হেত্তু পঠাউ ।"

"অহাঁ অখন কতএ ছী?"

"হম রিজযপুৰম টীসনক প্লেটফার্ম নংবঁৰ আঠপৰ বৈসল ছী।"

"ঠীক ছৈক । অহাঁ ওতহি ৰহূ । হমসভ আবিঁ ৰহল ছী।"

থোড়বেঁ কালমে তীন-চাৰিটা মহিলাসভ পুলিসক সংগে শিখা লগ প্লেটফার্ম নংবৰ আঠপৰ পহুঁচি জাগত ছথি । ও সভ শিখাকেঁ অপন পৰিচযপত্র দেখবৈত ছথি । ওকৰা সংগে চলবাক আগ্রহ কৰৈত ছথি। শিখা হুনকালোকনিক সংগে বিদা ভএ জাগত ছথি । দস মিনটক বাদ ও সভ মহিলা সহাযতা কেন্দ্রক কার্যালয পহুঁচি জাগত ছথি । ও সভ শিখাকেঁ প্রসন্ন কৰবাক ভৰিসক প্রযাস কৰৈত ছথি। হুনকা জলখৈ কৰবৈত ছথি, চাহ-পান কৰবৈত ছথি । বহুত দিনক বাদ শিখাকেঁ লাগি ৰহল ছলনি জে ও মনুক্ক বীচমে আবিঁ গেল ছথি , সুখী ছথি । শিখাকেঁ আশ্বস্ত দেখি মহিলা সহাযতা কেন্দ্রক স্বযংসেবকসভ বহুত খুস হোগত ছথি । ও সভ শিখাকেঁ অপন চিকাগত লিখিতমে দেবাক আগ্রহ কৰৈত ছথি জাহিসঁ ওহিপৰ পুলিস কাৰবাগ কএ সকত । শিখা হুনকৰসভক বাত মানি অপন চিকাগত লিখৈত ছথি ।

ও সভ শিখাক চিকাগত পঢ়��এ ৰহল ছলীহ কী পুলিস আযুক্ত গম্ভীপৰ ঘুমৈত-ফিৰৈত ওতএ পহুঁচি জাগত ছথি । শিখাকেঁ দেখি ও পুছৈত ছথি-

"ই কে ছথি?"

"ই আগএ ট্রেনসঁ বিজযপুৰম অএলীহ অছি । হমৰাসভকেঁ ফোনসঁ হিনকাসঁ গপ্প ভেল ছল । তকৰবাদ হীসন পহুঁচি হিনকা এতএ লেলে অএলিঅছি অছি ।"

"𑒍 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒰𑒞𑒏𑒲 𑒚𑒻𑒏? 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒩𑒹𑒮𑒰𑒢𑒲 𑒏𑒲 𑒕𑒢𑒱 ?"

𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀𑒮𑒹𑒫𑒲𑒮𑒦 𑒋𑒏𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮 𑒠𑒹𑒐𑒋 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 । 𑒤𑒹𑒩 𑒬𑒱𑒐𑒰𑒏 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒂𑒫𑒹𑒠𑒢 𑒣𑒞𑓂𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 । 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮 𑒂𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒧𑒯𑒼𑒠𑒨 𑒬𑒱𑒐𑒰𑒏 𑒂𑒫𑒹𑒠𑒢 𑒣𑒜𑓃𑒋 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 ।

𑒍𑒯𑒱 𑒂𑒫𑒹𑒠𑒢𑒧𑒹 𑒬𑒱𑒐𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒹 𑒕𑒟𑒱-

"𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒯𑒳𑒞𑒏𑒧𑒹 𑒥𑒋𑒮𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒯𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒢𑒱 । 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒰𑒪𑒢-𑒣𑒼𑒭𑒝 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱 । 𑒯𑒧 𑒧𑒰𑒧𑒰𑒑𑒰𑒧𑒹𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒱𑒢𑒡𑒩𑒱 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 । 𑒍𑒞𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃 𑒏𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 । 𑒍𑒞𑒋 𑒠𑒹𑒥𑒢 𑒅𑒩𑓂𑒤 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒂𑒫𑒰𑒑𑒧𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒢𑒱 । 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒧𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒢𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒥𑒡 𑒩𑒯𑒢𑒱 । 𑒯𑒧 𑒖𑒐𑒢 𑒕𑒹𑒙𑒑𑒩 𑒦𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒱𑒂𑒯 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒟𑒱 । 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒏𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒩𑒯𑒢𑒱-"𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒣𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒟𑒱𑒏 । 𑒋𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒋𑒏𑒩 𑒥𑒱𑒂𑒯 𑒢𑒲𑒏𑒮𑒿 𑒢𑒲𑒏 𑒚𑒰𑒧 𑒏𑒩𑒥 𑒯𑒧𑒩 𑒏𑒩𑓂𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒟𑒱𑒏 ।" 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒠𑒱𑒢-𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒋𑒏 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱 । 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒪𑒑 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒍 𑒋𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒔𑒔 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒖𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒢𑒲𑒏 𑒫𑒩𑒏 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒯𑒼𑒢𑒱 𑒞𑒿 𑒮𑒴𑒔𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒟𑒱 । 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒢𑒲𑒏𑒮𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒍 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲 𑒠𑒱𑒂 𑒠𑒹𑒞 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒢𑒲𑒏 𑒩𑒯𑒞 । 𑒥𑒱𑒂𑒯𑒧𑒹 𑒞𑒿 𑒧𑒠𑒞𑒱 𑒯𑒹𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒞 । 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒧𑒰 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑒼𑒗 𑒂𑒠𑒧𑒲 𑒕𑒪𑒰𑒯 । 𑒤𑒹𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒢𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒥𑒡 𑒩𑒯𑒢𑒱 । 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑒩 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒩𑒯𑒢𑒱 । 𑒍 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒏𑒋 𑒞𑒲𑒢𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒣𑒳𑒩𑒧 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒛𑒹𑒩𑒰𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 । 𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒞 𑒚𑒻𑒏,𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒹 𑒠𑒱𑒢 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒃𑒮𑒏𑒴𑒪𑒧𑒹 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲

ধৰা দেলক । হমৰ ৰহবাক হেতু ওহী স্কূলক ব্যৱস্থামে ওৰিয়ান কএ দেলক । সভ কিছু অনুকূল দেখি হমৰ মামা বহুত প্রসন্ন ভেলাহ । নেতাজীকেঁ হার্দিক ধন্যবাদ দেলনি আ হুনকৰ আজ্ঞা লএ গাম ৱাপস বিদা ভএ গেলাহ । তকৰ বাদ হম অপন কাজমে লাগি গেলহুঁ । শুৰুমে তঁ বহুত নীক লাগল । স্কূলমে কৈকটা শিক্ষিকাসভসঁ দোস্তী ভএ গেল । সময বহুত নীকসঁ কটএ লাগল। ওহীসভমে সঁ কিছুগোটেক নেতাজীক সংগ বহুত অংতৰংগ সংবংধ ৰহৈক। ও সভ হমৰো নেতাজীক বৈসাৰমে লএ জাএ লাগল । ওনা শুৰুমে তঁ সভকিছু ঠীক-ঠাক বুঝাগত ৰহল । মুদা বাদমে নেতাজী ক্রমশঃ অপন অসলী ৰূপ দেখবএ লাগল ।

সংজোগসঁ একদিন হমসভ বহুত ৰাতি ধৰি নেতাজীক ওহিঠাম অটকি গেল ৰহী । ভেলৈক ঈ জে ফগুআক সময ৰহৈক । নেতাজীক ওহিঠাম তৰহ-তৰহক আযোজন ৰহৈক । স্কূলসঁ লগভগ সভটা স্টাফ আএল ৰহৈক । বাহৰোসঁ বহুত ৰাস লোকসভ আএল ৰহৈক । নাৰী নিকেতনক সভ আশ্রমবাসী সেহো নোতল গেল ৰহথি । মানে নেতাজীক ওতেক অগল-বগল ডেৰা সেহো ছোট পড়ি গেল ৰহৈক । বংগলক বংগলা খালী ৰহৈক । বহুত ৰাস লোকসভ ওমহৰো ছলাহ । ওহী বংগলামে একটা একাংত স্থান সেহো বনাওল গেল ছল । ৰাতিমে ভোজনক সমযমে হম অপন সংগীসভক সংগে জখন ওতএ ভোজনক হেতু পহুঁচলহুঁ তঁ কিছুগোটে হমৰাসভকেঁ ওহি একাংত কক্ষ দিস লেনে চলি গেল । বাহৰসঁ তঁ ওতএ কিছু গড়বড় নহি বুঝাগেল। মুদা জঁ জঁ ভীতৰ পৈসৈত গেলহুঁ,তঁ তঁ ওহিঠামক অসলী ৰূপ বুঝবামে আবএ লাগল । তখন তঁ ওতএসঁ ভাগবাক প্রযত্নমে লাগি গেলহুঁ । মুদা

আওৰ ককৰো কোনো প্ৰকাৰক চিংতা নহি দেখিঐক। হম অপন সংগীসভকেঁ কহৱো কেনিঐক-

"হম এহিঠামসঁ জাএ চাহৈত ছী।"

"সে কিএক? এহন নীক আযোজন ছোড়ি কএ ডেৰামে কী কৰৱঁ? ফেৰ হমসভ তঁ ছীহে।"

হমৰা মোনমে খটকা তঁ ভেন। মুদা ঞ নহি বুঁঝাএ জে হমৰ সংগীসভ সেহো নেতেজীক দিসসঁ কাজ কএ ৰহনে অছি। মুদা অসনিযতমে ৰাঁত সএহ ৰহৈক। দূপহৰ ৰাতিমে জেনা-তেনা অসগৰি হম ওহিঠামসঁ ভাগন ৰহী। তকৰৰাঁদ কৈক দিন ধৰি ৰঁকোৰ নাগন ৰহি গেন। সোঁসে দেহমে দৰ্দ হোএত ৰহন। বুঁঝেৰেঁ নহি কৰএ জে আখিৰ ভেন কী? এনা অচানক মোন কিএক খৰাৰঁ ভএ গেন?"

ক্ৰমশঃ থোড়ে দিনক ৰাঁদ হমৰ মোন ঠীক ভএ গেন। সভ ৰাঁত ৰিঁসৰা গেন। মুদা একদিন অখৰাঁৰক মুখ্যপৃষ্ঠপৰ নাৰী নিকেতনক সমাচাৰ ছপন দেখাএন। ওকৰ শীৰ্ষক ছন-

"নাৰী নিকেতন গুংডাগৰ্দীক অড্ডা ভএ গেন অছি। ওহিঠাম কানহি পুনিস ছাপা মাৰনক। কৈকটা মহিনাসভ গাযৰঁ ছনীহ। পুনিস জনকাসভকেঁ পছোড় কৰৈত-কৰৈত শক্তিপুৰমক মহত্বপূৰ্ণ স্থানসভসঁ নিকাননক। সোঁসে সহৰমে হৰকংপ মচি গেন অছি।"

পক্ষ-প্ৰতিপক্ষক সমস্ত নেতানোকনিমে হৰকংপ মচি গেন। সভ এহি ঘটনাকেঁ শাংত কৰৱাঁমে নাগি গেনাহ। ওহীক্ৰমমে

নেতাজী সংদীপকেঁ হমৰা আ কিছু আওৰ মহিলাসভক পাছু লগা দেলক। সংদীপকেঁ ঈ সভ নীক নহি লগৈত ৰহৈক। ও এহিসভসঁ দুখী ৰহএ,ৰাঁহৰ ভোৰঁএ চাহএ। মুদা নেতাজীক ডাংগৰসঁ কিকলৰঁ এতেক আসান নহি ৰহৈক। মুদা ওকৰা হমৰ হালত দেখি ৰঁহত দুখ ৰহৈক আ একদিন ও হমৰা সংগ কএ ওহিঠামসঁ ভাগল। তকৰ ৰাঁতক ৰাঁত তঁ পুলিসক জানকাৰীমে আছিএ। হম চাহৈত ছী জে দোষী ব্যক্তিসভকেঁ কানূনক মোতাবিক দংড দেল জাএ আ নির্দোষ মহিলা লোকনিকেঁ ওকৰাসভক ডাংগৰসঁ মুক্ত কৰাওল জাএ।

নিৰেদক,

শিখা

23

শিখাক ষিকাগতপৰ পুলিস আযুক্ত তুৰংত সংজ্ঞান লৈত জীৰো প্ৰাথমিকী দর্জ কৰৰাঁ দেলনি। সাঁঝমে প্ৰেস সম্মেলনমে এহি মামিলাসঁ জুড়ল সভটা প্ৰসংগকেঁ প্ৰকাশমে অনলনি। ততৰেঁ নহি,নাৰী নিকেতনক স্থিতি আ পৰিস্থিতিপৰ মীৰীআগক জাঁচ ৰৈসৰাঁক আদেশ মেহো সৰকাৰ দিসসঁ কএল গেল। কহৰাঁক মানে জে থোড়ৰেঁ কানমে মামিলা ঘনঘনা গেল। একৰ সাক্ষাত প্ৰভাৱ শক্তিপুৰমক ৰাজনীতিমে দেখৰাঁমে আএল। কতহ-নে-কতহসঁ একটা ভীডিও মেৈলীৰীজলপৰ দেখাওল জা

ৰহল ছল । ওহিমে ৰাজ্যপ্ৰমুখক সামিল হোগত স্পষ্টতাসঁ সাৰিত ভএ ৰহল ছল । আৰ্ত তঁ হুনকৰ অপনে লোকসভ হুনকৰ শত্ৰু ভএ গেল । পাৰ্টীক আঁতৰিক বৈসকমে হুনকা জনহিতমে আ পাৰ্টীক ভৱিষ্যক হেতু তুৰংত ত্যাগপত্ৰ দেবাক দবাব বনাওল গেল । সংগহি গপো কহল গেল জে হুনকা লোকনিক জানকাৰীমে এহনসঁ বৈসী বৈপৰ্দ ভীডিওসভ আএল অছি জাহিমে ৰাজ্যপ্ৰমুখ স্বয়ং অসমাজিক কাজমে লাগল দেখাগত ছথি । ৰাজ্যপ্ৰমুখজী মাথ পকড়ি লেললি । ও ঠামহি উঠলাহ আ ৰাজভৱন জাএ অপন ত্যাগপত্ৰ দএ দেললি । ওনা এহিসভ ঘটনাক প্ৰভাৱ পড়বে কৰিতৈক,মুদা এতেক জল্দী,সেহো ৰাজ্যপ্ৰমুখপৰ,সে কেও সোগতে সোচনে ৰহল হোএত । মুদা ভেল সএহ । ৰাজ্যপ্ৰমুখক গস্তিফাক সমাচাৰ সৌঁসে গনগনা গেল । তকৰ বাদ তঁ জকৰা জে মোন হোগক সে বাজএ ।

"গস্তিফা দেলাসঁ কী হেতলি । জে পাপ কএলাহ অছি, তাহি আগু তঁ ড্ৰ কিছু নহি অছি । হিনকা তঁ জহল জেবাক চাহী ।" জতেক মুঁহ ততেক তৰহক বাত সুনবামে আবি ৰহল ছলৈক । মুদা নেতাজীক খিলাফমে কেও এক শব্দ নহি বজৈক । মীডিআ তঁ হুনকৰ আদৰ্শ ছবি প্ৰস্তুত কৰবামে জী-জানসঁ লাগি গেল ছল । এনা সন জেনা ও অগিলা ৰাজ্যপ্ৰমুখ ভগএ গেলাহ ।

ভোৰে ভেলে শক্তিপ্ৰৱমক ৰাজনীতিক পৰিদৃশ্য বদলি গেল ছল । নেতাজী ৰাজ্যপ্ৰমুখ বনতাহ ,সে ঘোষণা টেলীৰীজনপৰ বাৰংবাৰ কএল জা ৰহল ছল । ও ৰাজনীতিমে সুচিতা অনতাহ,ৰাজ্যকেঁ বিকাসক উৎকৰ্ষ ধৰি পহুঁচা কএ

ৰহতাহ,ককৰো সঁগ অন্যায নহি হোৱঁএ দেখিন,সে ৰাৰঁৰাঁৰ উদ্ঘোষণা ভএ ৰহন ছন। ততৰেঁ নহি,নাৰী সশক্তিকৰণ হেতু একটা নরীন মঁত্রানয ৰঁনওতাহ জকৰ কাজ সোঝে ও স্বয়ঁ দেখতাহ। নাৰী নিকেতন কাঁডমে দোষী পাওন গেন ককৰো নহি ৰঁকসতাহ,চাহে ও কতৰোঁ পৈঘ আদমী নে হোঅএ । ৰাজ্যকেঁ ৰঁদনি কএ ৰহতাহ । চাহে ঘনকৰ জান ৰহনি কী জানি । দিনভৰি টেনীরীজনপৰ গএহসভ অৰৈত ৰহন। সোঁসে মাহৌনমে নেতাজীক ছরি নীক কৰৰাঁক প্রযাস পৰিনক্ষিত ভএ ৰহন ছন।

হম,শক্তিনাথ আ সঁদীপ অপন ডেৰাসঁ এহি সমাচাৰসভকেঁ দেখি ক্ষুব্ধ ৰহী । দেহমে জেনা আগি নাগি গেন হোঅএ। মুদা কৰিতহুঁ কী? নেতাজীক কাটে তাকৰ আসান কাজ নহি ছন । ঘনকা সঁগে ৰঁঘমত ছননি আ নোকতঁত্রমে ৰঁঘমতক কোনো কাটে নহি ছৈক । ওসভ জে চাহত সএহ হোএত। কানূন ওকৰে সঁগ ৰহতৈক । জৰূৰী পড়নোপৰ ও সভ কানূনকেঁ ৰঁদনিও দেত জাহিসঁ সভকিছু মনমাফিক ভএ সকত ।

ওমহৰ নেতাজীক শপথগ্রহণ সমাৰোহ আযোজিত ভএ ৰহন ছন আ নাৰী নিকেতনক সামনেমে জৰঁৰদস্ত হঁগামা পসৰি গেন ছন। জনক্রান্তি দনক কার্যকর্তাসভপৰ দনাদন নাঠীক প্রহাৰ পুনিস কএ ৰহন ছন। অশ্রুগৈস ছোড়ন জা ৰহন ছন । নেতাজীক রিৰোধ কএ ৰহন প্রদর্শনকাৰীসভ জান নএ ভাগি ৰহন ছন । সঁদীপকেঁ তঁ প্রদর্শনকাৰীসভ অগ্ৰআ ৰঁনওনে ছন। কতৰোঁ গসাৰা কৰিঐক জে মঁত্রণা হেতু কোঠৰীমে আৰঁএ,ও আৰিঁএ নহি পাৰঁএ। হঁগামা ৰঁঢ়িতে জা ৰহন ছন আ পুনিস সেহো পাছু নহি

হইঁ ৰহল ছল । নগৈত ছল জে কিছু খনিঞ্চঁ ভগএ কএ ৰহত । মামিনা ৰিঁগড়ৈত দেখি পুনিস গোনী চনা দেনক । কহি নহি কৈক ৰাউঁড গোনী চনন । কতেকোগোষ্টে জমীনপৰ ঘাযন পড়ন ছন। নোকসভ জহাঁ-তহাঁ ভাগন । কৈকগোষ্টেকেঁ পুনিস পছোড় কএ টাঁগ-হাথ তোড়ি দেনক । সাযৰন ৰঁজৰৈত ৰোগী রাহন খাএন,ফাএৰ ব্রিঁগেড খাএন । পুনিস জমীনপৰ পসৰন খূনকেঁ সাফ কৰৰঁএমে নাগি গেন । থোড়ৰেঁ কানক ৰাঁদ নগনৈক জেনা ওতএ কিছু ভেনে নহি হোগক । দেখিতে-দেখিতে ওহিঠাম নিতাঁত একাঁত পসৰি গেন ।

ওহী মাহৌনমে কেও ৰাঁজন-

"শিখা হৰাগ জহাজসঁ শক্তিপুৰম খাৰিঁ ৰহন ছথি ।"

খসনমে শক্তিপুৰমমে ৰাজনীতিক ঘটনাক্রমসঁ ও উদ্বেনিত ভএ গেন ছনি । জে খসনী দোষী ছন সে তঁ ৰাজ্যপ্রমুখ ৰঁনি ৰহন ছন । ৰেঁসক রিজযপুৰম জা কএ ও পুনিসমে প্রাথমিকী দর্জ কৰৰাঁ সকনি মুদা পৰিণাম তঁ উনটে দেখা ৰহন ছনৈক । জকৰা জহনমে হেৰাঁক চাহৈক ছনৈক সএহ ৰাজ্যপ্রমুখ ৰঁনএ জা ৰহন ছন। এ ৰাঁত ওকৰা ৰঁৰদাস নহি ভএ ৰহন ছনৈক । রিজযপুৰমমে পুনিস ওকৰা শক্তিপুৰম জেৰাঁসঁ মনা কৰৈত ৰহি গেন,মুদা ও খড়ি গেনি খা শক্তিপুৰম পহিন উপনৰ্ধ হৰাগ জহাজসঁ পহুঁচি গেনি । এ ৰাঁত হমৰা শক্তিনাথ সভসঁ পহিনে সূচিত কেনথি ।

24

কহৰী ঠৈক জে এক তঁ কৰৈন ওহো নীমপৰ চঢ়ল। সএহ হান নেতাজীক ৰহনি। ও তঁ জন্মজাত ৰঁদমাস ছলাহে। সভদিন লোককেঁ ঠকৈত ৰহল,অপন স্বাৰ্থ কেনা পূৰ্তি হোএত তাহি ৰ্য্যোঁতমে নাগল ৰহলাহ। ককৰো নীক হোউক,ৰেঁজাএ হোউক হুনকা কোনো মতলৰঁ নহি ৰহৈত ছলনি। মুদা লোকক সামনেমে তেনা নে অভিনয কৰিতথি জেনা ওকৰ ও সভসঁ পৈঘ শুভচিঁতক হোএক । নেতাজী শুৰুএসঁ এহি ফিৰাকমে ৰহথি জে কহুনা ৰাজ্যপ্ৰমুখক কুৰ্সী হথিআ নী,তকৰ ৰাঁদ দেখল জেতৈক । সে মৌকা হুনকা ভেটিঁও গেললি । জনতাক আক্ৰোশক সমাচাৰ সুনি ও অসগৰমে ঠহাকা পাড়ি ৰহল ছলাহ। জেনা জে কিছু ভএ ৰহল অছি তকৰ হুনকা কোনো পৰৱাঁহ নহি ৰহনি।

"পৈঘ আদমীক ৫/ সভ গহনা ঠৈক । থোড়ে দিনক ৰাঁত ঠৈক, সভ পানিক ৰুঁদৰুঁনা জকাঁ অপনে খতম ভএ জাএত । তাৰেঁ চৈনসঁ দাৰু পিৰঁল জেতৈক । আওৰ কিছু কৰৰাঁক কাজ নহি ।"

"নাৰী নিকেতন কোনো আজুক অছি? এহন-এহন ঘটনা তঁ হোগতে ৰহলৈক অছি । কহাঁ কহিও কেও ৱিৰোধ কেলক? কিছু নৰকা চৌঁড়াসভ জনক্ৰান্তি দলক নামসঁ সমাজমে আগি নগাৰঁএ চাহৈত অছি সে হম হোঅএ দেৰেঁক? কদাপি নহি । আখিৰ হম ৰাজ্যপ্ৰমুখ ছী কথীক লেল?"

জখন ওকৰা শিখাক শক্তিপুৰম হৱাগ অড্ডাপৰ পহুঁচি জেৰ্বাক সমাচাৰ ভেটৈনৈক তঁ ও তুৰংত পুনিসক আনো অধিকাৰীসভকেঁ ওকৰা পাছু নগা দেনাহ।

"কোনো হানতমে ওকৰা হৱাগ অড্ডাসঁ ৰ্বাহৰ নহি জাএ দেৰ্বাক ঠৈক। ও চাহএ তঁ বিজযপুৰম বাপস চনি জাএ, নহি তঁ সোঝে জহন জাএ। ৰাজ্যমে আগি নগাৰ্বক স্বতংত্ৰতা ওকৰা নহি দেন জা সকৈত অছি।"

এহি আজ্ঞাক সংগে পুনিস উচ্চ অধিকাৰীনোকনি হৱাগ অড্ডা পহুঁচি গেন ৰহথি।

হম,শক্তিনাথ আ সংদীপ সেহো হৱাগ হড্ডাপৰ শিখাক স্বাগত কৰৰ্বাক হেতু পহুঁচি গেন ৰহী। হমৰাসভক সংগে জনক্ৰান্তি দনক কিছু কাৰ্যকর্তাসভ সেহো হৱাগ অড্ডাক ৰ্বাহৰ ঝংডা নেনে নাৰা নগা ৰহন ছনাহ-

"শিখা জিংদাৰ্বাদ। গনকিনাৰ্ব, জিংদাৰ্বাদ।"

কিছুগোটে পতাকা নেনে ছনাহ-" অন্যাযীসভক বিনাশ ভএ কএ ৰহত।"

পুনিস ৰহি-ৰহি কএ ওকৰাসভকেঁ খিহাড়ি ৰহন ছন। শিখাক হৱাগ জহাজ ৰ্বড়ীকান ধৰি আকাশমে ঘূমি ৰহন ছন। ওকৰা উতৰ্বাক অনুমতি নহি দেন জা ৰহন ছনৈক। হৱাগ জহাজমে ৰ্বহুত সীমিত মাত্ৰামে ইংধন ৰ্বাঁচন ছন। হৱাগ জহাজক চানক দন ৰ্বহুত চিংতামে ছন। ও সভ ৰাৰংৰ্বাৰ নিযংত্ৰণ কক্ষকেঁ

𑒮𑓀𑒫𑒰𑒠 𑒣𑒚𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪 । 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒯𑒼𑒮𑒦 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒱𑒞𑒋? 𑒅𑒣𑒩𑒮𑒿 𑒂𑒖𑓂𑒘𑒰 𑒂𑒋𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒯𑒫𑒰𑒃 𑒖𑒯𑒰𑒖𑒏 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲𑒮𑒦 𑒥𑒹𑒿𑒔𑒻𑒢 𑒕𑒪𑒰𑒯 । 𑒔𑒰𑒪𑒏 𑒠𑒪 𑒥𑒹𑒿𑒩-𑒥𑒹𑒿𑒩 𑒏𑒯𑒻𑒏-

"𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒖𑒯𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒞𑒰𑒩𑒥𑒰𑒿𑒏 𑒂𑒖𑓂𑒘𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲 । 𑒔𑒱𑓀𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒄 𑒟𑒱𑒏 𑒖𑒹 𑒯𑒫𑒰𑒃 𑒖𑒯𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒂𑒥 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒧 𑒃𑓀𑒡𑒢 𑒥𑒰𑒿𑒔𑒪 𑒁𑒕𑒱 । 𑒠𑒹𑒩𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒦𑒋 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।"

𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲𑒮𑒦 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒩𑒹𑒮𑒰𑒢 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱 । 𑒬𑒱𑒐𑒰 𑒞𑒿 𑒞𑒰𑒧𑒮𑒹 𑒂𑒑𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒋 । 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒪 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒁𑒤𑒮𑒼𑒔𑒼 𑒯𑒼𑒃𑒏 𑒖𑒹 𑒍𑒏𑒩𑒹 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒂𑒢𑒼 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲𑒮𑒦𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝𑒣𑒩 𑒮𑓀𑒏𑒙 𑒂𑒥𑒱𑒿 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 । 𑒁𑓀𑒞𑒧𑒹 𑒔𑒰𑒪𑒏 𑒠𑒪 𑒏𑓀𑒙𑓂𑒩𑒼𑒪𑒩𑒴𑒧𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒣𑒰𑒞𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒮𑒴𑒔𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻𑒏 𑒂 𑒯𑒫𑒰𑒃 𑒖𑒯𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒞𑒰𑒩𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏 । 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒂𑒍𑒩 𑒠𑒹𑒩𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒖𑒯𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒅𑒣𑒩𑒹𑒧𑒹 𑒂𑒑𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒞 । 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒖𑒰𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒿𑒔𑒱𑒞𑒻𑒏 ।

𑒯𑒫𑒰𑒃 𑒖𑒯𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒞𑒩𑒱𑒞𑒯𑒱 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒳𑒪𑒮𑒦 𑒔𑒰𑒩𑒴𑒏𑒰𑒞𑒮𑒿 𑒒𑒹𑒩𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒏 । 𑒍𑒏𑒩𑒮𑒦𑒏 𑒃𑒓𑓂𑒏𑒰 𑒃𑒋𑒯 𑒩𑒯𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒖𑒿 𑒬𑒱𑒐𑒰 𑒯𑒫𑒰𑒃 𑒖𑒯𑒰𑒖𑒮𑒿 𑒅𑒞𑒩𑒱 𑒏𑒋 𑒥𑒰𑒿𑒯𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒥𑒰𑒿𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒍𑒞𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒖𑒯𑒪𑒹𑒏 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒋𑒞 ।

𑒥𑒰𑒿𑒯𑒩 𑒖𑒢𑒏𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒠𑒪𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒯𑓀𑒑𑒰𑒧𑒰 𑒔𑒪𑒱𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪 । 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰𑒧𑒹 𑒃𑒖𑒰𑒤𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪 । 𑒯𑒧 𑒏𑒞𑒥𑒼𑒿 𑒥𑒳𑒿𑒗𑒹𑒥𑒰𑒿𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒱𑒌𑒏,𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒏 । 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒤𑒳𑒩𑒥𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒋 𑒖𑒹 𑒂𑒥 𑒏𑒲 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒋 ? 𑒏𑒯𑒲𑒿 𑒤𑒹𑒩 𑒁𑒢𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒢𑒹 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒃𑒏 । 𑒯𑒧 𑒂 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒋𑒯𑒲 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒮𑒦𑒣𑒩

মংত্ৰণা কৰৈত ৰহী । সংদীপ প্ৰদৰ্শনকাৰীসভকেঁ সম্হাৰৰাঁমে নাগন ছন । এতৰ্হিমে হৱাগ জহাজ ঘূসকন । ঘূসকৈত-ঘূসকৈত ম্বখ্য ভৱন ধৰি আৰিঁ গেন । ওহিঠামসঁ তঁ পৈৰে ৰাঁহৰ আএন জা সকৈত ছন । শক্তিপ্ৰৰম হৱাগ অড্ডা অছিএ কতেকঠাঁ । মৌকা দেখি শিখা হৱাগ জহাজসঁ উতৰন আ এক-এক কএ সভঠাঁ ৰস্ত্ৰ অপন দেহসঁ উতাৰএ নাগন । আৰ্ তঁ গৰ্দ পড়ি গেন ।

"হাঁ, হাঁ ঞ কী কএ ৰহন ছী?

"হৌ নোকসভ! কম্মনা হিনকা ৰোকহ? ঞ তঁ মহা অনৰ্থ ভএ ৰহন অছি ।"

নোকসভ শিখাকেঁ ৰূঝেৰাঁক প্ৰযাস কৰএ । তৰহ-তৰহক আশ্বাসন দিঅএ । ম্বদা শিখা স্বনৰাঁক হেতু তৈযাৰ নহি ৰহএ ।

"কী নাটক কএ ৰহন ছী? জখন শাসনক সৰ্বোচ্চ শিখৰপৰ অসৰাৰ নোকসভ হমৰা সন-সন কতেকো মহিনাকেঁ নাটক কৰৰাঁক হেতু দিন-ৰাতি নাগন অছি তখন অহাঁ সভক আশ্বাসনপৰ কতেক ভৰোসা কএন জা সকৈত অছি?   "

সে কহি ও হৱাগপট্টীপৰ ৰৌসি গেনি । হৱাগ জহাজক আৱাগমন ৰাঁধিত ভএ গেনৈক । আকাশমে জহাজসভ চক্কৰ নগৱৈত ৰহন । ম্বদা উতৰৰাঁক অনুমতি নহি ভেটৈক । চাৰূকাত হাহাকাৰ মচি গেন । হৱাগ অড্ডাক অধিকাৰীনোকনি পৰেসান ছনাহ । কিছু ফুৰেৰেঁ নহি কৰনি জে কী কএন জাএ?সভ ওকৰা ৰূঝেৰাঁক প্ৰযাস কএ ৰহন ছন । ম্বদা ও অড়ন ছনি,অড়ন ৰহি

গেনি । হমসভ এহি দৃশ্যকেঁ দেখৈত ৰহি গেনহুঁ । এহনো হেতৈক সে সপনহুমে নহি সোচনে ৰহী।

25

ৰস্তুত মোসকিনসঁ কিছু মহিনা পুনিসসভ শিখাকেঁ হৰাগপষ্টীপৰসঁ ঙঠওনক ঋা কতহু কাত ৰাঁণ্টে একাঁত ভরনমে নএ গেননি । শিখাক রিদ্রোহসঁ সৰকাৰ হিনি গেন ছন । নেতাজী সভকাজ ছোড়ি এহি ঋাগিকেঁ মিঝএৰাঁমে নাগি গেনথি । মুদা শিখা ঋড়ন ছনি । জাহিঠামক সৰকাৰেক মুখিঋা এহন হোগক, নোককেঁ জৰঁৰদস্তী নাঙ্টক কৰৰাঁক হেতু দিন-ৰাতি এক কেনে হোগক তাহিঠাম ঞ্জ নাঙ্টকসভ কৰৰাঁক কোন প্রযোজন ঋছি? হমৰা তঁগ নহি কৰু । জহিনা ছী,জে ছী সে ৰহএ দিঋ । নাঙ্টক ছোড়ৈত জাঙ।"

জখন শিখা ঋপন ৰাঁতপৰ ঋড়ন ৰহি গেনি ঋা ৰহি-ৰহি কএ খিড়কী নগ ঋাৰিঁ জাএ,ওহি কোঠৰীসঁ ভাগি জেৰাঁক প্রযাস কৰএ তখন মহিনা পুনিসসভ চাৰুকাতসঁ ঘেৰি নেনক ঋা ঠামহি ৰৈঁসন ৰহৰাঁক হেতু মজবূঁৰ কএ দেনক । মুদা ও তঁ জেনা সনকি ��েন ছনি । কৈকটা মহিনা সংগঠনক ঋধিকাৰীনোকনিকেঁ ৰঁজাওন গেন । শিখাকেঁ তৰহ-তৰহসঁ বুঁঝেৰাঁক প্রযাস ভেন । কেও ঋপন প্রযাসমে সফন নহি ভেন । তাধৰি ৰাঁহৰ হমসভ সমর্থকক সংগে ঋড়ন ৰহী । বুঁঝেৰেঁ নহি কৰএ জে ঋাখিৰ,ভএ কী ৰহন ঋছি? শিখা ৰাঁহৰ কিএক নহি ঋাৰিঁ ৰহন ঋছি?

হম আ শক্তিনাথ বাহৰ ঠাঢ় ছলহুঁ। আপসমে কিছু মংত্রণা কএ ৰহল ছলহুঁ। তাবঁতে পুলিসক কিছু আলা অধিকাৰী হমৰাসভ লগ অবৈত ছথি। ও সভ শিখাক বিদ্রোহী স্বৰুপসঁ ভযাক্রান্ত ছথি। উপৰসঁ বহুত দবাব পড়ি ৰহল ছনি জে জল্দী এহি বিবাদকেঁ খতম কৰূ। অপনা ভৰি ও সভ প্রযাস কেলোঁ কেলাহ। মুদা কিছু নহি কএ সকলাহ। শিখা অডিগ অছি। সভকেঁ নাকোদম কএ দেবাক হেতু কটিবদ্ধ অছি।

"অহীঁসভ হুনকা বুঝবিঔন। এনা তঁ সমাজ নহি চলি সকৈত অছি। বিৰোধক ই তৰীকা তঁ কানূন সম্মত নহি অছি। হমৰাসভকেঁ হাবি কএ কিছু কৰহি পড়ত।"

হম হুনকা লোকনিকেঁ কী জবাব দিতিঅনি। তথাপি,কহলিঅনি-

"জখন অহাঁলোকনি সভটা উপায কএএ ৰহল ছী আ এতেক শক্তিসংপন্ন ছী তখন হমৰাসভ লগ কী কৰএ অএলহুঁ অছি? হমসভ তঁ বদনাম ছীহে? মুদা এতবা নীকসঁ বুঝি লিঅ জে নেতাজীক পাপ আব দবাওল নহি জা সকত। সংপূর্ণ সমাজ জাগি গেল অছি। ওকৰ বিনাশ আব তয ছৈক।"

"অহাঁসভ অপন ৰাজনীতি কৰৈত ৰহব। মুদা এখন জে সমস্যা অছি তকৰ তঁ কিছু সমাধান কএ দিঔক।"

"একৰ সমাধান হম কী কৰবৈক? হমৰাসভকেঁ তঁ নীকসঁ বুঁঝনো নহি অছি জে বাঁত কী ভেনৈক জাহি কাৰণ ও এত��ক উগ্ৰ ৰূপ ধএ নেননি অছি ?"

"কম সঁ কম ষ্মনকা কহি সকৈত ছিঅনি জে হৰাগ অহুাসঁ বাঁহৰ অাৰিঁ জাথি। তকৰবাঁদ জে কৰবাঁক হোনি সে কৰিহথি?"

"অা অহাঁসভ ঠৈনসঁ পান-সুপাৰী খাগত ৰহবঁ?"

ৰাতি ভৰি মঁত্ৰণাক চনৈত ৰহন । শিখা অপন বাঁতপৰ অড়ন ছনি । দোসৰ দিন প্ৰতিনিধি সভাক সত্ৰ প্ৰাৰংভ হোগতৈক । নেতাজীক প্ৰযাস ৰহৈক জে তাহিসঁ পহিনে কিছু সমাধান ভএ জাগক। তাহি হেতু ভৰিসক প্ৰযাস কএনো গেন । বঁড়কা-বঁড়কা হাকিমসভ নাগন ৰহনাহ । মুদা জখন শিখা ঔস সঁ মস নহি ভেনি তঁ অধিকাৰীনোকনি হাৰি কএ হমৰাসভ নগ পহুঁচনথি । হমষ্ম কী কএ সকৈত ছনহুঁ? জাবেঁ শিখাসঁ গপ্প নহি হোগত তাবেঁ ওকৰ মোনক বাঁত কোনা বুঁঝিতিঐক? অাখিৰ অধিকাৰীনোকনি মোৰাঁগনসঁ হমৰাসভক গপ্প শিখাসঁ কৰবঁওননি । শিখা অপন বাঁত কিছু কহবাঁক বঁদনা ভোকাসী পাড়ি কএ কানএ নাগনি । হমৰো ওকৰ স্থিতিপৰ বঁহুত কষ্ট ভেন । শক্তিনাথ তঁ উগ্ৰ ভেন জা ৰহন ছন । হম গসাৰাসঁ ওকৰা ৰোকবাঁক প্ৰযাস কেনহুঁ । ওমহৰ সঁদীপক হানত সেহো বঁহুত পস্ত ৰহৈক। প্ৰদৰ্শনকাৰীসভ নস্ত পড়ি গেন ছনাহ । মামিনা শাঁত হেবাঁক বঁদনামে গৰমাগতে জা ৰহন ছন।

"তখন কএন কী জাএ?"

"शिखासँ आग्रह कएल जाए जे धैर्य राखए । ई कोनो व्यक्तिक समस्या नहि अछि। नेताजी सब-सब लोक समाजक कोढ़ अछि। ओ सभ रँगल जड़िआएल अछि । शासनमे प्रमुख स्थानपर बैसल अछि । तेहनमे ओ जँ हमसभ बुझिसँ काज नहि लेब तँ किछु नहि कए सकब । अस्तु, हमरासभकेँ शांतिपूर्वक विचारि कए काजकेँ आगू बढ़ेबाक होएत ।"

ई बातसभ शिखा सुनलक ।

"मुदा हम एहि नेताजीक विनाश केने बिना अपन पूर्वरूपमे नहि आबि सकैत छी ।"

"नहि आउ । मुदा समाजमे रहबाक हेतु ओकर नियमकेँ तँ मानहि पड़त । आखिर, हमरा लोकनिक आंदोलनो तँ समाजक बीचमे आ समाजक कल्याणेक हेतु होएत ।"

रँगल आग्रह केलापर ओ अपन निर्णयमे संशोधन करैत घोषणा केलक-

"जाधरि एहि दुष्टसभक अंत नहि होएत हम आगसँ श्वेतवस्त्रा रहब।"

हमरा लोकनिक प्रयाससँ पुलिसक आला अधिकारी लोकनिक जान मे जान अएलनि । एकटा महिला आगू बढ़ि कए ओकरा श्वेतवस्त्र देलकैक । ओ एकहिटा श्वेतवस्त्रकेँ ऊपरसँ नीचा धरि पहिरलने हराग अङ्गसँ बाहर भेलीह। देहमे आओर किछु नहि । मीडिआबलासभ सेहो एहि मौकाकेँ जाए देबए नहि चाहैत छल

। তৰাতৰ হজাৰো ফোটো খিঁচা গেন। জকৰা ককৰো মোৰাঁগন ৰহৈক সে চূকন নহি।

প্বনিসক স্বৰক্ষামে ও হমৰাসভক সঁগে জনক্রান্তি দনক ম্বখ্যানয পহুঁচি গেনীহ। সমর্থকনোকনি সেহো পাছূ নাগন ওতএ ঋারিঁ গেনথি।

-ৰরীন্দ্র নাৰাযণ মিশ্র, পিতাক নাম: স্বগীয সূর্য নাৰাযণ মিশ্র, মাতাক নাম: স্বগীযা দযাকাশী দেরী, রঁএস: ৬৯ রর্ষ, পৈতৃক গ্রাম: খড়ের ডীহ, মাতৃক: সিন্‌ঘিআ ড্যোঢ়ী, রৃতি: ভাৰত সৰকাৰক উপ সচির (সেরানিরৃত্ত), স্পেশন মেট্রোপোনিটন মজিস্‌ট্রেট, দিল্লী(সেরানিরৃত্ত), শিক্ষা: চন্দ্রধাৰী মিথিনা মহারিদ্যানযসঁ রী.এস-সী. ভৌতিক রিজ্ঞানমে প্রতিষ্ঠা : দিল্লী রিশ্বরিদ্যানযসঁ রিধি স্নাতক, প্রকাশিত কৃতি: মৈথিনীমে: প্রকাশন রর্ষঃ২০১৭ ১.ভোৰসঁ সাঁঝ ধৰি (ঋাম্মে কথা),২. প্রসংগরশ (নিরংধ), ३.স্বর্গ এতহি ঋাছি (যাত্রা প্রসংগ); প্রকাশন রর্ষঃ২০১৮ ৪. ফসাদ (কথা সংগ্রহ) ৬. নমস্তসৈ (উপন্যাস) ৬. রিরিধ প্রসংগ (নিরংধ) ৭.মহৰাজ(উপন্যাস) ৮.নজকোটৰ(উপন্যাস); প্রকাশন রর্ষঃ২০১৯ ৯.সীমাক ওহি পাৰ(উপন্যাস)১০.সমাধান(নিরংধ সংগ্রহ) ১১.মাতৃভূমি(উপন্যাস) ১২.স্বপ্ননোক(উপন্যাস); প্রকাশন রর্ষঃ২০২০ ১३.শংখনাদ(উপন্যাস) ১৪.গএহ থিক জীরন(সংস্মৰণ)১৬.চহৈত দেৰাঁন(উপন্যাস); প্রকাশন রর্ষঃ২০২১ ১৬.পাথেয(সংস্মৰণ) ১৭.হম ঋারিঁ ৰহন ছী(উপন্যাস) ১৮.প্রনযক পৰাত(উপন্যাস); প্রকাশন রর্ষঃ২০২২

১৯.ৰীতি গেল সময(উপন্যাস) ২০.প্ৰতিৰিম্ব(উপন্যাস) ২১.ৰঁদনি ৰহল খঠি সভকিছু(উপন্যাস) ২২.ৰাঙ্ক্ষ্ট মঁদিৰ(উপন্যাস) ২৩.সংযোগ(কথা সংগ্ৰহ) ২৪.নাঠি ৰহল ছনি ৰস্বধা(উপন্যাস) ২৬.দীপ জৰৈত ৰহএ (উপন্যাস)।

অপন মংতব্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাউ।**

𑓓.𑒣𑒠𑓂𑒨 𑒐𑒝𑓂𑒛

𑓓.𑓑.𑒩𑒿𑒠𑓂𑒩𑒲𑒢𑒰𑒟 𑒩𑒰𑒨-𑒞𑒲𑒢 𑒙𑒰 𑒑𑒲𑒞

𑓓.𑓒.𑒣𑓂𑒩𑒧𑒼𑒠 𑒗𑒰 '𑒑𑒼𑒏𑒳𑒪'-𑒕𑒳𑒙𑒪 𑒚𑒰𑒧 𑒯𑒹𑒩𑒰𑒨𑒪 𑒑𑒰𑒧

𑓓.𑓓.𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒮𑒰𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒩𑒝

𑓒.𑓑.𑒥𑒠𑓂𑒩𑒲𑒢𑒰𑒟 𑒩𑒰𑒨-𑒞𑒲𑒢 𑒙𑒰 𑒑𑒲𑒞



𑒥𑒠𑓂𑒩𑒲𑒢𑒰𑒟 𑒩𑒰𑒨

𑒞𑒲𑒢 𑒙𑒰 𑒑𑒲𑒞

𑓑

𑒑𑒹 𑒥𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒫𑒩 𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒛𑓃 𑒥𑒳𑒩𑒱𑒥𑒏 𑒂𑒍𑒩 𑒁𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒻,
𑒧𑒴𑒩𑓂𑒐𑒬𑒱𑒩𑒼𑒧𑒝𑒱 𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒻 𑒢𑒰।..................
𑒠𑒴𑒭𑓂𑒙 𑒠𑒯𑒹𑒖𑒏 𑒯𑒧 𑒕𑒲 𑒧𑒰𑒩𑒪 ,
𑒨𑒾𑒫𑒢 𑒖𑒱𑒩𑒱𑒿𑒞𑒹 𑒑𑒹𑒪𑒻 𑒖𑒰𑒩𑒪।
𑒥𑒳𑒩𑒱𑒥𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒘𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒋,
𑒥𑒰𑒣𑒏 𑒂𑒖𑓂𑒘𑒰𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒻॥
𑒧𑒴𑒩𑓂𑒐𑒬𑒱𑒩𑒼𑒧𑒝𑒱......... ....
𑒋𑒏 𑒞 𑒑𑒼𑒥𑒩 𑒏𑒹 𑒕𑒻 𑒔𑒼𑒞,

𑒯𑒧 𑒕𑒲 𑒪𑒰𑒖𑒹 𑒪𑒰𑒯𑒰𑒪𑒼𑒙।
𑒪𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒰𑒿𑒞 𑒏𑒲 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒾,
𑒢𑒘𑒱 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒹 𑒢𑒘𑒱 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒻। ।
𑒧𑒴𑒩𑓂𑒐𑒬𑒱𑒩𑒼𑒧𑒝𑒱 . ...
𑒨𑒾𑒥𑒢 𑒕𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒦𑒹𑒪 𑒢𑒱𑒮𑓂𑒞𑒹𑒖,
𑒤𑒰𑒙𑒋 𑒏𑒼𑒧𑒪 𑒏𑒼𑒚 𑒏𑒩𑒹𑒖।
𑒥𑒴𑒿𑒗𑒋 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒨 𑒢𑒱𑒥𑒹𑒠𑒢 𑒏𑒹 𑒢𑒘𑒱,
𑒣𑒻𑒒 𑒥𑒲𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒻 ॥
𑒧𑒴𑒩𑓂𑒐𑒬𑒱𑒩𑒼𑒧𑒝𑒱.....................
𑒏𑒯𑒱𑒞𑒼 𑒪𑒰𑒖 𑒪𑒑𑒋 𑒦𑒰𑒩𑒲,
𑒁𑒏𑒱𑒪 𑒏𑒹 𑒐𑒼𑒪𑒋 𑒢𑒘𑒱 𑒁𑒪𑒧𑒰𑒩𑒲।
𑒥𑒿𑒩𑒯𑒲 𑒥𑒱𑒿𑒢𑒰 𑒍𑒖𑒰𑒩𑒏 ,
𑒥𑒵𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒥𑒿𑒢𑓂𑒠 𑒏𑒹𑒥𑒰𑒿𑒩𑒲 𑒕𑒻॥
𑒧𑒴𑒩𑓂𑒐𑒬𑒱𑒩𑒼𑒧𑒝𑒱........... .. ..
𑒏𑒩𑒥𑒻𑒿 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒩 𑒯𑒧 𑒂𑒬 ,
𑒥𑒰𑒿𑒯𑒩 𑒣𑒥𑒢 𑒥𑒿𑒯𑒻 𑒅𑒢𑒔𑒰𑒮।
𑒏𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒯𑒥𑒻𑒿 𑒧𑒢𑒏 𑒥𑒿𑒞𑒱𑒨𑒰,
𑒥𑒿𑒛𑓃 𑒪𑒰𑒔𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒻॥
𑒧𑒴𑒩𑓂𑒐𑒬𑒱𑒩𑒼𑒧𑒝𑒱 ....
𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒗𑒩𑒏𑒪 𑒮𑒢 𑒕𑒻 𑒠𑒹𑒯,
𑒯𑒧𑒩𑒼 𑒖𑒩𑒪𑒻 𑒮𑒳𑒐 𑒮𑒱𑒢𑒹𑒯।
𑒥𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒢𑒹 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 ,
𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒿𑒮𑒥𑒰𑒿𑒩𑒲 𑒕𑒻॥
𑒧𑒴𑒩𑓂𑒐𑒬𑒱𑒩𑒼𑒧𑒝𑒱.......... ....

শিক্ষা পহনো মে খ্বছি ফেন,
হমৰা ঠিম্নেক নঞি ৰঁকনেন।
নহিৰা নীক নগগএ,
ৰহৈ জেনা ণ্বমাৰী ছৈ॥
মূৰ্খশিৰোমণি................. ......
পৌৰুষ ৰখনে নঞি জৰনাহা ,
ৰঁথূখা ম্যাগ মনক নৰমাহা।
যৌৱন ধধকি ৰহন খ্বছি,
হমৰা মঁও নাচাৰী ছৈ।
মূৰ্খশিৰোমণি ....|
২
গে ৰঁহিনা রৰ হমৰ ৰঁড় ৰূঁৰিৰঁক খ্বাঔৰ ৰঁকনেন ছৈ,
ম্যাম্বৰ মেন্ট্ৰৈৰ জেন ছৈ না
দেৱৰ চাৰু কাচ ণ্বমাৰ,মম্বৰক ম্যাপ মনক ফূফকাৰ।
ননদী নাক কষ্টাক' নওষ্টিনীযা মন ভেন ছৈ॥
ম্যাম্বৰ মেন্ট্ৰৈৰ জেন ছৈ না...
ৰঁৰ্তন মজিতে দেহ খিযাএন,ম্যাৰ্ডমক ৰাঁতো ৰেঁম পিজাএন।
ধনি ও জ্বন্না মন কে ঐঠনি খ্বাঔৰ রিষ রেন ছৈ॥
ম্যাম্বৰ মেন্ট্ৰৈৰ জেন ....
ঘৰ মে ডৰ নগগএ ভাৰী,নাগন নঞি ছৈ ফষ্টক কেৰাঁৰী।
মৰঁষ্টা দূধষ্ট দহেজক কাৰণ গড়ৰঁৰ ভেন ছৈ॥
ম্যাম্বৰ মেন্ট্ৰৈৰ জেন ছৈ না....... . . ...
মম্বৰক জেঠ ভাগ ম্বহমৌমা, ফূনন ৰেঁও মনক খ্বছি চৌমা।
খ্বগ্বখা খ্বাগি নগাক' ম্যাৰা মে মূতি গেন ছৈ॥

সাসুৰ সেন্টৰ জেন ....|
মৰএ ৰৰক ৰাঁপ জে নোভী,ও ঠথি দেৰক ৰেদ ৰিৰোধী।
স্রষ্টা সৃষ্টী কেননি গড়ৰঁৰ খাওঁৰ ৰেঁমেন ঠৈ॥
সাসুৰ সেন্টৰ জেন ঠৈ না।........... ...
২
কী কহিযৌ ৰঁহিনা হম,সসুৰা কে হান গে।
সার্ডস হমৰ সূর্পনখা,সসুৰ হমৰ কান গে। ।
গোতনী ঠৈ গোৰ মুদা, গৌৰৰে ঠৈ খান্থৰ।
ঠেকৰগএ সাঠ সন, নহ জেনা নাহৰ ॥
ননদী নষ্টিনিযা ৰঁড় ৰঁজৰেঁ ঠৈ গান গে।
সার্ডস হমৰ ... .
দেৰৰ ঠৈ গোৰঁৰ সন,কোযনা সন কাযা।
ভৈঁসুৰ ঠৈ ভেঁসা সন নির্লজ ৰেঁহাযা॥
কংঠী পহিৰী কৰৈ কৌখা হনান গে।
সার্ডস হমৰ ....
ৰাঁৰূঁ দহেজ দেননি কিননা খনাৰী।
ৰূঁঝএ নঞি ৰাঁত ৰঁৰদ খৰগ্ণ ঠৈ ভাৰী॥
কোঠী ঠৈ ঠন ঠন হোয সূখ হড়তান গে।
সার্ডস হমৰ ....
ঘৰ মে নঞি ঠিকস,নঞি কোঠী মে ঠার্ডৰ ঠৈ।
ৰাঁৰী মে ওন ৰঁদ্যত, ডপজন খম্হার্ডৰ ঠৈ॥
নোৰে মে তৰুখা তৰৈ ঠী নান নান গে।
সার্ডস হমৰ ....
সৰপংঠো সাসুৰ কে,মৌগা ঠৈ মুখিযা।

পেহ্ন প্রমুখ খাওব ডীনব ঠৈ দ্বখিযা। ।

মেম্বব কে পেহ জেন্না,হৈকী রিশান গে।

যার্ডস হমব ....

রব হমব বুঁরিবঁক মন, ফব মহকাৰী।

ভেনৈ রিরাহ দেখ,কোঠা খষ্টাৰী॥

রিঁগবন র্যরহাব স্নক,তেকৰে মনান গে।

যার্ডস হমব ....

অপন মন্তব্য editorial.staff.videha@gmail.com **পর পঠাউ।**

३.२.প্রমোদ ঝা 'গোকুল'-ছুটৈন ঠাম হেৰাযন গাম



প্রমোদ ঝা 'গোকুল'

ছুটৈন ঠাম হেৰাযন গাম

সৰ সৰোকাৰ সৰঁ ভেন তাৰ তাৰ
গৌরাঁ ঘৰুরা তক ভেন খুনঠিন্হাৰ
সঁর্ঁক্সোমে নওঁ ৰহনৈ ও প্ৰখৰ ধাৰ
ঝক ঝক ঙঘাৰ ঘোঁটি নাজ রিঠাৰ
খাঠো যাম খরিৰাম জপয মঁত্ৰ সৰঁ হেৰা ফেৰী।
ছুটৈনৈ গাম হেৰযনৈ ঠাম খাম নতাম ঝৰৰেঁৰী ॥
ৰঁহি ৰহনৈ সগৰো ঙনটা ৰঁযাৰ
খেতোপথাৰ ভেনৈ খুনঠিনহাৰ

𑒦𑒰𑒑 𑒦𑒰𑒑 𑒮𑓄 𑒏𑒩𑒨 𑒞𑒏𑒩𑒰𑒩

𑒮𑓂𑒫𑒰𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒛𑓀𑒏𑒰 𑒥𑒖𑒨 𑒂𑒩 𑒣𑒰𑒩

𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒦𑒰𑒞𑒱𑒖 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒤𑒼𑒩𑒻𑒪𑒹 𑒏𑒣𑒰𑒩

𑒑𑒩𑒐𑒰 𑒠𑓂𑒫𑒹𑒐𑒏 𑒥𑒰𑒖𑒰𑒩 𑒮𑒖𑒪 𑒕𑒻 𑒮𑒹𑒩 𑒣𑒮𑒹𑒩𑒲।

𑒕𑒳𑒙𑒪𑒻 𑒚𑒰𑒧 𑒯𑒹𑒩𑒨𑒪𑒻 𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒧 𑒪𑒞𑒰𑒧 𑒗𑒩 𑒥𑒹𑒩𑒲॥

𑒠𑒾𑒛𑓃𑒰 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒲 𑒗𑒱𑒗𑓂𑒗𑒳𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒰

𑒐𑒹𑒪 𑒏𑒥𑒛𑓂𑒛𑒲 𑒥𑒱𑒪𑒰𑒨𑒪 𑒏𑒼𑒢𑒰

𑒁𑒟𑒩𑒰 𑒥𑒱𑒟𑒩𑒰 𑒁𑒙𑒏𑒢 𑒧𑒙𑒏𑒢

𑒥𑒢𑒪 𑒏𑒱𑒩𑒏𑒹𑒙𑒏 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒣𑒼𑒕𑒢𑒰

𑒁𑒞𑒲𑒞𑒏 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒱 𑒣𑒩 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒖𑒥𑒩𑓂𑒠𑒮𑓂𑒞 𑒣𑒯𑒩𑒹𑒠𑒰𑒩𑒲 ।

𑒕𑒳𑒙𑒪𑒻 𑒑𑒰𑒧 𑒯𑒹𑒩𑒨𑒪𑒻 𑒚𑒰𑒧 𑒂𑒧 𑒪𑒞𑒰𑒧 𑒗𑒩𑒥𑒹𑒩𑒲॥

𑒑𑓂𑒩𑒲𑒪 𑒥𑒢𑓂𑒠 𑒒𑒩𑒏 𑒕𑒻 𑒖𑒼𑒩 𑒪𑒑𑒢

𑒁𑒣𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒨 𑒮𑒥 𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒧𑒑𑒢

𑒧𑒞𑒪𑒥𑒹𑒧𑒹 𑒔𑒴𑒛𑓃𑒰 𑒠𑒯𑒲𑒏 𑒍𑒚𑒑𑒢

𑒁𑒞𑒱𑒟𑒱 𑒁𑒏𑒔𑓂𑒕 𑒑𑒢𑒟𑒱 𑒞𑒩𑒹𑒑𑒢

𑒦𑒻𑒨𑒰 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒥𑒢𑓂𑒠 𑒁𑒫𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒦𑒾𑒖𑒲 𑒏𑒩𑒟𑒱 𑒞𑒏𑓂𑒏𑒰𑒯𑒹𑒩𑒲।

𑒕𑒳𑒙𑒪𑒻 𑒚𑒰𑒧 𑒯𑒹𑒩𑒨𑒪𑒻 𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒧 𑒪𑒞𑒰𑒧 𑒦𑒩𑒥𑒹𑒩𑒲॥

𑒡𑒱𑒨𑒱𑒣𑒳𑒞𑒰 𑒥𑒣𑒖𑒹𑒚 𑒦𑒹𑒪

𑒧𑒼𑒥𑒰𑒃𑒪𑒏 𑒮𑓄 𑒮𑒹𑒙 𑒦𑒹𑒪

𑒏𑒾𑒫𑒰 𑒮𑒿 𑒑𑒹𑒪 𑒥𑒳𑒡𑒱𑒨𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪

𑒁𑒮𑒧𑒨𑒹 𑒨𑒾𑒫𑒢 𑒥𑒯𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪

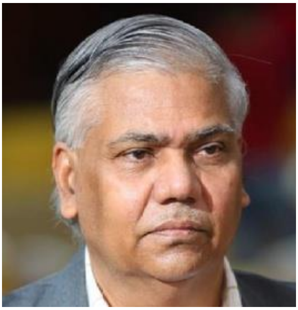
𑒖𑒹 𑒥𑒴𑒗𑒪 𑒥𑒞𑓂𑒞𑒲𑒮𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒮𑒹 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒐𑒢𑒹 𑒩𑒮𑒦𑒩𑒲।

𑒕𑒳𑒙𑒪𑒻 𑒚𑒰𑒧 𑒯𑒹𑒩𑒨𑒪𑒻 𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒧 𑒪𑒞𑒰𑒧 𑒗𑒩𑒥𑒹𑒩𑒲॥

-প্রমোদ ঝা 'গোকুল', দীপ,মধুবনী, (বিহাৰ), ফোন-9871779851

অপন মংতব্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাউ।**

২.২.ৰাজ কিশোৰ মিশ্র-সাংস্কৃতিক ক্ষৰণ



ৰাজ কিশোৰ মিশ্র, ৰিটায়র্ড চীফ জেনৰল মৈনেজৰ (ৱা), বী.এস.এন.এল.(মুখ্যালয), দিল্লী,গাম- অৰেৰ ডীহ, পো. অৰেৰ হাট, মধুবনী

সাংস্কৃতিক ক্ষৰণ

'জঁ, সংস্কা ৰ কেঁ অপনহি তো ড়ৰঁ,
ওকৰা কে দো ঘৰ ৰঁচা ওত?
সংস্কৃতি -জড়ি জেঁ মূখত তই,

দো ময ৰ কে , জন সঁ, জ্বডা্ ওত?

জত২ জেৰ্বা ক হো শ্বএ ,শ্বৰশ্য জা ড,
ন্মূযা র্ক, পেৰি ম, নংডন,
কত৷ ৰহী , ম্বদা রিঁ মৰী নহি ,
রি দ্যা পতি , ডদযন, মংডন।

ৰ্হ্রু, ঠ্রু ডন্নতি ক শ্বকা ম,
ফহৰা ড ওত৷ ভা ৰতক ধ্বজা ,
ৰহএ তি ৰংগা মভ সঁ ড্রুপৰ,
মভদেশক ধ্বজা কেঁ ,ও ৰা জা ।

জে নহি কৰথি শ্বপন মংস্কৃতি ক',
শ্বপনহি মা ন -দা ন,
এহেন নো ক পা ৰ্থি নে কত্ত৷ ,
শ্বপনো নেন, মম্মা ন।

নি জ ম্বপ্রথা , ম্বপৰম্পৰা ,
পি শ্বাৰৈচ্ছ , শ্বম্ভি তা কেঁ পী যূষ ,
হম মভ মজগ ৰখৰ্বা ৰ ৰহৰ্,
ত২,দ্বমত নে তখন কো নো মনদূম।

নী কক' দেখা ডমি ত২ নী ক ৰ্বা ত,
ম্বদা , খগতো রিঁ ন্ব,ন্বনহি নী পেঁঠ,ৰী ন,

শ্বপনা ৰ্ঁ২নে পৰ ম্বা ভি মা ন,
পো যী কি এ কো নো ৰাঁ ত হী ন?

নহি উ্যী , হৃদযম্ব হো যঁস্কা ৰ,
জকৰহি শ্বাভা যঁ, ঠমকএ কপা ৰ।
ৰৈঁয়ৃ, কতৰোঁ মহগ গা ড়ী মে ,
দ্বৰা গমনক শো ভা , মহফা -কহা ৰ।

রি দেশী গী তক হো -হলো যঁ,
নহি ভেষ্টত ও মো নক স্বকূন,
নো কগী ত, ভা ৰতী য যঁগী ত,
শ্বঠি জা হি মে ,মা ধুৰ্য-ৰয- গ্ৰ্ণা।

ঠূড়া -দহী ক কো ন শ্বপৰা ধ?
যো শ্বদগৰ নহি কী , প্ড়্ুকিশ্বা, খজূৰ?
পৌকিঁ গ জঁ ৰ্ঁঠি শ্বাঁ কএ দেনে জা এ,
ত২,ৰ্ঁৰ্গৰ ৰেঁকা ৰে ঘমঁড মে ঠূৰ।

শ্বপন ভেখ, শ্বা শ্বপন ভা খা ,
যুঁদৰ কতেক,নি জ পৰম্পৰা !
ভা ৰত কে মা ষ্টি ক জে স্বগঁধি ,
ভেষ্টত নে,তা কূ যগৰ ধৰা ।

পেৰি য মে হো ষ্টি ৰ্ঁৰক ঠূমা ওন ,

পহি ৰা ক**২** দো পষ্টা -পা গ,
ত**২**,ঁখ্যত প্ৰতি ধ্ষ্ঠা নহি ওহি ঘঁ,
না গত নে কনংকক' দা গ।

স্বপন ঘংস্কৃতি ক কৰৰ্ জয ত**২**,
স্বপনো হো ৰাঁ হৰ ,হো এত জয,
ঁখা ম্হ ঠী ক জঁ নহি ৰহতৈ ত**২**,
কথী পৰ ঘৰ, কস্থৃ ষ্টি কতৈ?

স্বপন মংতৱ্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাউ।**